विषय-सूची

रसखान

घनानंद

"इन मुसलमान हरिजनन पै कोटिन हिंदुन वारिये"

भूमिका

महानुभाव रसखान जी की अनूठी कविता और अलौकिक प्रेम का वर्णन करने में कौन समर्थ है। बस, इतना ही कहा जा सकता है कि "यथानामस्तथागुणः"; परंतु कठिनाई यह है कि इनकी कविता इस समय दुष्प्राप्य क्या, अप्राप्य हो रही है।

श्री किशोरीलाल गोस्वामी के उद्योग से कभी एक संग्रह 'रसखान शतक' के नाम से खड्गविलास यंत्रालय, बाँकीपुर से निकला था परंतु इस समय वह भी नहीं मिलता। कदाचित् किसी महाशय के पास हो भी तो पता नहीं।

इसके पश्चात् सन् १८९१ ई० में इन्हीं गोस्वामी जी के ही उद्योग से भारतजीवन यंत्रालय से "सुजानरसखान" नामक एक ग्रंथ निकला था जो अब भी प्राप्त होता है। इस ग्रंथ में कवित्त, सवैया, सोरठा और दोहा लेकर इनकी कुल १२८ कविताएँ हैं।

तत्पश्चात् गोस्वामी जी ने इनकी "प्रेमवाटिका" नाम की एक और छोटी सी पुस्तक निकाली जिसमें केवल ५३ दोहे प्रेम के ही ऊपर कहे हुए हैं। इसका प्रथम संस्करण

श्री श्रीरसखान जी का संक्षिप्त जीवनचरित्र

रसखान जी के समयनिरूपण में आजकल बहुत मतभेद है, जिसके मन में जो आता है वह लिख देता है पर अब वह संशय मिट गया। "प्रेमवाटिका" के अंतिम दोहे में यह कहा है—

विधुसागर रस इंदु सुभ बरस सरस रसखानि।
प्रेमवाटिका रचि रुचिर चिर हिय हरष बखानि॥

इससे प्रेमवाटिका बनने का समय 'विधुसागर रस इंदु' अर्थात् सं० १६७१ वैक्रमीय होता है, बस इसी के ३० या ४० वर्ष पूर्व इनका जन्म मान लिया जा सकता है। इन्होंने कितने ग्रंथ बनाए, इसका ठीक ठीक पता नहीं लगता। और इनकी वैकुंठप्राप्ति का समय भी इसी शताब्दी में माना जाता है, क्योंकि उस समय की एक घटना का वर्णन इनके दोहे में है और उसी में अपनी चरमावस्था का भी आभास दिया है जो प्रेमवाटिका देखने से मालूम होगा। कोई कोई इन्हें पिहानीवाले कहते हैं, पर वास्तव में ये दिल्ली के बादशाही वंश में थे। इनके भक्त होने के विषय में बहुत सी आख्यायिकाएँ प्रचलित हैं, उनमें से कई लिख देते हैं।

एक तो यह है कि ये जिस स्त्री पर आसक्त थे, वह बड़ी अभिमानिनी थी, इनका बड़ा तिरस्कार करती थी, पर ये उसके प्रेमी थे। एक दिन ये श्रीभागवत (जो कि फारसी में अनुवादित है) पढ़ रहे थे। उसमें गोपियों का विरह देखके इन्हें अपनी प्यारी पर घृणा और कृष्ण पर अनुराग हुआ; इन्होंने मन में निश्चय किया कि जिस पर हजारों गोपियाँ मरती हैं उसी से इश्क करेंगे। बस इसी में मस्त होके ये वृंदावन चले आए।

दूसरी यह है कि इन्हें एक प्रेमिनी ने ताना मारा था कि जैसा तुम हमें चाहते हो वैसा यदि उसे चाहते, जिसे लाखों गोपियाँ चाहती हैं, तो तुम कितने पागल हो जाते ? बस रसखान जी को चोट सी लगी और 'सब तजि हरि भज' के अनुसार ये वृंदावन चले आए।

तीसरी यह है कि कहीं श्रीमद्भागवत की कथा होती थी, वहाँ पर श्रीकृष्णजी का सुंदर चित्र रखा था। उस मूर्त्ति को देखके ये मोहित हो गए और व्यासजी से पूछा कि यह साँवली सूरतवाला कहाँ रहता है ? और इसका नाम क्या है ? व्यास जी ने कहा, इनका नाम रसखान है और श्रीवृंदावन में रहते हैं। बस इतना सुनते ही ये वृंदावन चले आए। परंतु वहाँ जब इन्हें किसी ने मंदिरों में न जाने दिया तब ये अन्न जल छोड़ यमुना जी की रेती में बैठ उनका नाम ले के पुकारने लगे। सब कोई इन्हें पागल जान के दिक करने लगे। वस्तुतः

थे उस समय पागल हो चुके थे। अस्तु, तीसरे दिन भक्त-वत्सल भगवान् ने इन्हें दर्शन दे के कृतार्थ किया। धन्य प्रभो! "जात पाँत पूछै नहिं कोय। हरि को भजै सो हरि को होय॥" फिर बराबर इन्हें गोपी, ग्वाल और श्रीकृष्णजी के दर्शन होते थे। कहते हैं कि इनकी अंत्येष्टि क्रिया भी भगवान् ही ने की थी। जो हो, पर इस प्रेमकहानी के अधिकारी प्रेमी जन ही हैं, और उन्हीं की समझ में यह बात समाएगी, और वे ही इसका तत्त्व समझ सकेंगे।

श्री राधाचरण गोस्वामी जी ने अपने बनाए 'नवभक्तमाल' में रसखान जी के विषय में इस प्रकार लिखा है—

"दिल्ली नगर निवास बादसायंस बिभाकर।
चित्र देख मन हरो भरो पन प्रेम सुधाकर॥
श्रीगोवर्द्धन आय जबै दर्शन नहिं पाए।
टेढ़े बेढ़े वचन रचन निर्भय ह्वै गाए॥
तब आप आय सुमनाय कर सुश्रूषा महमान की।
कवि कौन मिताई कहि सकै श्रीनाथ साथ रसखान की॥

मित्रवर बाबू हरिश्चंद्र जी अपने बनाए उत्तरार्द्ध भक्तमाल में कई मुसलमान भक्तों के संग रसखानजी का भी स्मरण करते हैं—

अलीखान पाठानसुता सह ब्रज रखवारे।
सेख नबी रसखान मीर अहमद हरिप्यारे॥
निरमलदास कबीर ताजखाँ बेगम बारी।
तानसेन कृष्णदास बिजापुर नृपति दुलारी॥

पिरजादी बीबी रास्तो पदरज नित सिर धारिए।
इन मुसलमान हरिजनन पै कोटिन हिंदुन वारिए॥

"चौरासी वैष्णव और दो सै बावन वैष्णव की वार्ता संग्रह" में रसखान जी की जीवनी इस भाँति पाई जाती है और श्री राधाचरण गोस्वामी जी के छप्पय में भी इसी जीवनी का सारांश लक्षित होता है—

रसखान सैयद पठान जो एक साहूकार के छोरा पर आसक्त हते सो वाके देखे विना रह्यो न जाँतो और वा छोरा को जूठो आप खाते पीते। सो जाति के लोग सब निंदा करते, परंतु काहु की सुनै नाहीं। सो यह प्रकार देख के एक वैष्णव ने माथा हिलायो नाक चढ़ायो। तब वैष्णव ने कह्यो, तुम या छोरा पै आसक्त हो याते ऐसो मन प्रभु तें लगावते तो तुम्हारो काम है जातो। तब रसखान ने पूछ्यो, प्रभु कौन हैं? तब वैष्णव ने कही, जाको यह सब विभूति है। तब रसखान ने पूछी, वे कहां रहते हैं? तब कह्यो ब्रज में रहत हैं। फेर वैष्णव ने अपनी पाग में तें एक श्रीजी को चित्र निकारि कै दरसन करायो सो चित्र में मुकुट काछनी को शृंगार हतो। सो दर्शन करत रसखान को मन वा छोरा तें फिरयो और चित्र में लग्यो। तब नैनन तें आंसू की धारा चली। तब वहाँ तें ब्रज को आए और वा वैष्णव तें श्रीजी को चित्र मांग्यो। सो वैष्णव ने इनकूँ दैवी-जीव जानि चित्र दियो। तब रसखान सब देवालय में जाय दर्शन करयो और वा चित्र को देख्यो, पर वा चित्र के समान

स्वरूप कहुँ न देख्यो। तब गिरिराज में आय श्रीजी के मंदिर में जाइवे लगे सो पैारिया ने धक्का मार निकास दियो, भीतर पैठवे न दियो। तब रसखान ने जान्यो जो महबूब याही मंदिर में है सो गोविंद कुंड पर जाय मंदिर की श्रोर टकटकी लगाय बैठे, जो विना दर्शन करे अन्न जल कछु न लेउँगो। सो तीन दिन या भाँति बीते। तब श्रीजी को दया आई, जो यह भूखो मर जायगो, सो चित्र में जैसो शृंगार हतो तैसो लाय ग्वाल गाय संग लै रसखान को दरसन दियो श्रोर वेणुनाद किये। तब झट रसखान दरसन करत दैार के श्रीजी के पकरिवे को आयो, सो श्रीजी अंतर्धान होय गयो श्रोर श्री गुसाईंजी ते आय कह्यो जो एक दैवी-जीव बड़ी जात को तीन दिन तें भूखो गोविंद कुंड पर बैठ्यो है, सो मैंने वाको दर्शन दिए, सो मोकों स्पर्श करिवे को दैाड़्यो सो मैं भाजि आयो, तुमारो अंगीकार करे विना मैं कैसे वाकूँ स्पर्श करूँ। जाको तुम नाम निवेदन कराओगे ताको मैं अंगीकार करूँगो सो सुनि तुरत श्री गुसांई ज़ी घोड़ा पै सवार होइके गोविंद कुंड पधारे। तब रसखान नै उठि ठाढ़ो होय श्री गुसांई जी तें विनती कीनी जो या मंदिर में महबूब है सो तुमारो बड़ो मित्र है, तुम कृपा करि दरसन कराय मिलाओ तो बहुत अच्छी है। तब आपने रसखान को न्हाइवे की आज्ञा दीनी। पाछे नाम सुनाय श्रीजी के दरसन करवाए। जब बाहर निकसिवे लगे तब श्रीनाथजी ने रसखान जी की बाँह पकरी कह्यो, अरे अब कहाँ जात है? पाछे ता दिन तें श्रीजी गोचारण

को पधारते तब रसखान को संग ले जाते। सो रसखान जैसी लीला के दरसन करते तैसी पर दोहा कवित्त करि सुनावते। सो प्रभु प्रसन्न होते। प्रेमी जनन की बात न्यारी है उनकी बलिहारी है। अहा "इन मुसलमान हरिजनन पै कोटिन हिंदुन वारिए"।

रसखान जी की एक यह भी कथा प्रसिद्ध है कि किसी समय यह अपनी रियासत से कई मुसल्मानों के साथ मक्के मदीने हज्ज करने जा रहे थे, बीच में ब्रज में ठहरे। वहाँ किसी प्रकार से इनको कृष्ण में इश्क हो गया। तब इन्होंने साथियों को यह कहकर कि 'मैं तो अब यहीं रहूँगा, आप लोग हज्ज को तशरीफ ले जायँ' विदा किया। आप वहीं रह गए।

अस्तु, यह समाचार बादशाह तक पहुँचा और किसी ने उनसे भी आकर कह दिया कि बादशाह से किसी ने चुगली खाई कि वह तो 'काफिर' हो गया इसलिये आप सँभल जाइए, नहीं तो आपकी रियासत छिन जायगी। यह सुन आपने यह दोहा पढ़ा—

"कहा करै रसखान को कोऊ चुगुल लबार।
जोपै राखनहार है माखन चाखनहार ॥१॥"

और उसी तरह ब्रज में बने रहे, कुछ भी परवाह न की।

मंगलाचरण

मोहन-छवि रसखानि लखि, अब दृग अपने नाहिं।
ऐंचे आवत धनुष से, छूटे सर से जाहिं॥
बंक बिलोकनि हँसनि मुरि, मधुर बैन रससानि।
मिले रसिक रसराज दोउ, हरखि हिए रसखानि॥
या छवि पै रसखानि अब, वारौं कोटि मनोज।
जाकी उपमा कविन नहिं, पाई रहे सु खोज॥
मोहन सुंदर स्याम को, देख्यो रूप अपार।
हिय जिय नैननि मैं बस्यो, वह ब्रजराज-कुमार॥

रसखान

सदा फूली फली और हरी भरी

प्रेमवाटिका

दोहे

प्रेम-अयनि श्रीराधिका, प्रेम-वरन नँदनंद ।
'प्रेमवाटिका' के दोऊ, माली-मालिन-द्वंद ॥ १ ॥

प्रेम प्रेम सब कोउ कहत, प्रेम न जानत कोय ।
जो जन जानै प्रेम तो, मरै जगत क्यों रोय ॥ २ ॥

प्रेम अगम अनुपम अमित, सागर-सरिस बखान ।
जो आवत एहि ढिग, बहुरि, जात नाहिं रसखान ॥ ३ ॥

प्रेम-वारुनी छानिकै, वरुन भए जलधीस ।
प्रेमहिं तें विष पान करि, पूजे जात गिरीस ॥ ४ ॥

प्रेमरूप दर्पन अहो, रचै अजूबो खेल ।
यामें अपनो रूप कछु, लखि परिहै अनमेल ॥ ५ ॥

कमलतंतु सों छीन अरु, कठिन खड़ग की धार ।
अति सूधो टेढ़ो बहुरि, प्रेमपंथ अनिवार ॥ ६ ॥

लोक-वेद-मरजाद सब, लाज, काज, संदेह।
देत बहाए प्रेम करि, विधि-निषेध को नेह ॥ ७ ॥
कबहुँ न जा पथ भ्रम-तिमिर, रहै सदा सुखचंद।
दिन दिन बाढ़तही रहै, होत कबहुँ नहिं मंद ॥ ८ ॥
भले वृथा करि पचि मरौ, ज्ञान-गरूर बढ़ाय।
बिना प्रेम फीको सबै, कोटिन किए उपाय ॥ ९ ॥
श्रुति, पुरान, आगम, स्मृतिहि, प्रेम सबहिं को सार।
प्रेम बिना नहिं उपज हिय, प्रेम-बीज अँकुवार ॥१०॥
आनँद-अनुभव होत नहिं, बिना प्रेम जग जान।
कै वह विषयानंद, कै, ब्रह्मानंद बखान ॥११॥
ज्ञान, कर्म्मरु, उपासना, सब अहमिति को मूल।
दृढ़ निश्चय नहिं होत-बिन, किए प्रेम अनुकूल ॥१२॥
शास्त्रन पढ़ि पंडित भए, कै मौलवी कुरान।
जुपै प्रेम जान्यो नहीं, कहा कियो रसखान ॥१३॥
काम, क्रोध, मद, मोह, भय, लोभ, द्रोह, मात्सर्य।
इन सबही तें प्रेम है, परे, कहत मुनिवर्य ॥१४॥
बिनु गुन जोबन रूप धन, बिनु स्वारथ हित जानि।
शुद्ध, कामना तें रहित, प्रेम सकल-रस-खानि ॥१५॥
अति सूक्ष्म कोमल अतिहि, अति पतरो अति दूर।
प्रेम कठिन सबतें सदा, नित इकरस भरपूर ॥१६॥
जग मैं सब जान्यो परै, अरु सब कहै कहाय।
पै जगदीसरु प्रेम यह, दोऊ अकथ लखाय ॥१७॥

जेहि विनु जाने कछुहि नहिं, जान्यों जात विसेस ।
सोइ प्रेम, जेहि जानिकै, रहि न जात कछु सेस ॥१८॥
दंपतिसुख अरु विषयरस, पूजा, निष्ठा, ध्यान ।
इनतें परे वखानिए, शुद्ध प्रेम रसखान ॥१९॥
मित्र, कलत्र, सुवन्धु, सुत, इनमें सहज सनेह
शुद्ध प्रेम इनमें नहीं, अकथकथा सविसेह ॥२०॥
इकअंगी विनु कारनहिं, इकरस सदा समान ।
गनै प्रियहि सर्वस्व जो, सोई प्रेम प्रमान ॥२१॥
डरै सदा, चाहै न कछु, सहै सबै जो होय ।
रहै एकरस चाहिकै, प्रेम वखानैा सोय ॥२२॥
प्रेम प्रेम सव कोउ कहै, कठिन प्रेम की फाँस ।
प्रान तरफि निकरै नहीं, केवल चलत उसाँस ॥२३॥
प्रेम हरी को रूप है, त्यों हरि प्रेमसरूप ।
एक होइ द्वै यों लसैं, ज्यौं सूरज अरु धूप ॥२४॥
ज्ञान, ध्यान, विद्या, मती, मत, विश्वास, विवेक ।
विना प्रेम सव धूर हैं, अग जग एक अनेक ॥२५॥
प्रेमफाँस में फँसि मरै, सोई जिए सदाहिं ।
प्रेममरम जाने विना, मरि कोउ जीवत नाहिं ॥२६॥
जग मैं सवतें अधिक अति, ममता तनहिं लखाय ।
पै या तनहूँ तें अधिक, प्यारो, प्रेम कहाय ॥२७॥
जेहि पाए वैकुंठ अरु, हरिहूँ की नहिं चाहि ।
सोइ अलैाकिक, सुद्ध, सुभ, सरस, सुप्रेम कहाहि ॥२८॥

कोउ याहि फाँसी कहत, कोउ कहत तरवार।
नेजा, भाला, तीर, कोउ—कहत अनोखी ढार ॥२९॥
पै मिठास या मार के, रोम रोम भरपूर।
मरत जियै, झुकतो थिरै, बनै सु चकनाचूर ॥३०॥
पै एतो हूँ हम सुन्यो, प्रेम अजूबो खेल।
जाँबाजी बाजी जहाँ, दिल का दिल से मेल ॥३१॥
सिर काटो, छेदो हियो, टूक टूक करि देहु।
पै याके बदले बिहँसि, वाह वाह ही लेहु ॥३२॥
अकथ-कहानी प्रेम की, जानत लैली खूब।
दो तनहूँ जहँ एक भे, मन मिलाइ महबूब ॥३३॥
दो मन इक होते सुन्यो, पै वह प्रेम न आहि।
होइ जबै द्वै तनहुँ इक, सोई प्रेम कहाहि ॥३४॥
याही तें सब मुक्ति तें, लही बड़ाई प्रेम।
प्रेम भए, नस जाहिं सब, बँधे जगत के नेम ॥३५॥
हरि के सब आधीन, पै, हरी प्रेम-आधीन।
याही तें हरि आपुहीं, याहि बड़प्पन दीन ॥३६॥
वेद-मूल सब धर्म, यह, कहै सबै श्रुतिसार।
परमधर्म है ताहु तें, प्रेम एक अनिवार ॥३७॥
जदपि जसोदानंद अरु, ग्वालबाल सब धन्य।
पै या जग में प्रेम को, गोपी भईं अनन्य ॥३८॥
वा रस की कछु माधुरी, ऊधो लही सराहि।
पावै बहुरि मिठास अस, अब दूजो को आहि ॥३९॥

श्रवन, कीरतन, दरसनहिं, जो उपजत सोइ प्रेम ।
शुद्धाशुद्ध विभेद तें, द्वै विध ताके नेम ॥४०॥
स्वारथमूल अशुद्ध त्यों, शुद्ध स्वभावऽनुकूल ।
नारदादि प्रस्तार करि, कियो जाहि को तूल ॥४१॥
रसमय, स्वाभाविक, विना-स्वारथ, अचल, महान ।
सदा एकरस, शुद्ध सोइ, प्रेम अहै रसखान ॥ ४२ ॥
जातें उपजत प्रेम सोइ, वीज कहावत प्रेम ।
जामें उपजत प्रेम सोइ, चेत्र कहावत प्रेम ॥४३॥
जातें पनपत, वढ़त, अरु, फूलत फलत महान ।
सो सव प्रेमहिं प्रेम यह, कहत रसिक रसखान ॥४४॥
वही वीज, अंकुर वही, सेक वही आधार ।
ड़ाल पात फल फूल सव, वही प्रेम सुखसार ॥४५॥
जो, जातें, जामें, वहुरि, जाहित कहियत वेस ।
सो सव, प्रेमहिं प्रेम है, जग रसखान असेस ॥४६॥
कारज-कारन-रूप, यह, प्रेम अहै रसखान ।
कर्ता, कर्म, क्रिया, करण, आपहि प्रेम वखान ॥४७॥
देखि गदर हित साहवी, दिल्ली नगर मसान ।
छिनहिं वादसा-वंस की, ठसक छोरि रसखान ॥४८॥
प्रेमनिकेतन श्रीवनहिं, आइ गोवर्धन-धाम ।
लह्यो सरन चितचाहिकै, जुगलसरूप ललाम ॥४९ ॥
तोरि मानिनी तें हियो, फोरि मोहनी-मान ।
प्रेमदेव की छविहि लखि, भए मियाँ, रसखान ॥५०॥

विधु, सागर, रस, इंदु सुभ, बरस सरस रसखानि।
'प्रेमवाटिका' रचि रुचिर, चिर हिय हरख बखानि ॥५१॥
अरपी श्रीहरिचरनजुग, पदुमपराग निहार।
विचरहिं यामें रसिकवर, मधुकर-निकर अपार ॥५२॥

क्षेपपूरन

राधामाधव सखिन सँग, विहरत कुंज-कुटीर।
रसिकराज रसखानि जहँ, कूजत कोइल कीर ॥

श्रीराधाकृष्णाभ्यां नमः

सुजान-रसखान

सवैया

मानुप हौं तो वही रसखानि बसौं ब्रज* गोकुल गाँव के ग्वारन।
जो पशु हौं तौ कहा बस मेरो चरौं नित नन्द की धेनु मँझारन॥
पाहन हौं तौ वही गिरि को जो धर्‌यो† कर छत्र पुरन्दर धारन।
जो खग हौं तौ बसेरो करौं मिलि‡ कालिंदी कूल कदंब की डारन॥१॥

या§ लकुटी अरु कामरिया पर राज तिहूँ पुर को तजि डारौं।
आठहुँ सिद्धि नवो निधि को सुख नंद की गाइ चराइ बिसारौं॥
रसखानि¶ कबौं इन आँखिन सों ब्रज के बन बाग तड़ाग निहारौं।
कोटि‖ करौ कलधौत के धाम करील के कुंजन ऊपर वारौं॥२॥

मोरपखा सिर ऊपर राखिहौं गुंज की माल गरें पहिरौंगी।
ओढ़ि पितंबर लै लकुटी बन गोधन ग्वारनि संग फिरौंगी॥
भावतो वोहि × मेरो रसखानि सों तेरे कहे सब स्वाँग करौंगी।
या मुरली मुरलीधर की अधरान धरी अधरा न धरौंगी॥३॥

एक समै मुरली धुनि मैं रसखानि लियो कहुँ नाम हमारो।
ता दिन तें परि वैरी बिसासिनी झाँकन देती नहीं है दुवारो॥

पाठांतर—* नित। † कियो ब्रज छत्र पुरंदर धारन। ‡ वही।
§ वा। ¶ ए रसखान जबै इन नैनन तें ब्रज के बनबाग निहारो।
‖ कोटि करौ कलधौत के धाम करील की कुंजन ऊपर वारों। × है तू।

होत चवाव वचाओं सु क्योंकरि क्यों अलि भेंटिए प्रान पियारो।
दृष्टि परी तबहीं चटको अटको हियरे पियरे पटवारो ॥ ४ ॥
गावैं गुनी गनिका गंधर्व औ सारद सेस सबै गुन गावत।
नाम अनंत गनंत गनेस ज्यौं ब्रह्मा त्रिलोचन पार न पावत ॥
जोगी जती तपसी अरु सिद्ध निरंतर जाहि समाधि लगावत।
ताहि अहीर कि छोहरिया छछिया भरि छाछ पै नाच नचावत॥५॥
खेलत भाग सुहाग भरी अनुरागहिं लालन कों धरि कै।
मारत कुंकुम केसरि के पिचकारिन में रँग को भरि कै ॥
गेरत लाल गुलाल लली मनमोहिनि मौज मिटा करि कै।
जात चली रसखानि अली मदमस्त मनी मन कों हरि कै ॥६॥
कान्ह भए बस बाँसुरी के अब कौन सखी हमकों चहिहै।
निस द्यौस रहै सँग साथ लगी यह सौतिन तापन क्यों सहिहै ॥
जिन मोहि लियो मनमोहन को रसखानि सदा हमकों दहिहै।
मिलि आओ सबै सखी भाग चलैं अब तो ब्रज मैं बँसुरी रहिहै॥७॥
काह कहूँ सजनी सँग की रजनी नित बीतै मुकुंद को हेरी।
आवन रोज कहै मनभावन आवन की न कबौं करी फेरी ॥
सौतिन भाग बढ्यो ब्रज में जिन लूटत हैं निसि रंग घनेरी।
मो रसखानि लिखी बिधना मन मारिकै आपु बनी हौं अहेरी॥८॥
कान ठगौरी भरी हरि आजु बजाई है बाँसुरिया रँग* भीनी।
तान सुनी जिनहीं तिनहीं तबहीं† तिन लाज बिदा कर दीनी ॥

पाठांतर— * रस। † सबही।

घूमै घड़ी* घड़ी नंद के द्वार नवीनी कहा कहूँ बाल प्रवीनी।
या ब्रजमंडल में रसखानि सु कौन भटू जो लटू नहिं कीनी॥९॥
आजु गई हुती भोरही हौं रसखानि रई कहि नंद के भौनहिं।
वाको जियौ जुग लाख करोर जसोमति को सुख जात कह्यो नहिं॥
तेल लगाइ लगाइ कै अंजन भौंह बनाइ बनाइ डिठौनहिं।
डालि हमेलनि हार निहारत वारत ज्यौं चुचकारत छौनहिं॥१०॥
बंसी बजावत आनि कढ़ो सो गली में अली कछु टोना सो डारैं।
हेरि चितै तिरछो करि दृष्टि चलो गयो मोहन मूठि सी मारैं॥
ताही घरी सों परी धरी सेज पै प्यारी न बोलति प्रानहूँ वारैं।
राधिका जीहै तौ जीहैं सबै न तौ पीहैं हलाहल नंद के द्वारैं॥११॥
एक तैं एक लों काननि मैं रहैं ढीठ सखा सब लीने कन्हाई।
आवतही हौं कहाँ लों कहों कोउ कैसें सहै अति की अधिकाई॥
खायो दही मेरो भाजन फोरयो न छोड़त चीर दिवावै दुहाई।
रसखानि तिहारी सौं एरी जसोमति भागे मरू करि छूटन पाई॥१२॥
लोक की लाज तजी तबहीं जब देख्यो सखी ब्रजचंद सलोनो।
खंजन मीन सरोजन की छवि गंजन नैन लला दिनहोनो॥
रसखानि निहारि सकैं जु सम्हारि कै को तिय है वह रूप सुठोनो।
भौंह कमान सों जौहन कों सब वेधत प्राननि नंद को छौनो॥१३॥
मंजु मनोहर मूरि लखै तबहीं सबहीं पतहीं तज दीनी।
प्रान पखेरू परे तलफैं वह रूप के जाल में आस अधीनी॥

पाठांतर—* खरी खरी।

आँख सों आँख लड़ी जबहीं तब सें ये रहैं अँसुवा रँग भीनी ।
या रसखानि अधीन भई सब गोपलली तजि लाज नवीनी ॥१४॥
सुन री पिय मोहन की बतियाँ अति ढीठ भयो नहिं कानि करै ।
निसि वासर औसर देत नहीं छिनहीं छिन द्वारेही आनि अरै ॥
निकसौ मति नागरि डौंड़ो बजी ब्रजमंडल मै इह कौन भरै ।
अब रूप की रौर परी रसखानि रहै तिय कोऊ न माँझ घरै ॥१५॥
बागन काहे को जाओ पिया घर बैठेही बाग लगाय दिखाऊँ ।
एड़ी अनार सी मौर रही बहियाँ दोउ चंपे सी डार नवाऊँ ॥
छातिन में रस के निबुआ अरु घूँघट खोलि कै दाख चखाऊँ ।
ढागन के रस के चसके रति फूलनि की रसखानि लुटाऊँ ॥१६॥
अंगनि अंग मिलाय दोऊ रसखानि रहे लपटे तरु छाँहीं ।
संग निसंग अनंग को रंग सुरंग सनी पिय दै गल बाँहीं ॥
चैन ज्यों मैन सु ऐन सनेह को लूटि रहे रति अंतर जाहीं ।
नीवी गहै कुच कंचन कुंभ कहै वनिता पिय नाहीं जू नाहीं॥१७॥
धूर भरे अति शोभित स्याम जू तैसी बनी सिर सुंदर चोटी ।
खेलत खात फिरैं अँगना पग पैजनी बाजती पीरी कछोटी ॥
वा छवि को रसखानि विलोकत वारत काम कला निज कोटी ।
काग के भाग बड़े सजनी हरि हाथ सों लै गयो माखन रोटी॥१८॥
आयो हुतो नियरें रसखानि कहा कहूँ तू न गई वह ठैया ।
या ब्रज में सिगरी बनिता सब वारति प्राननि लेत बलैया ॥
कोऊ न काहू की कानि करै कछु चेटक सो जु करयो जदुरैया ।
गाइगो तान जमाइगो नेह रिझाइगो प्रान चराइगो गैया ॥१९॥

वारहीं गोरस वेंचि री आजु तूँ माइ कै मूड़ चढ़ै कत मोड़ी ।
आवत जात लौं होयगी साँझ भटू जमुना भतरौंड़ लौं ओड़ी ॥
ऐसे में भेंटतही रसखानि ह्वै हैं अँखियाँ विन काज कनौड़ी ।
एरी वलाइ ल्यों जाइगी वाज अवै ब्रजराज सनेह की डोड़ी॥२०॥
सोहत हैं चँदवा सिर मोर के जैसियै सुंदर पाग कसी है ।
तैसियै गोरज भाल विराजति जैसी हियै वनमाल लसी है ॥
रसखानि विलोकत वौरी भई दृग मूँदि कै ग्वालि पुकारि हँसी है।
खोलि री घूँघट खोलौं कहा वह मूरति नैनन माँझ वसी है ॥२१॥
भौंह भरी वरुनी सुथरी अतिसै अधरानि रँगी रँग रातो ।
कुंडल लोल कपोल महाछवि कुंजनि तें निकस्यो मुसिकातो ॥
रसखानि लखै मग छूटि गयो डग भूलि गई तन की सुधि सातो।
फूटि गयो दधि को सिरभाजन टूटिगो नैननि लाज को नातो॥२२॥
अँखियाँ अँखियाँ सों सकाय मिलाय हिलाय रिझाय हियो भरिवो*।
वतियाँ चितचोरन चेटक सी रस चारु चरित्रन ऊँचरिवो ॥
रसखानि के प्रान सुधा भरिवो† अधरान पै त्यों अधरा धरिवो ।
इतने सव मैन के मोहनी जंत्र पै मंत्र वसीकर सी करिवो॥२३॥
जादिन तें निरख्यो नदनंदन कानि तजी घर वंधन छूट्यौ ।
चारु विलोकनि की निसि मार सम्हार गई मन मार ने लूट्यौ ॥
सागर कों सरिता जिमि धावत रोकि रहे कुल को पुल टूट्यौ ।
मत्त भयो मन संग फिरै रसखानि सरूप सुधारस घूट्यौ ॥२४॥

पाठांतर—* हरिवो । † धरिवो ।

कल कानन कुंडल मोरपखा उर पैं बनमाल विराजति है।
मुरली कर मै अधरा मुसकानि तरंग महाछबि छाजति है॥
रसखानि लखै तन पीतपटा सत दामिनी की दुति लाजति है।
वह बाँसुरी की धुनि कान परें कुलकानि हियो तजि भाजति है२५

बाँकी बिलोकनि रंग भरी रसखानि खरी मुसकानि सुहाई।
बोलत बैन अमीनिधि चैन महारस ऐन सुने सुखदाई॥
सजनी बन मे पुर बीथिन में पिय गोहन लागो फिरै मोरि माई।
बाँसुरी टेर सुनाइ अली अपनाइ लई ब्रजराज कन्हाई॥ २६॥

एक समें इक गोपबधू भई बावरी नेकु न अंग सम्हारै।
माय सुधाय कै टोना सों ढूँढ़ति सासु सयानी सयानी पुकारै॥
यों रसखानि कहै सिगरो ब्रज आन को आन उपाय बिचारै।
कोऊ न मोहन के कर तें यह वैरिनि बाँसुरिया गहि डारै॥२७॥

ब्रम्ह मैं ढूँढ्यो पुरानन गानन वेद रिचा सुनि चौगुने चायन।
देख्यों सुन्यों कबहूँ न कितूं वह कैसे सरूप औ कैसे सुभायन॥
टेरत हेरत हारि परयो रसखानि बतायो न लोग लुगायन।
देख्यो दुरो वह कुंजकुटीर मैं बैठो पलोटत राधिका पायन॥२८॥

देखन को सखी नैन भए न सनें तन आवत गाइन पाछैं।
कान भए इन बातन के सुनिबे कों अमीनिधि बोलन आछैं॥
पै सजनी न सम्हारि परैं वह बाँकी बिलोकन कोर कटाछैं।
भूलि गयो न हियो मेरी आली जहाँ पिय खेलत काछिनी काछैं।२९

खंजन नैन फँदे पिंजरा छबि नाहि रहै थिर कैसहूँ माई।
छूटि गई कुलकानि सखी रसखानि लखी मुसिकानि सुहाई॥

चित्र कढ़े से रहैं मेरे नैन न वैन कढ़ै मुख दीनी दुहाई।
कैसी करौं जिन जाव अली सब वोलि उठैं यह बावरी आई॥३०॥
उनही के सनेहन सानी रहैं उनहीं के जु नेह दिवानी रहैं।
उनहीं की सुनै न औ वैन त्यौं सैन सों चैन अनेकन ठानी रहैं॥
उनहीं सँग डोलन में रसखानि सबै सुख सिंधु अघानी रहैं।
उनहीं बिन ज्यों जलहीन ह्वै मीन सी आँखि मेरी अँसुवानी रहैं३१

सेस गनेस महेस दिनेस सुरेसहु जाहि निरंतर गावैं।
जाहि अनादि अनंत अखंड अछेद अभेद सुवेद बतावैं॥
नारद से सुक व्यास रहैं पचि हारे तऊ पुनि पार न पावैं।
ताहि अहीर की छोहरिया छछिया भरि छाछ पै नाच नचावैं।३२।

शंकर से सुर जाहि भजैं चतुरानन ध्यान में धर्म बढ़ावैं।
नेक हिये में जो आवतही रसखान महाजड़ मूढ़ कहावैं॥
जा पर सुंदर देवबधू नहिं वारत प्रान अवार लगावैं।
ताहि अहीर की छोहरिया छछिया भरि छाछ पै नाच नचावैं।३३।

दोउ कानन कुंडल मोरपखा सिर सोहै दुकूल नयो चटको।
मनिहार गरे सुकुमार धरे नट भेस अरे पिय को टटको॥
सुभ काछनी वैजनी पैजनी पामन आमन मै न लगै झटको।
वह सुंदर को रसखानि अली जु गलीन मैं आइ अबै अँटको॥३४॥

वंक विलोकनि है दुखमोचन दीरघ लोचन रंग भरे हैं।
घूमत वारुनी पान किये जिमि झूमत आनन रंग ढरे हैं॥
गंडनि पै किलकै छबि कुंडल नागरि नैन विलोकि अरे हैं।
रसखानि हरैं ब्रजबालनि कों मन ईषत् हाँसि के पानि परे हैं॥३५॥

अति लोक की लाज समूह मै घेरिकै राखि थकी भव संकट सों।
पल मैं कुलकानि की मेड़नखी नहि रोकी रुकी पल के पट सों ॥
रसखानि सों केतो उचाटि रही उचटी न सँकोच की औचट सों।
अलि कोटि कियो हटकी न रही अँटकी अँखिया लटकी लट सों।३६।
आजु सखी नँदनंदन री तकि ठाढ़ो है कुंजनि की परछाहीं।
नैन बिसाल की जोहन को सर बेधि गयो हियरा जिय माहीं ॥
घाइल घूमि सुमार गिरी रसखानि सँम्हारत अंगन नाहीं।
तापर वा मुसिकानि की डौंड़ो बजी ब्रज मै अबला कित जाहीं॥३७॥
जा दिन तें मुसिकानि चुभी उर ता दिन तें जु भई बनवारी।
कुंडल लोल कपोल महा छवि कुंजन तें निकस्यो सुखकारी ॥
हौं सखी आवतही बगरै पग पैंड़ तजी रिझई बनवारी।
रसखानि परी मुसकानि के पानिन कौन गहै कुलकानि विचारी।३८।
मैन मनोहर बैन बजै सु सजे तन सोहत पीत पटा है।
यों दमकै चमकै झमकै दुति दामिनि की मनो स्याम छटा है ॥
ए सजनी ब्रजराजकुमार अटा चढ़ि फेरत लाल बटा है।
रसखानि महामधुरी मुख की मुसकानि करै कुलकानि कटा है।३९।
सुंदर स्याम सिरोमनि मोहन जोहन मैं चित चोरत है।
बाँके बिलोकनि की अवलोकनि नोकनि कै दृग जोरत है ॥
रसखानि महावर रूप सलोने को मारग तें मन मोरत है।
ग्रहकाज समाज सबै कुल लाज लला ब्रजराज को तोरत है॥४०॥
नैननि बंकनि सान चढ़ै बाननि झेलि सकै अस कौन नवेली।
बेधत है हिय तीछन कोर सुमारि गिरी तिय कोटिक हेली ॥

छोड़ै नहीं छिनहूँ रसखानि सु लागी फिरैं द्रुम सों जनु बेली ।
रौर परी छवि की ब्रजमंडल कुंडल गंडनि कुंतल केरी ॥४१॥
कौन को लाल सलोनो सखी वह जाकी बड़ी अँखियाँ अनियारी ।
जोहन बंक बिसाल के बाननि बेधत हैं घट तीछन भारी ॥
रसखानि सम्हारि परै नहिं चोट सु कोटि उपाय करौं सुखकारी ।
भाल लिख्यो विधि हेत को बंधन खोलि सकै अस को हितकारी ॥४२॥

दोहा

मोहनछवि रसखानि लखि, अब दृग अपने नाहिं ।
ऐंचे आवत धनुष से, छूटे सर से जाहिं ॥ ४३ ॥
मो मन मानिक लै गयो, चितै चोर नँदनंद ।
अब बे मन मैं का करूँ, परी फेर के फंद ॥ ४४ ॥

सोरठा

देख्यो रूप अपार, मोहन सुंदरस्याम को ।
वह ब्रजराजकुमार, हिय जिय नैननि मैं बस्यो ॥४५॥

दोहा

मन लीनो प्यारे चितै, पै छटाँक नहिं देत ।
यहै कहा पाटी पढ़ी, दल को पीछो लेत ॥ ४६ ॥
ए सजनी लोनो लला, लह्यो नंद के गेह ।
चितयो मृदु मुसिकाइ कै, हरी सबै सुधि गेह ॥ ४७ ॥

सोरठा

एरी चतुर सुजान, भयो अजानहि जान कै ।
तजि दीनी पहिचान, जान आपनी जान कों ॥४८॥

दोहा

जोहन नंदकुमार कों, गई नंद के गेह।
मोहि देखि मुसिकाइ कै, बरस्यो मेंह सनेह ॥ ४६ ॥
स्याम सघन घन घेरि कै, रस बरस्यो रसखानि।
भई दिमानी पान करि, प्रेम मद्य मनमानि ॥ ५० ॥

सोरठा

अरी अनोखी बाम, तूं आई गौने नई।
बाहर धरसि न पाम, है छलिया तुव ताक मै ॥५१॥

सवैया

नैन लख्यो जब कुंजन तें बन तें निकस्यो अँटक्यो मटक्यो री।
सोहत कैसो हरा टटकौ अरु जैसो किरीट लग्यो लटक्यो री ॥
रसखानि रहै अँटक्यो हटक्यो ब्रजलोग फिरैं सटक्यो भटक्यो री।
रूप सबै हरि वा नट को हियरे फटक्यो झटक्यो अँटक्यो री॥५२॥

कवित्त

दूध दुह्यो सीरो परयो तातो न जमायो करयो
जामन दयो सो धरयो धरयोई खटाइगो।
आन हाथ आन पाइ सबही के तबहीं तें
जबहीं तें रसखानि तानन सुनाइगो ॥
ज्यौंही नर त्यौंही नारी तैसी यै तरुन बारी
कहिए कहा री सब ब्रज बिललाइगो।
जानिए न आली यह छोहरा जसोमति को
बाँसुरी बजाइगो कि विष बगराइगो ॥५३॥

सवैया

बजी है बजी रसखानि बजी सुनिकै अब गोपकुमारि न जीहै ।
न जीहै कोऊ जो कदाचित कामिनी कानि मै वाकी जु तान कूं पी है॥
कु पी है विदेस सँदेस न पावति मेरी व देह को मैन सजी है ।
स जीहै तो मेरो कहा बस है सु तौ बैरिनि बाँसुरी फेरि बजी है ५४

कवित्त

अधर लगाय रस प्याय बाँसुरी बजाय
मेरो नाम गाय हाय जादू कियो मन में ।
नटवर नवल सुघर नँदनंदन ने
करिकै अचेत चेत हरि कै जतन में ॥
झटपट उलट पुलट पट परिधान
जान लागीं लालन पै सबै बाम बन में ।
रस रास सरस रँगीलो रसखानि आनि
जानि जोर जुगुति विलास कियो जन में ॥५५॥

सवैया

कानन दै अँगुरी रहिबो जबहीं मुरली धुनि मंद बजैहै ।
मोहनी तानन सों रसखानि अटा चढ़ि गोधन गैहै तो गैहै ॥
टेरि कहौं सिगरे ब्रजलोगनि काल्हि कोऊ कितनो समुझैहै ।
माइ री वा मुख की मुसकानि सम्हारी न जैहै न जैहै न जैहै॥५६॥
जा दिन तें वह नंद को छोहरो या बन धेनु चराइ गयो है ।
मीठिहीताननि गोधन गावत बैन बजाइ रिझाइ गयो है ॥

वा दिन सों कछु टोना सों कै रसखानि हिये में समाइ गयो है।
कोउ न काहु की कानि करै सिगरो ब्रज बीर बिकाइ गयो है ॥५७॥

रंग भरयो मुसकात लला निकस्यो कल कुंजनि तें सुखदाई।
मैं तबहीं निकसी घरतें तकि नैन विसाल की चोट चलाई॥
रसखानि सो घूमि गिरी धरती हरिनी जिमि बान लगे गिरि जाई
टूटि गयो घर को सब बंधन छूटि गो आरज लाज बड़ाई ॥५८॥

हेरत बारहीं बार उतै तुव बावरी बाल कहाधौं करैगी।
जौं कबहूँ रसखानि लखै फिर क्यों हू न बीर री धीर धरैगी॥
मानि है काहू की कानि नहीं जब रूप ठगी हरि रंग ढरैगी।
यातें कहूँ सिख मानि भटू यह हेरनि तेरेही पैंड़ परैगी ॥५९॥

कवित्त

एरी आजु काल्हि सब लोक लाज त्यागि दोऊ
सीखे हैं सबै विधि सनेह सरसाइबो।
यह रसखान दिना द्वै में बात फैलि जैहै
कहाँ लौं सयानी चंदा हाथन छिपाइबो॥
आजु हौं निहारयो बीर निपट कलिंदी तीर
दोउन को दोउन सौं मुरि मुसकाइबो।
दोउ परैं पैयाँ दोऊ लेत हैं बलैयाँ इन्हें
भूलि गई गैयाँ उन्हें गागर उठाइबो ॥६०॥

सवैया

आजु भटू इक गोपबधू भई बावरी नेकु न अंग सम्हारै।
मात अघात न देवनि पूजत सासु सयानी सयानी पुकारै॥

यों रसखानि घिरयो सिगरो ब्रज कौन को कौन उपाय बिचारै ।
कोउ न कान्हर के कर तें वह वैरिनि बाँसुरिआ गहि जारै ॥६१॥
मकराकृत कुंडल गुंज की माल वे लाल लसैं पग पांवरिया ।
बछरानि चरावन के मिस भावतो दै गयो भावती भाँवरिया ॥
रसखानि बिलोकतही सिगरी भईं बावरिया ब्रज डाँवरिया ।
सजनी इहिं गोकुल मै विप सों बगरायो है नंद के साँवरिया॥६२॥
आजु भट्ट इक गोपकुमार ने रास रच्यो इक गोप के द्वारे ।
सुंदर बानिक सों रसखानि बन्यो वह छोहरा भाग हमारे ॥
ए विधना जो हमैं हँसतीं अब नेकु कहूँ उनके पग धारे ।
ताहि बदौं फिरि आवै घरै बिनहीं तन औ मन जोवन वारै ॥६३॥
वा मुसकान पै प्रान दियो जिय जान दियो वह तान पै प्यारी ।
मान दियो मन मानिक के सँग वा मुख मंजु पै जोवन वारी ॥
वा तन को रसखानि पै री तन ताहि दियो नहि आन बिचारी ।
सो मुह मोड़ि करी अब का हहा लाल लै आज समाज मै ख्वारी६४

कवित्त

गोरज विराजै भाल लहलही बनमाल
आगे गैया पाछे ग्वाल गावै मृदु तान री ।
तैसी धुनि बाँसुरी की मधुर मधुर तैसी
वंक चितवनि मंद मंद मुसकानि री ॥
कदम विटप के निकट तटनी के आय
अटा चढ़ि चाहि पीतपट फहरानि री ।

रस बरसावै तन तपन बुझावै नैन
प्रानन रिझावै वह आवै रसखानि री ॥ ६५ ॥

सवैया

वह गोधन गावत गोधन मै जबतें इहि मारग ह्वै निकस्यौ।
तब तें कुलकानि कितीय करौ यह पापी हियो हुलस्यो हुलस्यो ॥
अब तौ जु भई सु भई नहि होत है लोग अजान हँस्यो सु हँस्यो।
कोउ पीर न जानत जानत सो तिनके हिय मै रसखानि बस्यौ ॥६६॥
आजुरी नंदलला निकस्यो तुलसी बन तें बन कें मुसकातो।
देखे बनै न बनै कहते अब सो सुख जो मुख मै न समातो ॥
हौं रसखानि बिलोकिबे को कुलकानि कों काज कियो हिय हातो।
आइ गई अलबेली अचानक ए भटू लाज कों काज कहा तो ॥६७॥
ए सजनी वह नंद को साँवरो या बन धेनु चराइ गयो है।
मोहिनि ताननि गोधन गाइ कै बेनु बजाइ रिझाइ गयो है ॥
ताही घरी कछु टोना सो कै रसखानि हिए में समाइ गयो है।
कोऊ न काहू की बात सुनै सिगरो ब्रज बीर बिकाइ गयो है॥६८॥
मेरी सुनो मति आइ अली उहाँ जौनी गली हरि गावत है।
हरि हेरि बिलोकत प्रानन कों पुनि गाढ परैं घर आवत है ॥
उन तान की तान तनी ब्रज मैं रसखान सयान सिखावत है।
तकि पाय धरो रपटाय नहीं वह चारा सो डारि फँदावत है ॥६९॥
समझौ न कछू अजहूँ हरि सों ब्रज नैन नचाइ नचाइ हँसै।
नित सास की सारी उसासनि सों दिनहीं दिन माइ की कांति नसै॥

चहुँ ओर ववा की सौं सोर सुनै मन मेरेऊ आवति रीस कसै ।
पै कहा करौं वा रसखानि विलोकि हियो हुलसै हुलसै हुलसै ॥७०॥
बाँकी कटाछ चितैवो सिख्यो वहुधा वरज्यो हित कै हितकारी ।
तू अपने ढिग की रसखानि सिखावनि दै दिनहूँ पचिहारी ॥
कौन की सीख सिखी सजनी अजहूँ तजि दै वलि जाऊँ तिहारी ।
नंदन नंद के फंद कहूँ परि जैहै अनोखी निहार निहारी ॥७१॥
पूरव पुन्यनि तें चितई जिन ये अँखिया मुसकानि भरी जू ।
कोऊ रहीं पुतरी सी खरी कोउ घाट डरी कोउ बाट परी जू ॥
जे अपने घरहीं रसखानि कहै अरु हौंसनि जाति मरी जू ।
लाल जे वाल विहाल करी ते विहाल करी न निहाल करी जू॥७२॥
वैरिन तो बरजी न रहै अवहीं घर वाहर वैर बढ़ैगो ।
टोना सो नंद ढुटौना पढ़ै सजनी तोहि देखि विशेष वढ़ैगो ॥
सुनिहै सखि गोकुल गाँव सवै रसखानि तवै इह लोरू रढ़ैगो ।
वैस चढ़े घरही रहि वैठि अटानि चढ़ै वदनाम चढ़ैगो ॥७३॥

कवित्त

अवहीं गई खिरक गाइ के दुहाइवे कों
बावरी ह्वै आई डारि दोहनी यौं पानि की ।
कोऊ कहै छरी कोऊ भौन परी डरी कोऊ
कोऊ कहै मरी गति हरी अँखियान की ॥
सास व्रत ठानै नंद वोलत सयाने धाइ
दौरि दौरि जानै मानो खोरि देवतानि की ।

ता दिन तें इन वैरिन कों कहि कौन न बोल कुबोल सह्योरी ॥
तौ रसखानि सनेह लग्यौ कोउ एक कह्यो कोउ* लाख कह्योरी।
और तो रंग रह्यो न रह्यो इक रंग†रँगी सोई रंग रह्योरी ॥८३॥
मोर के चंदन मौर बन्यौ दिन दूलह है अली नंद को नंदन।
श्रीवृषभानुसुता दुलही दिन जोरी बनी विधना सुखकंदन ॥
रसखानि न आवत मो पै कह्यो कछु दोउ फँदे छवि प्रेम के फंदन।
जाहि विलोकै सबै सुख पावत ये ब्रज जीवन हैं दुखदंद न ॥८४॥
आज अचानक राधिका रूपनिधानि सों भेंट भई बन माहीं।
देखत दृष्टि परे रसखानि मिले भरि अंक दिए गलबाहीं ॥
प्रेमपगी बतियाँ दुहुँघाँ की दुहूँ कों लगी अतिही चितचाहीं।
मोहनी मंत्र बसीकर जंत्र हहा पिय की तिय की नहिं नाहीं ॥८५॥
कोई है रास में नैसुक नाचि कै नाच नचाए किए सबको जिन।
सोई है री रसखानि इहै मनुहारिहूँ सूधें चितौत न हो छिन ॥
तो मैं धौं कौन मनोहर भाव विलोकि भयो बस हाहा करी तिन।
औसर ऐसो मिलै न मिलै फिर लंगर मोड़ो कनौड़ो करै किन ॥८६॥
आज भटू मुरली बट के तर नंद के साँवरे रास रच्यो री।
नैननि सैननि बैननि मैं नहि कोऊ मनोहर भाव बच्यो री ॥
जद्यपि राखन कों कुलकानि सबै ब्रजबालन प्रान तच्यो री।
तद्यपि वा रसखान के हाथ विकान को अंत लच्यो पै लच्योरी८७
और जो चाहत चोर गहैं ए जू नेहु न केतक और घनैहौ।
चाखन के मिस माखन माँगत खाहु न माखन केतिक खैहौ ॥

पाठांतर—* किन। † रंग रँगीले सों रंग।

जानत हौं जिय की रसखानि सु काहे को एतिक बात बढ़ैहौ ।
गोरस के मिस जो रस चाहत सो रस कान्ह जू नेकु न पैहौ ॥८८॥
मोहन के मन भाइ गयो इक भाइ सो ग्वालिन गोधन गायो ।
तातैं लग्यो चट चौहट सौं हरवाइ दै गात सों गात छुवायो ॥
रसखानि लही इक चातुरता चुपचाप रही जब लौं घर आयो ।
नैन नचाइ चितै मुसिकाइ सु ओट ह्वै जाइ अँगूठा दिखायो॥८९॥
नागर छैलहि गोकुल मैं मग रोकत संग सखा ढिग तैहैं ।
जाहि न ताहि दिखावत आँखि सु कौन गई अब तोसों करैहैं ॥
हाँसी मै हार हर्‌यो रसखानि जू जो कहुँ नैकु तगा टुटि जैहैं ।
एकही मोती के मोल लला सिगरे ब्रज हाटहि हाट बिकैहैं ॥९०॥
दानी भए नए माँगत दान सुनै जु पै कंस तौ बाँधि के जैहौ ।
रोकत हौ बन में रसखानि पसारत हाथ घनो दुख पैहौ ॥
टूटै छरा बछरा दिक गोधन जो धन है सु सबै धन दैहौ ।
जैहै अभूषन काहू सखी को तो मोल छला के लला न बिकैहो॥९१
आज महूँ दधि बेचन जात ही मोहन रोकि लियो मग आयो ।
माँगत दान में आन लियो सु कियो निलजी रसजोबन खायो ॥
काहु कहूँ सिगरी री बिथा रसखानि लियो हँसि कै मुसिकायो ।
पाले परी मैं अकेली लली लला लाज लियो सु कियो मन भायो॥९२॥
बिहरैं पिय प्यारी सनेह सने छहरैं चुनरी के फवा फहरैं ।
सिहरैं नवजोबन रंग अनंग सुभंग अपांगनि की गहरैं ॥
बहरैं रसखानि नदी रस की घहरैं बनिता कुलहू भहरैं ।
कहरैं बिरहीजन आतप-सों लहरैं लली लाल लिए पहरैं ॥९३॥

वह सोई हुती परजंक लली लला लीनो सु आय भुजा भरिकै ।
अकुलाय के चौंक उठी सु डरी निकरी चहै अंकनि तें फरिकै ॥
झटका झटकी में फटो पटुका दरकी अँगिया मुकता झरिकै ।
मुख बोल कढ़ै रिस से रसखानि हटो जू लला निबिया धरिकै ९४
लाज के लेप चढ़ाइ कै अंग पची सब सीख को मंत्र सुनाइकै ।
गाड़रू ह्वै ब्रज लोग थक्यौ करि औपद वेसक सौंह दिवाइ कै ॥
ऊधो सो को रसखानि कहै जिन चित्त धरौ तुम एते उपाइ कै ।
कारे बिसारे को चाहै उतार्यौ अरे विप बावरे राख लगाई कै ९५
रसखानि यहै सुनि कै गुनि कै हियरा सत टूक ह्वै फाटि गयो है ।
सुतो जानत हैं न कछू हम ह्यां उन वा पढ़ि मंत्र कहा धौं दयो है॥
सुनु साँचो कहै जिय में निज जानि कै जानत हो जस कैसो लयो है
सब लोग लुगाई कहैं ब्रज माँहि अरे हरि चेरी को चेरो भयो है ९६
हाती जु पै कुबरी ह्यां सखी भरि लातन मूका बकोटती केती ।
लेती निकाल हिए की सबै नक छेदि कै कौड़ी पिराइ कै देती ॥
एती नचाइ कै नाच वा रांड़ को लाल रिझावन को फल पेती ।
सेती सदा रसखानि लिए कुबरी के करेजनि सूल सी भेती ९७
जानैं कहा हम मूढ़ सबै समुझी न तबै जबहीं बनि आई ।
सोचत हैं मन ही मन मैं अब कीजै कहा बतियाँ जगवाई ॥
नीचो भयो ब्रज को सब सीस मलीन भई रसखानि दुहाई ।
चेरी को चेटक देखहु री हरि चेरा कियो धौं कहा पढ़ि माई ९८
काहे सो माई कहा कहिए सहिए जु सोई रसखानि सहावैं ।
नेम कहा जब प्रेम कियो तब नाचिए सोई जो नाच नचावैं ॥

चाहत हैं हम और कहा सखि क्योंहूँ कहूँ पिय देखन पावैं।
चेरिय सों जु गुपाल रच्यो तौ चलोरी सबै मिलि चेरी कहावैं ९९

कवित्त

ग्वालन सँग जैबो वन ऐबो सुगाइन सँग
हेरि तान गैबो हाहा नैन फरकत हैं।
ह्याँ के गजमोती माल वारौं गुंजमालन पै
कुंज सुधि आए हाय प्रान धरकत हैं॥
गोबर को गारो सुतौ मोहि लगै प्यारो
कहा भयो महल सोने को जटत मरकत हैं।
मंदिर तें ऊँचे यह मंदिर हैं द्वारिका के
ब्रज के खिरक मेरे हिए खरकत हैं॥१००॥

सवैया

रसखानि सुन्यो है वियोग के ताप मलीन महा दुति देह तिया की।
पंकज सो मुख गो मुरझाइ लगी लपटैं बिस स्वांस हिया की॥
ऐसे मे आवत कान्ह सुने हुलसे सरके तरकी अँगिया की।
यों जग जोति उठी तन की उसकाइ दई मनौ बाती दिया की१०१
प्रान वही जु रहैं रिझि वापर रूप वही जिहिं वाहि रिझायो।
सीस वही जिन वे परसे पद अंक वही जिन वा परसायो॥
दूध वही जु दुहायो री वाही दही सु सही जो वही ढरकायो।
और कहाँ लौं कहौं रसखानि री भाव वही जु वही मनभायो१०२
कंचन मंदिर ऊँचे बनाइकै मानिक लाइ सदा झलकैयत।
प्रातहीं ते सगरी नगरी गजमोतिन ही की तुलानि तुलैयत॥

जद्यपि दीन प्रजान प्रजा तिनकी प्रभुता मघवा ललचैयत ।
ऐसे भए तो कहा रसखानि जो साँवरे ग्वाल सों नेह न लैयत१०३

कवित्त

कहा रसखानि सुखसंपति सुमार कहा
कहा तन जोगी ह्वै लगाए अंग छार को ।
कहा साधे पंचानल कहा सोए बीच नल
कहा जीत लाए राज सिंधु आर पार को ॥
जप बार बार तप संजम बयार ब्रत
तीरथ हजार अरे बूझत लबार को ।
कीन्हों नहीं प्यार नहीं सेयो दरबार चित
चाह्यो न निहारो जो पै नंद के कुमार को॥१०४॥

सवैया

संपति सों सकुचाइ कुबेरहिं रूप सों दीनी चिनौती अनंगहिं ।
भोग कै कै ललचाइ पुरंदर जोग कै गंग लइ धरि संगहिं ॥
ऐसे भए तो कहा रसखानि रसै रसना जो जु मुक्ति तरंगहिं ।
दै चित ताकें न रंग रच्यो जु रह्यो रचि राधिका रानी के रंगहिं१०५

कवित्त

कंचन के मंदिरनि दीठ ठहरात नाहिं
सदा दीपमाल लाल मानिक उजारे सों ।
और प्रभुताई अब कहां लौं बखानौं प्रति-
हारन की भीर भूप टरत न द्वारे सों ॥

गंगाजी में न्हाइ मुक्ताहलहू लुटाइ वेद
बीस बार गाइ ध्यान कीजत सवारे सौं।
ऐसे ही भए तो नर कहा रसखानि जो पै
चित दै न कीनी प्रीत पीतपटवारे सौं ॥१०६॥

सवैया

द्रौपदी औ गनिका गज गीध अजामिल सों कियो सो न निहारो।
गौतम गेहिनी कैसी तरी प्रहलाद को कैसे हरयो दुख भारो॥
काहे को सोच करै रसखानि कहा करिहैं रविनंद विचारो।
ता खन जा खन राखिए माखन चाखनहारो सो राखनहारो १०७

देस बिदेस के देखे नरेसन रीझि की कोऊ न बूझ करैगो।
तातें तिन्हैं तजि जान गिरयो गुन सौं गुन औगुन गाँठि परैगो॥
बाँसुरीवारो बड़ो रिझवार है स्याम जो नैकु सुढार ढरैगो।
लाड़लो छैल वही तो अहीर को पीर हमारे हिए की हरैगो १०८

कवित्त

अंत तें न आयो याही गाँवरे को जायो
माई बावरे जिवायो प्याइ दूध वारे वारे को।
सोई रसखानि पहिचानि कानि छाड़ि चाहै
लोचन नचावत नचैया द्वारे द्वारे को॥
मैया कि सौं सोच कछू मटकी उतारे को न
गोरस के ढारे को न चीर चीर डारे को।
यहै दुख भारी गहै डगर हमारी माझ
नगर हमारे ग्वाल बगर हमारे को ॥१०९॥

सवैया

दूर तें आइ दुरेहीं दिखाइ अटा चढ़ जाइ कह्यो तहाँ वारौ ।
चित्त कहू चितवै कितहूँ चित और सों चाहि करै चखवारौ ॥
रसखानि कहै यह बीच अचानक जाइ सिढ़ी चढ़ि सास पुकारौ ।
सूखि गई सुकवार हियो हनि सैन भटू कह्यो स्याम सिधारौ॥११०॥
कंस के क्रोध की फैल गई जबहीं ब्रजमंडल बीच पुकार सी ।
आइ गए तबहीं कछनी कसिकै नटनागर नंदकुमार सी ॥
द्वैरद को रद ऐंचि लियो रसखानि इहै मन आइ विचार सी ।
लागी कुठार लई लखि तोर कलंक तमाल तें कीरत डार सी १११

कवित्त

आपनो सो ढोंटा हम सबहीं को जानत हैं
दोऊ प्रानी सबही के काज नित धावहीं ।
ते नौ रसखानि अब दूर तें तमासो देखैं
तरनितनूजा के निकट नहिँ आवहीं ॥
आन दिन बात अनहितुन सों कहौं कहा
हितू जेऊ आए ते ये लोचन दुरावहीं ।
कहा कहौं आली खाली देत सब ठाली पर
मेरे बनमाली कों न काली ते छुड़ावहीं ॥११२॥

सवैया

लोग कहैं ब्रज के रसखानि अनंदित नंद जसोमति जू पर ।
ढोहरा आजु नयो जनम्यो तुमसो कोऊ भाग भर्यो नहिं भू पर ॥

वारि कै दाम सवाँर करौं अपने अपचाल कुचाल ललू पर।
नाचत रावरो लाल गुपाल सो काल सो व्याल-कपाल के ऊपर ११३
सार की सारी मो भारी लगै धरिवे कहँ सीस वघंवर पैया।
हाँसी सो दासी सिखाइ लई हैं वेई जु वेई रसखानि कन्हैया॥
जोग गयो कुबजा की कलानि मैं री कब ऐहैं जसोमति मैया।
हा हा न ऊधो कुढ़ावो हमैं अवहीं कहि दै व्रज बाजै वधैया ११४
को रिझवारिन कों रसखानि कहै मुकतानि सों माँग भरौंगी।
कोऊ कहै गहनो अँग अंग दुकूल सुगंध भरयो पहरौंगी॥
तू न कहै ग्रो कहैं तो कहौ हूँ कहूँ न कहूँ तेरे पाँय परौंगी।
देखहु याहि सुफूल की माल जसोमति लाल निहाल करौंगी ११५
देखिहौं आँखिन सों पिय को अरु कानन सों उन वैन कों प्यारी।
बांके अनंगनि रंगनि को सुरभी न सुगंधनि नाक में डारी॥
त्यों रसखानि हिए में धरौ वहि साँवरी मूरति मैं न उजारी।
गाँव भरो कोउ नाव धरौ पुनि सांवरी हौं वनिहौं सुकुमारी ११६
काह कहूँ रतियाँ की कथा वतियाँ कहि आवत है न कछू री।
आइ गोपाल लियो भरि अंक कियो मन भायो पियो रस कूँ री॥
ताही दिना सों गड़ीं अँखियाँ रसखानि मेरे अँग अंग में पूरी।
पैं न दिखाई परै अब बावरो दै के वियोग विथा की मजूरी ११७
तू गरवाइ कहा झगरै रसखानि तेरे वस बावरो होसै।
तौहू न छाती सिराइ अरी करि झार इतै उतै वाझन कोसै॥
लालहि लाल किए अँखियाँ गहि लालहि काल सों क्यों भई रोसै।
ऐ विधिना तू कहा री पढ़ी वस राख्यो गुपालहि लाल भरोसै ११८

एक समै इक लालनि कों ब्रजजीवन खेलत दृष्टि परयौ है
बालप्रवीन सकै करिकै सरकाइ कै मोर न चीर धरयौ है ॥
यों रसही रसही रसखानि सखी अपनो मनभायो करयौ है।
नंद के लाड़िले ढाँकि दै सीस इहा हमरो वर हाथ भरयौ है११
सोई हुती पिय की छतियाँ लगि बालप्रवीन महा मुद मानै।
केस खुले छहरैं वहरैं कहरैं छवि देखत मैन अमानै ॥
वा रस मै रसखानि पगी रति रैन जगी अँखियाँ अनुमानै।
चंद पै बिंब औ बिंब पै कैरव कैरव पै मुकतान प्रमानै ॥१२०॥
आवत लाल गुपाल लिए मग सूने मिली इक नार नवीनी।
त्यों रसखानि लगाइ हिए भटू मौज कियो मनमाहिं अधीनी ॥
सारी फटी सुकुमारी हटी अँगिया दरकी सरकी रँगभीनी।
गाल गुलाल लगाइ लगाइ कै अंक रिझाइ बिदा कर दीनी॥१२१॥
लीने अबीर भरे पिचका रसखानि खरो बहु भाय भरो जू।
मार से गोप कुमार कुमार से देखत ध्यान टरो न टरो जू ॥
पूरब पुन्यनि हाथ परयो तुम राज करौ उठि काज करो जू।
ताहि सरो लखि लाख जरो इहि पाप पतिब्रत ताख धरो जू१२२

कवित्त

आई खेलि होरी ब्रजगोरी वा किसोरी संग
अंग अंग रंगनि अनंग सरसाइगो।
कुंकुम की मार वा पै रंगनि उछार उड़ै
बुक्का औ गुलाल लाल लाल तरसाइगो ॥

छोड़ै पिचकारिन धमारिन बिगोइ छोड़ै
तोड़ै हियहार धार रंग बरसाइगो।
रसिक सलोनो रिझवार रसखानि आज
फागुन में औगुन अनेक दरसाइगो ॥१२३॥

सवैया

जाहु न कोऊ सखी जमुना जल रोकै खड़ो मग नंद को लाला।
नैन नचाइ चलाइ चितै रसखानि चलावत प्रेम को भाला॥
मै जु गई हुती बैरन बाहिर मेरी करी गति टूटि गो माला।
होरी भई कै हरी भए लाल कै लाल गुलाल पगी ब्रजबाला१२४

कवित्त

गोकुल को ग्वाल काल्हि चौमुँह की ग्वालिन सों
चाँचर रचाइ एक धूमहिं मचाइ गो।
हियो हुलसाय रसखानि तान गाइ बाँकी
सहज सुभाइ सब गाँव ललचाइ गो॥
पिचका चलाइ और जुवती भिजाइ नेह
लोचन नचाइ मेरे अंगहि बचाइ गो।
सासहिं नचाइ भोरी नंदहि नचाइ खोरी
बैरिन सचाइ गोरी मोहि सकुचाइ गो ॥१२५॥

सवैया

-फागुन लाग्यो सखी जब तें तब तें ब्रजमंडल धूम मच्यो है।
नारि नवेली बचैं नहि एक बिसेख यहै सबै प्रेम अच्यो है॥

साँझ सकारे वही रसखानि सुरंग गुलाल लै खेल रच्यो है।
को सजनी निलजी न भई अरु कौन भटू जिहिं मान बच्यो है१२६
इक ओर किरीट लसै दुसरी दिसि नागन के गन गाजत री।
मुरली मधुरी धुनि ओठन पै उत डामर नाद से बाजत री॥
रसखानि पितंवर एक कँधा पर एक बघंबर राजत री।
कोउ देखहु संगम लै बुड़की निकसे यह भेख बिराजत री १२७
यह देख धतूरे के पात चबात औ गात सों धूली लगावत हैं।
चहुँ ओर जटा अँटकैं लटकैं फनि सों कफनी फहरावत हैं॥
रसखानि जेई चितवै चित दै तिनके दुख दुंद भजावत हैं।
गजखाल कपाल की माल बिसाल सो गाल बजावत आवत हैं१२८
बैद की औषधि खाइ कछू न करै वह संजम री सुनि मोसें।
तो जलपानि कियो रसखानि सजीवन जानि लियो सुख तोसें॥
एरी सुधामयी भागीरथी नितपत्थ्य बनै न सनै तुहि पोसें।
आक धतूर चबात फिरै विष खात फिरैं सिव तेरे भरोसें १२९
बैन वही उनको गुन गाइ औ कान वही उन बैन सों सानी।
हाथ वही उन गात सरैं अरु पाइ वही जु वही अनुजानी॥
जान वही उन प्रान के संग औ मान वही जु करै मनमानी।
त्यों रसखानि वही रसखानि जु है रसखानि सो है रसखानी१३०

दोहा

बिमल सरल रसखानि मिलि, भई सकल रसखानि।
सोई नव रसखानि कों, चित चातक रसखानि॥१३१॥

सरस नेह लवलीन नव द्वै "सुजान रसखानि"।
ताके आस विसास सों पगे प्रान रसखानि ॥१३२॥

श्री रसखानजी की पदरचना का एक ही उदाहरण हस्तगत हुआ है वह यहाँ दिया जाता है—

धमार (राग सारंग)

मोहन हो हो हो हो होरी।
काल्ह हमारे आँगन गारी दै आयो सो कोरी ॥
अब क्यों दुरि बैठे जसुदा ढिग निकसो कुंजविहारी।
उमग उमग आईं गोकुल की वे सब भईं धनवारी ॥
तबहिं लाल ललकार निकारे रूपसुधा की प्यासी।
लपटि गईं घनस्याम लाल सों चमक चमक चपला सी ॥
काजर दे भजि भार भरुवा कं हँसि हँसि ब्रज की नारी।
कहें रसखान एक गारी पर सौ आदर बलिहारी ॥१३३॥

———

यदि इनका कोई संगीत का ग्रंथ भी प्राप्त हुआ तो वह भी प्रकाशित कर दिया जायगा। तब तक इस सागर में डुबकी लगाइए और इसमें से भावरूप रत्नों को काढ़ काढ़ उनके अवलोकन से आनंद लाभ कीजिए।

आरंभ ही में पहिली और दूसरी सवैया के अंतिम चरण पर ध्यान दीजिए कि कैसी बारीकी है—

"समुझै कविता घनआनँद की जिन आँखिन नेह की पीर तकी।"

यहाँ 'नेह' शब्द में श्लेष है। इसके २ अर्थ हैं—१ तेल, २ प्रेम। आशय यह है कि कड़ुवे तेल से आँजने से प्रथम तो क्लेश होता है—आँख कड़ुवाती है पश्चात् उससे दृष्टि बढ़ती है और सब स्पष्ट सूझने लगता है; वैसे ही जिसने प्रेम-तेल से अपने अंतश्चक्षु को आंजकर वह पीर 'तकी' अर्थात् देखा वा सहा है वही इस कविता-सागर के भाव-रत्नों की जाँच कर सकेगा।

इसी प्रकार इनकी प्रत्येक कविता में कोई न कोई अनूठी बात अवश्य ही पाई जाती है।

अमीरसिंह।

घनानंदजी की संक्षिप्त जीवनी

घनानंदजी को प्रायः सभी कवितारसिक जन जानते होंगे और इनकी कवितामृतवर्षा की कुछ न कुछ बूँदें रसिक जनों के हृदयस्थल पर अवश्य ही पड़ी होंगी। इन कायस्थकुलावतंस महानुभाव का जीवनचरित्र तो कहीं प्राप्त नहीं हुआ परंतु हमारे मित्र लाला भगवानदीन महाशय ने बड़े अनुसंधान से संग्रहकर जो कुछ लक्ष्मी मासिक पत्र में छापा है उतना ही प्राप्त है; उसे ही यहाँ प्रकाशित कर देना उचित जान पड़ता है।

वे लिखते हैं,—आनंदघनजी का जन्म लगभग संवत् १७१५ के प्रतीत होता है। और इनकी परलोकयात्रा संवत् १७९६ में जान पड़ती है। ये महानुभाव दिल्लीनिवासी भटनागर कायस्थ थे। वह समय मुसलमानों का ही समय था और उनके राज्य के कारण मुसलमानी ही देश भी हो रहा था। वंशपरंपरा से नौकरी पेशा चला आने के कारण समयानुसार इन्होंने पूर्व में फारसी भाषा की शिक्षा पाई और उस भाषा का अच्छा पांडित्य प्राप्त किया था। ऐसा कर्णगोचर होता है कि ये महानुभाव फारसी भाषा में प्रसिद्ध अबुलफजल के शिष्य थे। बस इसी से इनकी फारसी भाषा की विज्ञता का परिचय मिलना मेरी जान में कुछ कठिन न होगा।

ऐसा भी अवगत होता है कि फारसी भाषा में भी इनकी कुछ कविता है पर वह दृष्टिगोचर नहीं हुई।

पूर्व में ये पादशाह के दफ्तर में किसी अल्पाधिकार पर नियत किए गए थे। तदनंतर अपनी सुयोग्यता, स्वामिभक्ति और परिश्रम के प्रभाव से दिल्लीश्वर मुहम्मदशाह के खास कलम (प्राइवेट सेक्रेटरी) हो गए।

यह भी सुनने में आता है कि आनंदघनजी को बाल्यावस्था ही से श्रीकृष्ण की रासलीला देखने का अत्यंत प्रेम था। बहुधा जब कभी कोई रासमंडली दिल्ली में आ निकलती तो ये उसके व्यय का भार अपने सिर ले महीनों रख लिया करते थे। ये उससे रास कराते और स्वयं भी उन लीलाओं में कोई अंश अपने सिर ओढ़ लेते। इससे इनको हिंदी भाषा के पद सीखने और संगीत का व्यसन लगा। फिर क्या था, तब तो इन्होंने इतनी कुशलता प्राप्त की कि ये स्वयं लीलाओं के पदों की रचना करने लगे। इन्होंने ऐसे भाव भरे पद रचे कि अद्यावधि इनके कतिपय पद रासधारियों में गाए जाते हैं।

इस रास की भावना का इन पर ऐसा प्रभाव पड़ा और श्रीकृष्ण के अलौकिक प्रेम में ये ऐसे लवलीन हो गए कि शाही नौकरी छोड़ घर गृहस्थी से नाता तोड़ संसार से मुँह मोड़ व्रज की ओर चल पड़े और वहीं का वास स्वीकार कर लिया। व्रज में आते ही व्यासवंश के किसी साधु से दीक्षा ले ये उपासना में दृढ़ और मग्न हो गए।

ये प्रायः कहीं न कहीं वंसीवट के आस पास ही में रहा करते थे और वहीं किसी वृक्ष के तले आसन जमाए ध्यानमग्न कभी कभी तो कई कई दिन समाधि ही में विता देते, खाने पीने आदि की सुधि भी भूल जाते थे। इन महानुभाव ने सुजान-सागर ग्रंथ की रचना भी व्रजवास ही के अवसर में की है। वाह! निःसंदेह यह सुजानसागर प्रेमामृत के जल से पूर्ण समुद्र ही है। यह साभिमान कहा जा सकता है कि यदि कोई भी इसकी ४१५ तरंगों (कवित्तों) में बुड़की मारे (आशय समझकर पढ़े) तो उसके नेत्रजलधर इसके अमृत को पानकर अवश्य ही वरसने लगेंगे—यह तो संभव ही नहीं कि वह गद्गद न हो। इन्होंने अपनी शृंगाररस की कविता के वियोग विभाग में करुणा विरह को कैसा झलकाया है कि उससे अधिक और कोई क्या विशेष कहेगा कुछ ध्यान में नहीं आता। यदि कोई कहे कि तुम पक्षपात करते हो, सो नहीं किंतु इनके विषय में अनेक विद्वानों ने क्या कहा है उससे आप लोग जाँच सकते हैं—

शिवसिंहसरोज के कर्त्ता अपने उसी ग्रंथ में लिखते हैं कि 'इनकी कविता सूर्य के समान भासमान है।'

एवं इसी सुजानसागर ग्रंथ से ११८ कवित्त और दोहे छाँटकर भारतेंदु श्रीहरिश्चंद्र ने संवत् १६२७ में सुजानशतक नाम से प्रकाशित किए जो अव तक भी अनेक प्रेमियों के पास प्राप्त होते हैं। उसी में एक छोटी सी भूमिका भी स्वयं भार-तेंदुजी ने अपने करकमलों से लिखी है। उसमें वे लिखते हैं

कि "आनंदघनजी × × × × गानविद्या तथा कविता दोनों ही में बड़े कुशल थे और सच्चे प्रेमी भी थे।" इनकी कविता का सागर यह पूरा 'सुजानसागर' ग्रंथ इनके हार्दिक प्रेम का परिचय देने के लिये आज रसिक जनों के सम्मुख निवेदित है।

फिर बाबू जगन्नाथदासजी बी० ए० (रत्नाकर) इस ग्रंथ की भूमिका में यों लिखते हैं कि "सुजानसागर के विषय में इतना ही कहना बहुत है कि यह सागर घनानंदजी के कवितामृत से परिपूरित है"।

"भाषा काव्यरसिकों में ऐसा कौन है जिसको इस आनंदघन की कतिपय बूँदों का, जो कि भारतवर्ष में जहाँ तहाँ सुलभ हैं, आस्वादन करके इस रस की अतृप्ततृषा से तृषित हो विशेषतः तृप्त होने की उत्कंठा न हुई होगी।"

रीवाधिपति श्रीरघुराजसिंहजू देव अपने भक्तमाल (रामरसिकावली) में इन्हीं आनंदघनजी को सच्चे प्रेमी भक्तों में गणना कर यों लिखते हैं—

"घन आनद के विपुल कवित्ता। अबलौं हरत कविन के चित्ता।"

ये सच्ची भावना के उपासक और विरह के सच्चे भावुक थे। इसी हेतु इनकी कविता में यह प्रत्यक्ष प्रभाव है कि कोई कैसा भी कठोर-चित्त क्यों न हो पर इनके कवित्त पढ़ या सुनकर गद्गद हो जाता है और नेत्र डबडबा ही पड़ते हैं।

संवत् १७९६ में जब नादिरशाह ने मथुरा को लूटा उसी समय की लूट मार में ये भी मारे गए। श्रीरीवाधिपति

महाराज रघुराजसिंहजी इनके मारे जाने का हाल यों वर्णन करते हैं—

"घनानंदजी वंसीवट के नीचे भावना में विराज रहे थे उसी समय यवनों ने आनकर इन पर कई वार खड्गाघात किया, पर इनका वाल भी वाँका न हुआ, केवल ध्यान भंग हो गया। तब करुणाविरह में भर आपने अपने प्रभु श्रीकृष्ण से यों प्रार्थना की—

"मोकों भूरि भार है देहू। यत्न किये छूटत नहिं केहू॥
कौन हेतु राखत संसारा। क्यों न बुलावै नंदकुमारा॥"

इस प्रकार अपने प्रभु से प्रार्थना कर उस घातक यवन से कहा कि 'ले अब वार कर'। उसने भी आज्ञानुसार फिर तलवार मारी। सिर तो उस आघात से भूमि पर आकर नाचने लगा परंतु उनके रुंड से एक बूँद भी रक्तपात न हुआ। यवन भी देखकर थकित हो रहे और उन्होंने प्रत्यक्ष नेत्रों से देखा कि ऊपर से विमान उतरा और वे उस पर चढ़ गो-लोक को पधारे।

अस्तु। इतना तो अवश्य ही मानना होगा कि घनानंदजी नादिरशाह की लूट में मारे गए। अतः संवत् १७१५ के समीप उनका जन्म और संवत् १७९६ में उनकी गोलोक-यात्रा तो निश्चित है। इस हिसाब से उन्होंने अनुमान ८१ वर्ष की आयु भोगी।

घनानंद



श्री १०८ परस्पर चंद्रचकोराभ्यां नमः

सुजानसागर

सवैया

नेही महा ब्रजभाषाप्रवीन औ सुंदरतानि के भेद कों जानै।
जोग वियोग की रीति मैं कोविद भावना भेद स्वरूप कों ठानै॥
चाह के रंग मैं भींज्यो हियो बिछुरें मिलें प्रीतम सांति न मानै।
भाषा प्रवीन सुछंद सदा रहै सो घनजी के कवित्त बखानै॥१॥
प्रेम सदा अति ऊँचो लहै सु कहै इहि भाँति की बात छकी।
सुनि कैं सबके मन लालच दौरै पै बौरै लखैं सब बुद्धि चकी॥
जग की कविताई के धोखे रहैं ह्याँ प्रबीननि की मति जाति जकी।
समुझै कविता घनआनँद की हिय आँखिन नेह की पीर तकी।२॥

कवित्त

लाजनि लपेटी चितवनि भेद भाय भरी
लसति ललित लोल चख तिरछानि मैं।
छवि को सदन गोरो बदन रुचिर भाल
रस निचुरत मीठी मृदु मुसक्यानि मैं॥

दसन दमक फैलि हियें मोती माल होत
पिय सों लड़कि प्रेम पगी बतरानि मैं।
आनँद की निधि जगमगति छबीली बाल
अंगनि अनंग रंग ढुरि मुरजानि मैं ॥ ३ ॥

सवैया

झलकै अति सुंदर आनन गौर छके दृग राजत काननि छ्वै।
हँसि बोलनि मैं छबि फूलन की बरषा उर ऊपर जाति है ह्वै ॥
लट लोल कपोल कलोल करैं कल कंठ बनी जलजावलि द्वै।
अँग अंग तरंग उठै दुति की परिहै मनौ रूप अवै धर च्वै ॥४॥

कवित्त

छवि को सदन मोद मंडित वदन चंद
तृपित चपनि लाल कवधौं दिखायहौ।
चटकीलौ भेष करें मटकीली भाँति सौही
मुरली अधर धरें लटकत आयहौ ॥
लोचन दुराय कछू मृदु मुसिक्याय नेह
भीनी बतियानि लड़काय बतरायहौ।
विरह जरत जिय जानि आनि प्रान प्यारे
कृपानिधि आनँद को घन बरसायहौ ॥ ५ ॥
वहै मुसकानि वहै मृदु बतरानि वहै
लड़कीली बानि आनि उर मैं अरति है।
वहै गति लैनि औ बजावनि ललित बैन
वहै हँसि दैन हियरा तें न टरति है ॥

वहै चतुराई सों चिताई चाहिवे की छवि
वहै छैलताई न छिनक विसरति है।
आनँदनिधान प्रानप्रीतम सुजानजू की
सुधि सव भाँतिन सौं वेसुधि करति है ॥ ६ ॥
जासों प्रीति ताहि निठुराई सों निपट नेह
कैसें करि जिय की जरन सो जताइए।
महा निरदई दई कैसें कै जिवाऊँ जीव
वेदन की वढ़वारि कहाँ लौं दुराइए ॥
दुख के वखान करिवे कों रसना कैं होति
ऐयैं*! कहूँ वाकौ मुख देखन न पाइए।
रैन दिन चैन को न लेस कहूँ पैयें भाग
आपनेही ऐसे दोष काहि धौं लगाइए ॥ ७ ॥

सवैया

भोर तें साँझ लों कानन ओर निहारति वावरी नैंकु न हारति।
साँझ तें भोर लों तारनि ताकिवो तारन सौं इक तार न टारति ॥
जैा कहूँ भावतो दीठि परै घनआनँद आँसुनि औसर गारति।
मोहन सौहन जोहन की लगियै रहै आँखिन के मन आरति ॥८॥

कवित्त

भए अति निठुर मिटाय पहिचान डारी
याही दुख हमैं जक लगी हाय हाय है।

* आश्चर्य पद है।

तुम तौ निपट निरदई गई भूलि सुधि
हमैं सूल सलनि सो केहूँ न भुलाय है ॥
मीठे मीठे बोल बोलि ठगी पहिलें तौ तब
अब जिय जारत कहौ धौं कौन न्याय है ।
सुनी है कै नाहीं यह प्रगट कहावति जू
काहू कलपाय है सु कैसें कल पाय है ॥ ९ ॥

सवैया

हीन भए जल मीन अधीन कहा कछु मो अकुलानि समाने ।
नीरस नेही कों लाय कलंक निरास ह्वै कायर त्यागत प्रानै ॥
प्रीति की रीति सु क्यों समझै जड़ मीत के पानै परै को प्रमानै* ।
या मन की जु दसा घनआनद जीव की जीवन जान ही जानै ॥१०॥
मीत सुजान अनीति करौ जिन हा हा न हूजिए मोहि अमोही ।
दीठि कों और कहूँ नहिं ठौर फिरी दृग रावरे रूप की दोही ॥
एक बिसास की टेक गहें लगि आस रहे बसि प्रान बटोही ।
हौ घनआनँद जीवनमूल दई कित प्यासनि मारत मोही ॥११॥
पहिलें घनआनँद सींचि सुजान कहीं बतियाँ अति प्यारपगी ।
अब लाय वियोग की लाय बलाय बढ़ाय बिसास दगानि दगी ॥
अँखिया दुखयानि कुबानि परी न कहूँ लगैं कौन घरी सु लगी ।
मति दौरि थकी न लहै ठिक ठौर अमोही के मोह मिठास ठगी१२
क्यों हँसि हेरि हरयो हियरा अरु क्यों हित कै चित चाह बढ़ाई ।
काहे कों बोलि सुधासने बैननि चैननि मैननि सैन चढ़ाई ॥

* नर्तागा ।

सो सुधि मो हिय मैं घनआनँद सालति केहूँ कढ़ै न कढ़ाई।
मीत सुजान अनीति की पाटी इते पै न जानिए कौन पढ़ाई ॥१३॥

कवित्त

प्रीतम सुजान मेरे हित के निधान कहौ
कैसें रहैं प्रान जो अनखि अरसाय हौ।
तुम तो उदार दीन हीन आनि परयो द्वार
सुनिऐ पुकार याहि कौलों तरसाय हौ॥
चातक है रावरो अनोखो मोहि आवरो सु-
जान रूप बावरो बदन दरसाय हौ।
विरह नसाय दया हिय मैं बसाय आय
हाय कब आनँद को घन बरसाय हौ॥ १४॥

सवैया

तब तौ छवि पीवत जीवत हे अब सोचनि लोचन जात जरे।
हित पोष के तोषतु प्रान पले विललात महा दुख दोष भरे॥
घनआनँद मीत सुजान विना सबही सुख साज समाज टरे।
तब हार पहार से लागत हे अब आनि कै बीच पहार परे॥१५॥
पहिले अपनाय सुजान सनेह सों क्यों फिर नेह को तोरिए जू।
निरधार अधार दै धार मँझार दई गहि बाँह न बोरिए जू॥
घनआनँद आपने चातक कों गुन बाँधिलै मोह न छोरिए जू।
रस प्याय कै ज्याय बढ़ाय कै आस विसास मैं यों विष घोरिए जू १६
रावरे रूप की रीति अनूप नयो नयो लागत ज्यों ज्यों निहारिए।
त्यों इन आँखिनि बानि अनोखी अघानि कहूँ नहिं आन तिहारिए॥

सोरठा

घनआनँद रस ऐन, कहौ कृपानिधि कौन हित ।
मरत पपीहा नैन, दरसौ पै बरसौ नहीं ॥ २३ ॥
पहचानै हरि कौन, मोसे अनपहचान को ।
त्यों पुकार सधि मौन, कृपा कान मधि नैन ज्यों ॥ २४ ॥

कवित्त

आसा गुन बाँधिकैं भरोसो सिल धरि छाती
पूरे पन सिंधु मैं न बूड़त सकायहौ ।
दुख दव हिय जारि अंतर उदेग आँच
निरंतर रोम रोम त्रासनि तचायहौ ॥
लाख लाख भाँतिन की दुसह दसानि जानि
साहस सहारि सिर आरे लौं चलायहौ ।
ऐसें घनआनँद गही है टेक मन माहिं
एरे निरदई तोहिं दया उपजायहौं ॥ २५ ॥

सवैया

अंतर आंच उसास तचै अति अंग उसीजै उदेग की आसव ।
ज्यों कहलाय मसूसनि ऊमस क्योंहूँ कहूँ सु धरे नहिं थ्यावस ॥
नैन उघारि हियें बरसै घनआनँद छाई अनोखिए पावस ।
जीवनमूरति जान को आनन है बिन हेरें सदाई अमावस ॥२६॥
जान के रूप लुभायकै नैननि बेचि करी अधबीच ही लौंड़ी ।
फैलि गई घर बाहिर बात सु नीकैं भई इन काज कनौड़ी ॥

क्योंकरि थाह लहै घनआनँद चाह नदी तट ही अति औंड़ो।
हाय दई न बिसासी सुनै कछु है जग बाजति नेह की डौंड़ी ॥२७॥

दोहा

जानराय जानत सबै, अंतरगत की बात।
क्यों अजान लौं करत फिर, मो घायल पर घात ॥ २८ ॥

सवैया

लै ही रहे हौ सदा मन और को दैबो न जानत जान दुलारे।
देख्यो न है सपनेहूँ कहूँ दुख त्यागे सकोच औ सोच सुखारे॥
कैसो सँजोग वियोग धौं आहि फिरौ घनआनँद ह्वै मतवारे।
मो गति बूझि परै तबहीं जब होहु घरीकहूँ आप तें न्यारे॥२९॥
खोय दई बुधि सोय गई सुधि रोय हँसै उनमाद जग्यो है।
मौन गहै चकि चाकि रहै चलि बात कहै तन दाह दग्यो है॥
जानि परै नहिं जान तुम्हें लखि ताहि कहा कछु आहि खग्यो है।
सोचनिहीं पचिए घनआनँद हेत पग्यो किधौं प्रेत लग्यो है॥३०॥

कवित्त

बेरि घबरानी उबरानिही रहति घन
आनँद आरत राती साधनि मरति हैं।
जीवन अधार जान रूप के अधार बिन
ब्याकुल बिकार भरी खरी सुजरति हैं॥
अतन जतन तें अनखि अरसानी बीर
परी पीर भीर क्योंहूँ धीर न धरति हैं।

देखिए दसा असाध अँखियाँ निपेटिनि की
भसमी बिथा पैं नित लंघन करति हैं ॥ ३१ ॥

बिकच* नलिन लखैं सकुचि मलिन होति
ऐसी कछू आँखिन अनोखो उरभनि है।
सौरभ समीर आयें बहकि डहकि जाय
राग भरे हिय मैं बिराग मुरभनि है॥
जहाँ जान प्यारी रूप गुन को दीप न लहै
तहाँ मेरे ज्यो परै बिषाद गुरभनि है।
हाय अटपटी दसा निपट चपेटै टीसी
क्यों हूँ घनआनँद न सूझै सुरभनि है ॥ ३२ ॥

तब ह्वै सहाय हाय कैसें धौं सुहाई ऐसी
सब सुख संग लै बियोग दुख दै चले।
सींचे रस रंग अंग अंगनि अनंग सौंपि
अंतर मैं बिषम बिषाद बेलि बै चले॥
क्यों धौं ये निगोड़े प्रान जान घनआनँद के
गोहन न लागे जब वे करि बिजै चले।
अतिही अधीर भई पीर भीर घेरि लई
हेली मनभावन अकेली मोहिं कै चले ॥ ३३ ॥

रोम रोम रसना ह्वै लहै जो गिरा के गुन
तऊ जान प्यारी निबरैं न मैन आरतैं।

* विकसित। † दुःख।

ऐसे दिनदीन दीन की दया न आई दई
तोहि विप भो यो विषम वियोगसर मार तैं ॥
दरस सुरस प्यास भाँवरे भरत रहौं
फेरिए निरास मोहिं क्यों धों यों वछार* तैं ।
जीवन अधार घनआनँद उदार महा
कैसें अनसुनी करी चातक पुकार तैं ॥ ३४ ॥
चातिक चुहल चहुँ ओर चाहै स्वातिही कों
सूरे पन पूरे जिन्हें विष सम अमी है ।
प्रफुलित होत भान के उदोत कंज पुंज
ता विन विचारनिहीं जोतिजाल तमी है ॥
चाहौ अनचाहौ जान प्यारे पै आनँदघन
प्रीति रीति विषम सुरोम रोम रमी है ।
मोहि तुम एक तुम्हैं मो सम अनेक आहिं
कहा कछु चंदहिं चकोरन की कमी है ॥ ३५ ॥

सवैया

जीवन हौ जिय की सब जानत जान कहा कहि बात जतैए ।
जो कछु है सुख संपति सौंज सु नैसिक की हँसि दैन मैं पैए ॥
आनँद के घन लागै अचंभो पपोहा पुकार तें क्यों अरसैए ।
प्रीतिपगी अँखियानि दिखाय कै हाय अनीति सुदीठि छिपैए ॥३६॥

---

* वौछार ।

कवित्त

चोप चाह चावनि चकोर भयो चाहतहीं
सुखमा प्रकास मुख सुधाकर पूरे कौ ।
कहा कहौं कौन कौन विधि की बँधनि बँध्यो
सुकस्यो न उकस्यो बनाव लखि जूरे कौ ॥
जाही जाही अंग पर्यो ताही गरि गरि सर्यो
हर्यो बल बापुरे अनंग दल चूरे कौ ।
अब बिन देखे जान प्यारी यों अनंदघन
मेरो मन भयो भटू पात है बघूरे कौ ॥ ३७ ॥

दोहा

मोही मोह जनाय कै, अहे अमोही जोहि ।
सो हौ मो ही सों कठिन, क्योंकरि सोहो तोहि ॥ ३८ ॥

कवित्त

बिसु लै बिसार्यो तब कै बिसासी आपचार्यो
जान्यो हुतौ मन तैं सनेह कछु खेल सो ।
अब ताकी ज्वाल मैं पजरिबो रे भली भांति
नीकै आहि असह उदेग दुख सेल सो ॥
गए उड़ि तुरत पतंग लौं सकल सुख
पर्यो आय औचक वियोग बैरी झेल सो ।
रुचि ही के राजा जान प्यारे यों अनंदघन
होत कहा हेरें रंक मान लीनों मेल सो ॥ ३९ ॥

सूझै नहीं सुरझ उरझि नेह गुरझनि
मुरझि मुरझि निस दिन डाँवाँडोल है।
आह की न थाह दैया कठिन भयो निवाह
चाह के प्रवाह बोरयो दारुन कै लोल है॥
वे तौ जान प्यारे निधरक हैं अनंदघन
तिनकी धौं गूढ़ गति मूढ़मति को लहै।
आगें न विचारयो अब पाछें पछताएँ कहा
जान मेरे जियरा वनी को कैसो मोल है॥ ४० ॥

अंतर उदेग दाह आँखिन प्रवाह आँसू
देखी अटपटी चाह भीजनि दहनि है।
सोइबौ न जागिबौ हूँ हँसिबौ न रोइबौ हूँ
खोय खोय आपही मैं चेटक लहनि है॥
जान प्यारे प्रानंनि बसत पै अनंदघन
बिरह विषम दसा मूक लौं कहनि है।
जीवन मरन जीव मीच बिना बन्यो आय
हाय कौन विधि रची नेही की रहनि है॥ ४१ ॥

सवैया

नेहनिधान सुजान समीप तौ सींचतही हियरा सियराई।
सोई किधौं अब और भई दई हेरतही मति जाति हिराई॥
है बिपरीति महा घनआनँद अंबर तें धर कों झर आई।
जारति अंग अनंग की आँचनि जोन्ह नहीं सु नई अँग लाई॥४२॥

कवित्त

नैननि मैं लागै जाय जागै सु करेजे बीच
वा बस ह्वै जीव धीर होत लोटपोट है।
रोम रोम पूरि पीर व्याकुल सरीर महा
घूमै मति गति आसैं प्यास की न टोट है॥
चलत सजीवन सुजान दृग हाथनि तैं
प्यारे अनियारी रुचि रखवारी वोट है।
जब जब आवै तब तब अति मन भावै
अहा कहा विषम कटाच्छ सर चोट है॥ ४३॥

पाती मधि छाती छत लिखि न लिखाए जाहिं
काती लै विरह घाती कीने जैसे हाल हैं।
आगुरी वहकि तहीं पाँगुरी किलकि होति
तावी ताती दसानि के जाल ज्वाल माल हैं॥
जान प्यारे जौव कहूँ दीजिऐ सनेसौ तौव
आवा सम कीजिए जु कान तिहि काल हैं।
नेह भीजी बातैं रसना पैं उर आँच लागें
जागैं घनआनँद ज्यों पुंजनि मसाल हैं॥ ४४॥

सवैया

कंत रमैं उर अंतर मैं सु लहै नहीं क्यों सुख रासि निरंतर।
दंत रहैं गहे आगुरी तें जु वियोग के तेह तचै परतंतर॥
जो दुख देखत हौं घनआनँद रैन दिना बिन जान सुतंतर।
जानैं वेई दिन राति बखाने तें जाय परै दिन गति कौ अंतर॥४५॥

चंद चकोर की चाह करै घनआनँद स्वाति पपीहा कों धावै।
त्यों बस रैन के ऐन बसै रवि मीन पैं दीन ह्वै सागर आवै॥
मोसों तुम्हैं सुनौ जान कृपानिधि नेह निबाहिबौ यों छवि पावै।
ज्यों अपनी रुचि राचि कुबेर सु रंकहि लै निज अंक बसावै॥४६॥
ज्यों बुध सों सुघराई रचै कोऊ सारदा कों कविताई सिखावै।
मूरतिवन्त महालछमी उर पोत हरा रचि लै पहिरावै॥
रागवधू चित चोरन के हित सोधि सुधारि कै तानहिं गावै।
त्योंहीं सुजान तियै घनआनँद मो जिय-चोर ई रीति (?) रिझावै ४७

कवित्त

हिये मैं जु आरति सु जारति उजारति है
मारति मरोरे जिय झारनि कहा करौं।
रसना पुकारि कै विचारी पचिहारि रहै
कहै कैसे अकह उदेग रूँधि कै मरौं॥
हाय कौन वेदनि विरंचि मेरे बाँट कीनी
निघटि परौं न क्योंहूँ ऐसी विधि हौं गरौं।
आनँद के घन हौ सजीवन सुजान देखौ
सीरी परी सोचनि अचंभे सों जरौं भरौं॥ ४८ ॥

सवैया

पाप के पुंज सकेलि सु कौन धों आनि घरी में बिरंचि बनाई।
रूप की लोभनि रीझ भिजाय कैं हाय इतै पैं सुजान मिलाई॥
क्यों घनआनँद धीर धरैं बिन पाँख निगोड़ी मरैं अकुलाई।
प्यास भरीं बरसैं तरसैं मुख देखन कों अँखियाँ दुखहाई॥४९॥

साधनहा मरिए भरिए अपराधनि वाधनि के गुन छावत।
देखै कहा सपनेहूँ न देखत नैन यों रैन दिना झर लावत॥
जौ कहूँ जात लखैं घनआनँद तौ तन नेकु न औसर पावत।
कौन वियोग भरे अँसुवा जु सँजोग में आगेई देखन धावत॥५०॥

कवित्त

उठि न सकत ससकत नैन बान बिंधे
इतेहूँ पैं विषम विषाद जुर लुबरै।
सूरे पन पूरे हेत खेत तें टरैं न कहूँ
प्रीति बोझ बापुरे भए हैं दबि कूबरे॥
संकट समूह में विचारे घिरे घुटैं सदा
जानी न परत जान कैसें प्रान ऊबरे।
नेही दुखियान की यहै गति अनंदघन
चिंता मुरझानि सहैं न्याय रहैं दूबरे॥५१॥
सुखनि समाज साज सजे तित सेवैं सदा
जित नित नए हित फन्दनि गसत हौ।
दुखतम पुंजनि पठाय दै चकोरनि पैं
सुधाधर जान प्यारे भलें ही लसत हौ॥
जीव सोच सूखैं गति सुमिरैं अनंदघन
कितहू उघरि कहूँ घुरि कै रसत हौ।
उजरनि बसी है हमारी अँखियानि देखौ
सुबस सुदेस जहाँ भावते बसत हौ॥५२॥

तपति उसास औधि रूँधिए कहाँ लौं दैया,
बात बूझै सैननिही उतर उचारियै।
उड़ि चल्यो रंग कैसें राखियै कलंकी मुख
अनलेखे कहाँ लौं न घूँघट उघारियै॥
जरि बरि छार ह्वै न जाय हाय ऐसी वैस
चित चढ़ी मूरति सुजान क्यों उतारियै।
कठिन कुदाय आय घिरी हौं अनंदघन
रावरी बसाय तौ बसाय न उजारियै॥ ५३॥

सवैया

अकुलानि के पानि परयो दिन राति सु ज्यो छिनकौ न कहूँ बहरै।
फिरवोई करै चित चेटक चाक लौं धीरज को ठिक क्यों ठहरै॥
भए कागद नाव उपाव सवै घनआनँद नेह नदी गहरै।
विन जान सजीवन कौन हरै सजनी विरहानल की लहरै॥५४॥

कवित्त

राति द्योस कटक सजेही रहै दहै दुख
कहा कहौं गति या वियोग वजमारे की।
लियो घेरि औचक अकेलौ कै विचारौ जीव
कछु न बसाति यों उपाय वलहारे की॥
जान प्यारे लागो न गुहार तौ जुहार करि
जूझि है निकसि टेक गहे पन धारे की।
हेत खेत धूरि चूरि चूरि ह्वै मिलैगो तव
चलैगी कहानी घनआनँद तिहारे की॥ ५५॥

जान प्यारी हौं तौ अपराधनि सों पूरन हौं
कहा कहौं ऐसी गति आवत गरो रुक्यो ।
साध मारे सुधा तो सुभाइ किमि गसै ताकी
आसा लै दहति भै चरन कंज सों ढुक्यो ॥
इतै पै जो रोस कै रसीली हियो पोढ़ो करों
तौ न कहूँ गैर जी को बेहू झगरो चुक्यो ।
ऐसे सोच आँचनि अनंदघन सुधानिधि
लपट कढ़ै न नेकौ हाहा जात ज्यों फुक्यो ॥ ५६॥

सुधा तें स्रवत विष फूल में जमत सूल
तम उगिलत चंद भई नई रीति है ।
जल जारे अंग और राग करै सुरभंग
संपति विपति पारै बड़ो बिपरीति है ॥
महागुन गहै ढापै औषधि हूँ रोग पोपै
ऐसे जान रस माहिं बिरस अनीति है ।
दिननि को फेर मोहि तुम मन फेरि डारयो
अहो घनआनँद न जानों कैसी बोतिहै ॥ ५७ ॥

गरल गुमान की गरावनि दसा को पान
करि करि बांस रैन प्रान घटि घोटिवो ।
नत खेत धूरि चूरि चूरि सास पाव राखि
विष समुदंगचान आगें उर ओटिवो ॥
जान प्यारे जो न मन आनै तौ आनंदघन
भूलि तू न सुमिरि परेखें चल चोटिवो ।

तिन्हैं यों सिराति छाती तोहि वै लगति ताती
तेरे बाँटें आयो है अँगारनि पै लोटिबो ॥ ५८ ॥
विकल विषाद भरे ताही की तरफ तकि
दामिनि हूँ लहकि बहकि यों जरयो करै।
जीवन अधार घन पूरित पुकारनि सों
आरत पपीहा नित कूकनि करयो करै ॥
अथिर उदेग गति देखिकैं आनंदघन
पौन पौड्यो सो बन बीथनि ररयो करै।
बूँद न परति मेरें जान जान प्यारी तेरे
बिरही को हेरि मेघ आँसुनि झरयो करै ॥ ५९ ॥

सवैया

सोयें न सोइबौ जागें न जाग अनोखियै लाग सु आँखिन लागी।
देखत फूल पै सूल भरी यह सूल रहै नित ही चित लागी ॥
चेटक जान सजीवनमूरति रूप अनूप महा रस पागी।
कौन वियोग दसा घनआनँद मो मति संग रहै अति खागी ॥ ६० ॥
मरिबौ बिसराम गनै वह तौ यह बापुरौ मीत तज्यो तरसै।
वह रूप छटा न सँभारि सकै यह तेज तवै चितवै बरसै ॥
घनआनँद कौन अनोखी दसा मति आवरी बावरी ह्वै थरसै।
बिछुरें मिलें मीन पतंग दसा कहा मो जिय की गति कों परसै ६१

कवित्त

तेरे देखिबे कों सबही तें अनदेखी करी
तू हूँ जो न देखै तो दिखाऊँ काहि गति रे।

सुनि निरमोही एक तोही सों लगाव मोही
सोही कहि कैसें ऐसी निठुराई अति रे ॥
विष सी कथानि मानि सुधा पान करयो जान
जीवननिधान ह्वै बिसासी मारि मति रे।
जाहि जो भजै सो ताहि तजै घनआनँद क्यों
हति कै हितूनि कहो काहू पाई पति रे ॥ ६२ ॥
लगी है लगनि प्यारे पगी है सुरति तो सों
जगी है बिकलताई ठगि सी सदा रहैं ।
जियरा उड्यो सो डोलै हियरा धक्योई करै
पियराई छाई तन सियराई दौ दहैं ॥
ऊनो भयो जीवो अब सूनो सब जग दीसै
दूनो भयो दुख एक एक छिन मैं सहैं ।
तेरे जो न लेखो मोहि मारत परेखो महा
जान घनआनँद पेपोइ बौलहल हैं (?) ॥६३॥
कौन की सरन जैये आपु त्यों न काहू पैये
सूनो सो चितैयै जग दैया कित कूकियै ।
सोचनि समैयै मति हेरत हिरैयै उर
आसुनि भिजैयै ताप तैयै तन सूकियै ॥
क्योंकरि बितैयै कैसे कहा धौं रितैयै मन
बिना जान प्यारे अब जीवनि तें चूकियै ।
बनी है कठिन महा मोहि घनआनँद यों
मीचौ मरि गई आसरो न जित ढूकियै ॥ ६४ ॥

अधिक बधिक तें सुजान रीति रावरी है
कपट चुगौ दै फिरि निपट करौ बरी ।
गुननि पकरि लै निपाख करि छोरि देहु
मरहि न जीयै महा विषम दया छुरी ॥
हौं न जानौं कौन धौं है या मैं सिद्धि स्वारथ की
लखी क्यों परति प्यारे अंतर कथा दुरी ।
कैसे आसा द्रुम पैं बसेरो लहै प्रान खग
बनक निकाई घनआनँद नई जुरी ॥ ६५ ॥
मेरो मन तोहिं चाहै तू न तनकौ उमाहै
मीन जल कथा है कि याहू ते विसेखिए ।
ता विन सो मरै छूटि परै जड़ कहा टरै
मरौं हौं न मरौं जान हिए अवरेखिए ॥
पल को बिछोह आगे कलपो अलप लागै
बिलपौं सदाई नेक तलफनि देखिए ।
सूनो जग हेरौं रे अमोही कहि काहि टेरौं
आनँद के घन ऐसी कौन लेखें लेखिए ॥ ६६ ॥
मुरझाने सबै अंग रह्यो न तनक रंग
बैरी सु अनंग पीर पावै जरि गयो ना ।
इते पैं बसंत सो सहायक समीप याके
महा मतवारो कहूँ काहू तें जु नयो ना ॥
तीखे नए नीके जी के गाहक सरनि लै लै
बेधै मन को कपूत पिता मोह भयो ना ।

पवन गवन संग प्राननि पठाय हौं तौ
जान घनआनँद को आवन जौ भयो ना ॥ ६७ ॥

सवैया

निस द्योस खरी उर माँझ अरी छवि रंग भरी मुरि चाहनि की।
तकि मोरनि त्यों चख ढोरि रहै ढरिगो हिय ढोरनि बाहनि की ॥
चटदै कटि पै बट प्रान गए गति सौं मति मैं अवगाहनि की।
घनआनँद जान लखी जब तें जक लागियै मोहि कराहनि की॥६८॥
किहि नेह बिरोध बढ्यो सब सों उर आवत कौन के लाज गई।
जिहि के भरि भार पहार दवै जग माँझ भई तिन तैं हरई ॥
दृग काहि लगे जु कहूँ न लगैं मन मानिक ही अनखानि ठई।
घनआनँद जान अजौं नहि जानत कैसे अनैसे हैं हाय दई ॥६९॥
इन बाट परी सुधि रावरे भूलनि कैसे उराहनो दीजियै जू।
अब तौ सब सीस चढ़ाय लई जु कछू मन भाई सु कीजियै जू ॥
घनआनँद जीवन प्रान सुजान तिहारियै बातनि जीजियै जू।
नित नीके रहौ तुम चाडु*कहाय असीस हमारियौ लीजियै जू ७०
बधिकौ सुधि लेत सुन्यो इतिकै गति रावरी कँहूँ न बूझि परै।
मति आवरी बावरी ह्वै जकि जाय उपाय कहूँ किन सूझि परै ॥
घनआनँद यौं अपनाय तजौ इन सोचनि हौं मन मूझि† परै।
दिन रैन सुजान वियोग के बान सहै जिय पापी न जूझि परै ॥७१॥

---

* चाडु = चतुर। † मूझि परै = मोहित होता है।

कवित्त

एरे वीर पौन तेरो सबै ओर गौन वारी
तो सो और कौन मनै ढरकौहीं वानि दै।
जगत के प्रान ओछे बड़े सों समान घन-
आनँद निधान सुख दान दुखियानि दै॥
जान उजियारे गुन भारे अति मोही प्यारे
अब ह्वै अमोही बैठे पीठि पहिचानि दै।
विरह विथा की मूरि आँखिन मैं राखौं पूरि
धूरि तिन पायनि की हाहा नैकु आनि दै॥ ७२॥

एकै आस एकै बिसवास प्रान गहैं बास
और पहिचानि इन्हें रही काहू सौं न है।
चातक लौं चाहै घनआनँद तिहारी ओर
आठौ जाम नाम लै बिसारि दोनी मौन है॥
जीवनअधार प्रान सुनिए पुकार नेक
अनाकानी दैबो दैया घाय कैसो लौन है।
नेहनिधि प्यारे गुन भारे ह्वै न रूखे हूजै
ऐसो तुम करौ तौ बिचारन कें कौन है॥ ७३॥

सवैया

रंग लियो अबलानि के अंग तें च्वाय कियो चित चैन को चोवा।
और सबै सुख सोंधे सकेलि मचाय दियो घन आनँद ढोवा॥
प्रान अबीरहि फैंट भरें अति छाक्यो फिरै मति की गति खोवा।
स्याम सुजान बिना सजनी ब्रज यों बिरहा भयो फाग बिगोवा॥७४॥

कवित्त

पीरी परी देह छीनी राजत सनेह भीनी
कीनी है अनंग अंग अंग रंग बोरी सी।
नैन पिचकारी ज्यों चल्योई करैं रैन दिन
बगराए बारनि फिरति झकझोरी सी॥
कहाँ लौं बखानौं घनआनँद दुहेली दसा
फागमयी भई जान प्यारी वह भोरी सी।
तिहारे निहारे बिन प्राननि करत होरा
बिरह अँगारनि मगरि* हिय होरी सी॥ ७५॥

कहाँ एतो पानिप बिचारी पिचकारी धरै
आसू नदी नैननि उमगियै रहति है।
कहाँ ऐसी राँचनि हरद केसू केसरि मैं
जैसी पियराई गात पगियै रहति है॥
चाँचरि चौपहि हू तौ औसरही माचति पै
चिंता की चहल चित लगियै रहति है।
तपनि बुझे बिन आनँदघन जान बिन
होरी सी हमारे हियं लगियै रहति है॥ ७६॥

दसन बसन बोली भरियै रहै गुलाल
हँसनि लसनि त्यों कपूर सरस्यो करै।
साँसनि सुगंध सोंधे कोरिक समोय धरे
अंग अंग रूप रंग रस बरस्यो करै॥

---

* मगरि = झोरी।

जान प्यारी तो तन अनंदघन हित नित
अमित सुहाग राग फाग दरस्यो करै।
इते पै नवेली लाज अरस्यो करे जु प्यारो
मन फगुवा दै गारी हूँ कों तरस्यो करै॥ ७७॥

सवैया

चरही घर चौचँद चाँचरि दै बहु भाँतिनि रंग रचाय रह्यो।
भरि नैन हिये हरि सूझि सम्हार सबै करि नाक नचाय रह्यो॥
घनआनँद पै ब्रजगोरिनि कौं नख तें सिख लों चरचाय रह्यो।
लखि सूनौ सकै कित रावरौ ह्वै विरहा नित फाग मचाय रह्यो ७८

कवित्त

फागुन महीना की कही ना परैं बातैं दिन
रातैं जैसै बीतत सुने तें डफ घोर कों।
कोऊ उठै तान गाय प्रान बान पैठि जाय
चित बीच एरी पै न पाऊँ चितचोर कों॥
मची है चुहल चहूँ ओर चोप चाँचरि सों
कासों कहौं सहौं हौं बियोग झकझोर कों।
मेरौ मन आली वा बिसासी बनमाली बिनु
बावरे लों दौरि दौरि परै सब ओर कों॥ ७६॥

सवैया

सोंधे की बास उसासहिं रोकत चंदन दाहक गाहक जी कौ।
नैननि वैरी सो है री गुलाल अबीर उड़ावत धीरज ही कौ॥

राग विराग धमार त्यों धार सी लौटि परयो ढँग यों सबही कौ।
रंग रचावन जान बिना घनआनँद लागत फागुन फीकौ ॥८०॥
सुन री सजनी रजनी की कथा इन नैन चकोरनि ज्यों बितई।
मुख चंद सुजान सजीवन कौ लखि पाये भई कछु रीति नई॥
अभिलाषनि आतुरताई घटा तब ही घनआनँद आनि छई।
सु बिहात न जानि परी भ्रम सी कबहूँ बिसवासिनि बीति गई ८१
मन जैसे कछू तुम्हैं चाहत है सु बखानिए कैसैं सुजान ही हौ।
इन प्रानिनि एक सदा गति रावरे बावरे लौं लगियै नित लौ॥
बुधि औ सुधि नैननि बैननि मैं करि बास निरंतर अंतर गौ।
उघरौ जग छाय रहे घनआनँद चातक त्यों तकियै अब तौ ॥८२॥
लगियै रहै लालसा देखन की किहि भाँति भटू निसि द्यौस कटै।
करि भीर भरी यह पीर महा विरहा तनिकौ हिय तैं न हटै॥
घनआनँद जान सँयोग समैं बिसमै बुधि एकही बेर बटै।
सपनो सो टरै फिरि सौगुनौ चेटक बाढ़त डाढ़त घोटि घटै ॥८३॥
अति सूधो सनेह को मारग है जहाँ नेकु सयानप बाँक नहीं।
तहाँ साँचे चलैं तजि आपन पौ झझकैं कपटी जे निसाँक नहीं॥
घनआनँद प्यारे सुजान सुनौ यहाँ एक तें दूसरो आँक नहीं।
तुम कौन धौं पाटी पढ़े हौ कहौ मन लेहु पै देहु छटाँक नहीं॥८४॥

कवित्त

ननवा मधुर लागै वाको विसु अंग भयें
याहि देखें रसहू में कटुता बसति है।

वाके एक मुख ही तें बाढ़त विकार तन
यह सरबंग आनि प्राननि गसति है ॥
सुंदर सुजान जू सजीवन तिहारो ध्यान
तासों कोटि गुनी ह्वै लहरि सरसति है।
पापिनि डरारी भारी साँपिनि निसा बिसारी
बैरिनि अनोखी मोहि डाहनि डसति है ॥८५॥

कारी कूर कोकिल कहाँ को बैर काढ़ति री
कूकि कूकि अबहीं करेजो किन कोरि लै।
पैंड़ परे पापी ये कलापो निस द्योस ज्योंहीं
चातक घातक त्योंही तुहूँ कान फोरि लै ॥
आनँद के घन प्रान जीवन सुजान बिना
जानि कै अकेली सब घेरौ दल जोरि लै।
जौ लौं करैं आवन विनोद बरसावन वे
तौ लौं रे डरारे बजमारे घन घोरि लै ॥८६॥

सवैया

बैरी वियोग की हूकनि जारत कूकि उठै अचका अधिरातक।
बेधतु प्रान बिनाहीं कमान सु बान से बोल सों कान ह्वै घातक॥
सोचनि हीं पचियै बचिए कित डोलत मो तन लाए महा तक।
वे घनआनँद जाय छए उत पैंडे परो इत पातकी चातक ॥८७॥

कवित्त

अंतर मैं बासी पै प्रवासी कैसो अंतर है
मेरी न सुनत दैया आपनीयौ ना कहै।

लोचननि तारे ह्वै सुझावे सब सूझौ नाहिं
बूझी न परति ऐसे सोचनि कहा दहौ ॥
हौ तौ जानराय जाने जाहु न अजान या तें
आनँद के घन छाया छाय उघरे रहौ।
मूरति मया की हा हा सूरति दिखैए नेकु
हमैं खोय या विधि हो कौनधौं लहा लहौ ॥८८॥

सवैया

कित को ढरिगो वह ढार अहो जिहि मो तन आँखिन ढोरत हे।
अरसानि गही उहि बानि कछू सरसानि सों आनि निहोरत हे॥
घनआनँद प्यारे सुजान सुनौ तब यों सब भाँतिनि भोरत हे।
मन माहिं जो तोरन ही तो कहौ बिसवासी सनेह क्यों जोरत हे ८९
घनआनँद प्यारे सुजान सुनौ जिहि भाँतिनि हौं दुख सूल सहौं।
नहीं आवनि औधि न रावरी आस इतेक पै एक सी बाट चहौं॥
यह देखि अकारन मेरी दसा कोऊ बूझै तौ उत्तर कौन कहौं।
जिय नेकु बिचारि कै देहु बताय हहा पिय दूरि तें पाय गहौं॥९०॥
बिरहा रवि सों घट व्योम तच्यो बिजुरी सी पिवैं इकली छतियाँ(?)
हिय सागर तें दृग मेघ भरे उघरे बरसैं दिन औ रतियाँ॥
घनआनँद जान अनोखी दसा न लखौं दई कैसे लिखौं पतियाँ।
नित सावन डीठी सु बैठक मैं टपकैं बरुनी तिहि ओलतियाँ ॥९१॥
इत भायनि भावरे भौंर भरैं उत चायनि चाहि चकोर चकैं।
निसि बासर फूलनि भूलनि मैं अति रूप की बात न व्योर सकैं॥

घनआनँद घूँघट ओट भए तब बावरे लों चहुँ ओर तकैं।
पिय तो मुख को तुम (?) देखि सखी निज नैन विसेप सुजान छकैं ६२

कवित्त

मोहन अनूप रूप सुंदर सुजान जू को
ताहि चाहि मन मोहि दसा महा मोह की।
अनोखी हिलग दैया विछुरै तौ मिल्यो चाहै
मिलेंहू में मारैं जारैं खरक विछोह की॥
कैसैं धरौं धीर बीर अतिही असाध पीर
जल हीन रोग याहि नीकैं करि टोह की।
देखैं अनदेखैं तहीं अटक्यो अनंदघन
ऐसी गति कहौ कहा चुंबक औ लोह की॥६३॥

सवैया

क्योंहूँ न चैन परै दिन रैन सु पैंडे परयो बिरहा बजमारौ।
ज्यों वहरै न कहूँ छन एकहू चाहै सुजान सजीवन प्यारौ॥
ऐसी बढ़ी घनआनँद वेदनि दैया उपाय तैं आवै तँवारौ।
हौंहीं भरौं अकली कहौं कौन सों जा विध होत है साँझ सवारौ६४

कवित्त

जोई रात प्यारे संग बातनि न जात जानी
सोई अब कहाँ तैं बढ़नि लिएँ आई है।
जोई दिन कंत साथ जीवन को फल लाग्यो
सोई बिन अंत देत अंतक दुहाई है॥

इनको तौ रहौ मेरे अंग अंग औरे भए
सूखी सुख लता झालरति मुरझाई है।
आली घनआनँद सुजान सों बिछुरि परें
आपौ न मिलत महा बिपरीति छाई है ॥९५॥

सवैया

जिन आँखिनि रूप चिन्हारि भई तिनको नित नींद ही जागनि है।
हित पोर सों पूरित जो हियरा फिर ताहि कहौ कहाँ लागनि है॥
घनआनँद प्यारे सुजान सुनौ जियराहिं सदा दुख दागनि है।
सुख में मुख चंद बिना निरखे नख तें सिख लौं बिष पागनि है ॥९६॥

कवित्त

घर बन बीथिन मैं जित तित तुम्हैं देखौं
इतेहू पै मैं न भई नई बिरहा-मई।
विपम उदेग आगि लपटै अतर लागें
कैसें कहौं जैसें कछू तचनि महा तई ॥
फूटि फूटि टूक टूक ह्वै कै उड़ि जाय हियौ
बचिबो अचंभो मीचौ निदर करै गई।
आनँद के घन लखें अनलखें दुहूँ ओर
दई मारी हारी हम आप हौ निरदई ॥९७॥

सवैया

बिरच्यौ किहि दोस न जानि परौं जु गयौ तजि मो मन रोसन तैं।
जिय तौ बिन यौं अब आतुर क्यौं तब तौ तनकौ बिरमायो न तैं ॥

घनआनँद जान अमोही महा अपनाय इते पर त्यागि हतैं।
अध बीच परयो दुख ज्वाल जरै सबको सुख को हठि छारद (?) तैं ९८
पूरन प्रेम को मंत्र महा पन जा मधि सोधि सुधार है लेख्यो।
ताही के चारु चरित्र विचित्रनि यों पचि कै रचि राखि विसेख्यो॥
ऐसो हियो हित पत्र पवित्र जु आन कथा न कहूँ अवरेख्यो।
सो घनआनँद जान अजान लों टूक कियो पर बाँचि न देख्यो।९९।
जीव की बात जनाइए क्योंकरि जान कहाय अजाननि आगौ।
तीरनि मारि कै पीर न पावत एक सो मानत रोइबो रागौ॥
ऐसी बनी घनआनँद आनि जु आन न सूझत सो किन त्यागौ।
प्रान मरैंगे भरैंगे बिथा पै अमोही सों काहू को मोह न लागौ १००
तोहि तौ खेल पै मो हिय सेल सो एरे अमोही बिछोह महा दुख।
जाहि जु लागै सु ताहि सहैगो दहैगो परयो लहि तू तौ सदा सुख॥
एकही टेक न दूसरी जानत जीवन प्रान सुजान लिए रुख।
ऐसी सुहाय तौ मेरौ कहा बस देखिहौं पीठि दुरायहौ जो मुख॥१०१॥

छप्पय

मही दूध सम गनै हंस बक भेद न जानै।
कोकिल काक न ज्ञान काँच मनि एक प्रमानै॥
चंदन ढाक समान राँग रूपौ सम तौलै।
बिन बिवेक गुन दोष मूढ़ कवि ब्योरि न बोलै॥
प्रेम नेम हित चतुरई जे न बिचारत नैक मन।
सपनेहूँ न बिलंबियै छिन तिन ढिग आनंदघन॥१०२॥

कहिए काहि जताय हाय जो मो मधि बीतै ।
जरनि बुझैं दुख ज्वाल धकैं निस बासरही तै ॥
दुसह सुजान वियोग बसों ताही सँयोग नित ।
बहुरि परै नहिं समय गमै जियरा जित को तित ॥
अहो दई रचना निरखि रीझि खीझि मुरझौ सु मन ।
ऐसी विरचि विरंचि कों कहा सरयो आनंदघन ॥१०३॥

सवैया

प्यार को सो सपनो हँसि हेरनि ऐसी चितौनि कहौ कहाँ पाई ।
बंक महा विस भोवन प्रान सुधाई सनी मुसकानि सुधाई ॥
यों घनआनँद चेटक मूरति लै जब अंतर ज्वाल बसाई ।
कैसें दुराइहैं जान अमोही मिलाप में एतियै ऊषमताई ॥१०४॥

कवित्त

मिलत न कहूँ भरे रावरे अमिलताई
हिए मैं किए विसाल जे विलोह छत हैं ।
प्रीतम अनेरे मेरे घूमत घनेरे प्रान
विष-भोए विषम बिसास बान हत हैं ॥
प्यार सें परम पूरो सुन्योहू न हो सो देख्यो
जान परी जान ये अमोहिन के मत हैं ।
पौन को प्रवेस हो न जहाँ घनआनँद यों
तहां लै कहाँ तैं बीच पारे परवत हैं ॥१०५॥
आनाकानी आरसी निहारिबो करौगे कौ लौं
कहा मो चकित दसा त्यों न दीठि डोलिहै ।

मौनहू सों देखिहौं कितेक पन पालिहौ जू
कूक भरी मूकता बुलाय आप बोलिहै ॥
जानि घनआनँद यों मोहि तुम्हैं पैज परी
जानियैगो टेक टरैं कौन धों मलोलिहै।
रूई दिए रहौगे कहाँ लौं बहराइवे की
कबहूँ तो मेरियै पुकार कान खोलिहै ॥१०६॥

सवैया

घनआनँद जान सुनौ चित दै हित रीति दई तुम तौ तजि कैं।
इत साहस सों घन संकट कोटिक आए समाजनि कों सजि कैं ॥
मन कें पन पूरन पूरि रह्यो सु तजै कित या विधि सों भजि कैं।
यह देखि सनेह विदेह दसा अति हीन ह्वै दीन गए लजि कैं॥१०७॥

कवित्त

रूप उजियारे जान प्राननि के प्यारे कब
करौगे जुन्हैया दैया बिरह महा तमैं।
सुखद सुधा सी हँसि हेरनि पिवाइ पिय
जियहि जिवाइ मारिहौ उदेग सेज मैं ॥
सुंदर सुदेस आँखैं बहुर्‌यो बसाय आय
बसिहौ छबीले जैसें हुलसि हिएँ रमैं।
ह्वैहै सोऊ घरी भाग उघरी अनंदघन
सुरस बरसि लाल देखिहौ हरी हमैं ॥१०८॥

सवैया

किंसुक पुंज से फूलि रहे सु लगी उर दौ जु वियोग तिहारें।
मातो फिरै न घिरै अवलानि पैं जान मनोज यों डारत मारें॥
ह्वै अभिलापनि पातनि पात कढ़ै हिय सूल उसासनि डारें।
है पतझार वसंत दुहूँ घनआनँद एकहि बार हमारें॥१०९॥
जीवनिमूरति जान सुनौ गति जौ जिय रावरो पार न पावतौ।
संगम रंग अनंग उमंगनि भूमिन आनँद अंबुद छावतौ॥
लाड़िलौ जोवन त्यों अधरासव चोंपनि लोभी मनै नहिं भावतौ।
तौ उरदाहक प्राननि गाहक रूखे भए को परेखो न आवतौ११०

कवित्त

तेरी बाट हेरत हिराने औ पिराने पत
थाके ये विकल नैना ताहि नपि नपि रे।
हिए में उदेग आगि लागि रही रात द्यौस
तोहि कों अराधौं जोग साधौं तपि तपि रे॥
जान घनआनँद यों दुसह दुहेली दसा
बीच परि परि प्रान पिसे चपि चपि रे।
जीवे तें भई उदास तऊ है मिलन आस
जीवहि जिवाऊँ नाम तेरो जपि जपि रे॥१११॥
तोहि मध गावें एक तोही कों बतावें वेद
पावें फल ध्यावें जैसी भावनानि भरि रे।
जल थल व्यापी सदा अंतरजामी उदार
जगत में नाम जानराय रह्यो परि रे॥

एते गुन पाय हाय छाय घनआनँद यों
कैधों मोहि दीस्यौ निरगुन ही उघरि रे।
जरौं बिरहागिनि मैं करौं हौं पुकार कासों
दई गयो तूहूँ निरदई ओर ढरि रे ॥११२॥
चंदहिं चकोर करै सोऊ ससि देह धरै
मनसा हू ररै एक देखिवे कों रहै ग्वै।
ज्ञानहू ते आगे जाकी पदवी परम ऊँची
रस उपजावै तामें भोगी भोगजात (?) ग्वै ॥
जान घनआनँद अनोखो यह प्रेम पंथ
भूले ते चलत रहैं सुधि के थकित ह्वै।
बुरो जिन मानौ जौ न जानौ कहूँ सीख लेहु
रसना के छाले परैं प्यारे नेह नावँ छ्वै ॥११३॥

सवैया

घनआनँद जीवन रूप सुजान ह्वै पावत क्यों दृगप्यास नहीं।
अरु फूलि रहे कुसुमाकर से सुकहूँ पहिचान की बास नहीं ॥
रसिकाई भरे अपने मन पैं सपने रस आस हूँ पास नहीं।
पचि कौने बिरंचि रचे हौ कहौ जु हितूनि हतौ हिय त्रास नहीं ११४
सूने परे दृग भौंन सुजान जे तैं बहुरें कब आप दसायहौ।
सोचन हीं मुरझ्यो पिय जो हिय सो सुख सौंचि उदेग नसायहौ ॥
हाय दई घनआनँद ह्वै करि कौलों वियोग के ताप तपायहौ।
ये हो हँसी जिन जानो हहा हमैं ग्वाय कहौ अब काहि हँसायहौ ११५

कवित्त

जहाँ तैं पधारे मेरे नैननहीं पाय धारै
वारे ये बिचारे प्रान पैंड पैंड पैं मनौ।
आतुर न होहु हाहा नैकु फेट छोरि बैठो
मोहि वा बिसासी को है ब्योरो बूझिबै घनो॥
हाय निरदई कों हमारी सुधि कैसें आई
कौन विधि दीनी पाती दीन जानि कै भनो।
झूठ की सचाई छाक्यो त्यों हित कचाई पाक्यो
ताके गुन गन घनआनँद कहा गनो॥११६॥

नितही अपूरव सुधाधर वदन आछो
मित्र अंक आए जोति ज्वालनि जगतु है।
अमित कलानि ऐन रैन द्यौस एक रस
केस तम सम रंग राँचनि पगतु है॥
सुनि जान प्यारी घनआनँद तें दूनो दिपै
लोचन चकोरनि सों चोपनि खगतु है।
नीठि डीठि परें खरकत सो किरकिरी लों
तेरे आगे चंद्रमा कलंकी सो लगतु है॥११७॥

उघरि नचे हैं लोकलाज ते बचे हैं पूरी
चोपनि रचे हैं सुदरस लोभी रावरे।
जके हैं थके हैं मोह मादिक छके हैं अन-
बोलें पै थके हैं दसा चितै चित चावरे॥

औसर न सोचैं घनआनँद विमोचैं जल
लोचैं वही मूरति अखरानि आवरे।
देखि देखि फूलैं ओट भ्रम नहिं भूलैं देखो
बिन देखें भए ये वियोगी दृग बावरे ॥११८॥

सवैया

कित लोग कथा सु वृथा ही करौ यह तो तबही अनुमानि लई।
अपनेई सनेह ठगी भ्रम दै प्रतिबिंबहि मूरति मानि लई॥
घनआनँद वेहू सुजान हुते किहि गौं हठ कै सठहानि लई।
ब्रज देखत होत सुमारनि कौ तजि भाजि बचे हम जानि लई॥११९॥
चूर भयो चित पूरि परेखनि एहो कठोर अजों दुख पीसत।
साँस हिए न समाय सकोचनि हाय इते पर बान कसीसत॥
ओटनि चोट करो घनआनँद नीके रहौ निस द्योस असीसत।
प्राननि बीच बसे हौ सुजान पै आँखिन दोष कहा जु न दीसत।१२०।
ज्यौं बहरै न कहूँ ठहरै मन देह सो आहि विदेह को लेखौ।
देखत जो दुखियाँ अखियाँ नित वैरियौ की सुपने सु न देखौ॥
हौ तौ सुजान महा घनआनँद पै पहिचानि कि राखो तु रेखौ।
हाय दई यह कौन भई गति प्रीति मिटेहूँ मिटै न परेखौ॥१२१॥

कवित्त

ह्वै है कौन घरी भाग भरी पुन्य पुंज फरी
खरी अभिलाषनि सुजान पिय भेटिहौं।
अमी ऐन आनन कौ पान प्यासे नैननि सों
चैननि हीं करिकै वियोग ताप मेटिहौं॥

गाढ़े भुजदंडनि के बीच उर मंडन कों
धारि घनआनँद यों सुखनि समेटिहौं ।
मथत मनोज सदा मो मन पै हैहूँ कब
प्रानपति पास पाय तासु मद फेटिहौं ॥१२२॥

सोए बहुतेरौ मेरौ सोचहूँ निबेरौ हेरौ
हौं न जानौं कबधों उनींदे भाग जगेगे ।
पीर भरे लोचन अधीर हौं न जानत जू
कौन घरी रूप कै रसोत जगमगेगे ॥
अंग अंग तुम्हें कौलों दहैगो अनंग कहूँ
रंग भरी देह जानि प्यारे संग खगेगे ।
चलौ प्रान पलो परे दूरि यौं कलमलौ क्यों
बिना घनआनँद कितेक दुख दगेगे ॥१२३॥

सवैया

दृग नीर सों दीठिहिं देहुँ बहाय पै वा मुख कौ अभिलाषि रही ।
रसना विस बोरि गिराहि गसौं वह नाम सुधानिधि भाषि रही ॥
घन आनँद जान सुबैननि त्यों रचि कान बचे रुचि साखि रही ।
निज जीवन पाय पलैं कबहूँ पिय कारन यों जिय राखि रही ॥१२४॥

कवित्त

तुम दीनी पीठि दीठि कीनी सनमुख याने
तुम पैंड़ परे राखि रह्यो यह प्रान कों ।

तुम बसौ न्यारे यह नेकहूँ न हातो होय
तुम दुखदाई यह करै सुख दान कों ॥
सुनौ घनआनँद सुजान हौ अमोही तुम
याको महा मोह मों विना न जानै आन कों ।
और सबै सहौं कछू कहौं न कहा है बस
तुम्हैं बदौं तोपै जो बरजि राखौ ध्यान कों ॥१२५॥
बिरह तपत आछे आँसुन सों न्हाय चोवा
पाइनि पखारि सीस धारि छिन छूजिए ।
चूमि चूमि चोपनि लगाय लालसानि भाल
मंजन कपोलनि कै प्राननि लै पूजिए ॥
एहो घनआनँद सुजान रावरे जू सुनौ
रावरी सौं और हिएँ मनसा न दूजिए ।
निरमोही महा हौ पै मयाहू बिचारि वारि
हाहा नेकु नैननि अतीत किन हूजिए ॥१२६॥
चोरयो चित चोपनि चितौनि मैं चिन्हारी करि
चाह सी जनाय हाय मोहि कै मनौं लियो ।
भोरी भोरी बातनि सुनाय जान भोरे प्रान
फाँसी तें सरस हाँसी फंद छंद सों दियो ॥
छलनि छबीले आय छाय घनआनँद यों
उघरे बिसासी अंत निरदै महा हियो ।
वारी मति हारी गति कहाँ जाहिं नाहिं ठौर
मानत परेखौ देखौ हितू ह्वै कहा कियो ॥१२७॥

सवैया

अँसुवानि तिहारे वियोगही सों वरषा रितु बेल सी बाल भई।
हिय पोषनि चोपनि कोंपनि झालरि लाज कै ऊपर छाय गई॥
घनआनँद जान सदा हित भूमनि घूमनि देखिए नित्त नई।
चलि नेकु मया करि हेरौ हहा अबला किधौं फूलि रही तुरई॥१२८॥

घनआनँद मीत सुजान हहा सुनिए बिनती कर जोरि करैं।
अरसाहु न नेक रिसाहु अहो धरि ध्यानहि दूरि सो पाय परैं॥
मन भायो वियोग मैं जारिबो ज्यो तौ तिहारी सौं नीकें जरैं ऽरु मरैं।
पै तुम्हैं मत कोऊ कहौ हितहीन सु या दुख बीच अमीच मरैं॥१२९॥

हम एक तिहारियै टेक गहैं तुम छैल अनेकनि सों सरसौ।
हम नाम अधार जिवावत ज्यो तुम दै बिसवास बिसै बरसौ॥
घनआनँद मीत सुजान सुनौ तब गौं गहि क्यों अब यों अरसौ।
तकि नेकु दई त्यों दया ढिग ह्वै सु कहूँ किन दूरहूँ तें दरसौ॥१३०॥

पर काजहि देह को धारि फिरौ परजन्य जथारथ ह्वै दरसौ।
निधि-नीर सुधा की समान करौ सबही बिधि सज्जनता सरसौ॥
घनआनँद जीवनदायक हौ कछू मेरियौ पीर हिएँ परसौ।
कबहूँ वा बिसासी सुजान के आंगन मो अँसुवानिहिं लै बरसौ १३१

मानस को बन है जग पै बिन मानस के बन सो दरसै सो।
जे बन मानस ते सरसै तिन सों मिलि मानस क्यों सरसै हो॥
छाय दई हरि नेकु इतै सु किनै परसै जिहि ज्यों तरसै जो।
चातक प्रान जिवाय दै ज्यान हहा घनआनँद को बरसै जो॥१३२॥

घात सुजाननि की घनआनँद डारति हाय अचेत किएँ चित ।
काननि वेधति पैठि कै प्राननि दीसै नई अकुलानि नितै नित ॥
क्यों भरियै करियै सु कहा हमैं आनि बनी इन लोगनि सो इत ।
भीरमें हाय अकेलैं अधीर हैं रीझहि लै रिझवार गए कित॥१३३॥

कवित्त

महा अनमिलन मिलेई मिलौ जब मिलौ
ऐसे अनमिल कै मिलाए हौ हमैं दई ।
हमें तौ मिलौ जो कहूँ आपहू सो मिले होहु
मिलौ तो कहा जू ये मिलाप रीति है नई ॥
इते पै सुजान घनआनँद मिलौ न हाय
कौन सी अमिलता की लागी जिय में जई ।
तुमहूँ तें अधिक अमिल मन हमैं मिल्यो
तऊ मिल्यो चाहै दाहै जऊ ज़रियौ गई ॥१३४॥

सवैया

कान्ह परे बहुतायत में इकलैन की वेदन जानौ कहा तुम ।
हौ मनमोहन मोहे कहूँ न बिथा बिमनैन की मानौ कहा तुम ॥
बौरो बियोगिनि आय *सुजान ह्वै हाय कछू उर आनौ कहा तुम ।
आरतिवन्त पपीहन कों घनआनँद जू पहिचानौ कहा तुम ॥१३५॥
यह नेह तिहारो अनोखो लग्यो जू परयो चित रूखो सबै तन ही ।
बिसरै छिन जो सुकरै सुधि तो गुन माल बिसाल गनै गन ही ॥

---

* इसका पाठ यों भी मिलता है—"बैरे बियोगिनि आप" ।

हित चातिक प्रान सजीवन जान रचे बिधि आनँद के घन ही ।
दरसौ परसौ बरसौ सरसौ मन लैहू गए पै बसौ मनही ॥१३६॥
सावन आवन हेरि सखी मनभावन आवन चोप बिसेखी ।
छाए कहूँ घनआनँद जान सम्हारि की ठौर लै भूल न लेखी ॥
बूँदें लगै सब अंग दगै उलटी गति आपने पापनि पेखी ।
पौन सों जागत आगि सुनी ही पै पानी सों लागत आँखिनि देखी १३७
हमसों हित कै कित कों हितहीं चित बीच बियोगहिं बोय चले ।
सु अखैवट बीज लों फैलि परयो बनमाली कहाँ धों समोय चले ॥
घनआनँद छाए बितान तन्यो हमें ताप के आतप खोय चले ।
कबहूँ तिहि मूल तौ बैठिए आय सुजान ज्यों हाय कै रोय चले १३८
चितवें जिहि भाँति सकौं सहि क्यों रहि क्योंहूँ सकै नहिं तात हियो
सु न जानति जीवति कौनि सी आस बिसास में प्रेम को नेम लियो ॥
घनआनँद कैसे सुजान हौ जू जेहिं सूखन सौं चिति छाहँ छियो ।
करी बावरी रावरी बोलनि हौं कहि प्यारी बनाय के प्यार कियो १३९

कवित्त

जाहि जीव चाहै सो तहाँ पै ताहि दाहै
वाहि ढूँढत हीं मेरी गति मति गई खोय है ।
करों कित दौर और रहौं तौ लहौं न ठौर
घर कों उजारि कैं बसत बन जोय है ॥
बनी आनि ऐसी घन आनँद अनैसी दसा
जीऔ जान प्यारे बिन जागें गयो सोय है ।

जगत हँसत यों जियत मोहि ता तें नैन
मेरो दुख देखि रोवो फिरि कौन रोयहै ॥१४०॥

सवैया

घनआनँद जीवन रूप सुजान हौ प्रान पपीहा-पनैई पढ़ै।
पै दुहूँ दिस चाहि अचंभो महा करिए कहा सोच प्रवाह बढ़ै॥
न कहूँ दरसौ बरसौ। विस बारि सु ये अपराध गढ़ें न कढ़ै।
कित कौ नितही इत याहि दहौ जु रहौ चित ऊपर चोप चढ़ै॥१४१॥
जिनकों नित नीकें निहारत हीं तिनकों अँखियाँ अब रोवति हैं।
पल पाँवड़े पायनि चायनि सों अँसुवानि के धारनि धोवति हैं॥
घनआनँद जान सजीवन कौं सपने बिन पायेई खोवति हैं।
न खुली मुँदी जानि परैं कछु ये दुखहाई जगे पर सोवति हैं॥१४२॥
पहिलें पहिचानि जु मानि लई अब तो सु भई दुख मूल महा।
इतकै हित वैर लियो उत ह्वै करि ज्यों हरिव्योहरिलोभ महा॥
घनआनँद मीत सुनौ अरु उत्तर दूर तें देहु न देहु हहा।
तुम्हैं पाय अजू हम खोयो सबै हमैं खोय कहौ तुम पायो कहा॥१४३॥
सुधि होती सुजान सनेह की जो तो कहा सुधि यों बिसरावते जू।
छिन जाते न बाहर जौ छल छूट कहूँ हिय भीतर आवते जू॥
घनआनँद जान न दोस तुम्हें गुन भावते जो गुन गावते जू।
कहिए सु कहा अब मौन भली नहीं खोवते जो हमैं पावते जू॥१४४॥

कवित्त

छाया छिएँ लागति सुजागति हगनि आय
तू सदा अलग जाकी छाँहौं न दिखाति है।

रोम रोम रही भोय रोइ परौं साँस भरौं
चौंकत चकत मुरझानि अधिकाति है ॥
जान प्यारी दूरिही तें चेटक चरित कोटि
मति उपचारनि की हेरत हिराति है ।
तेरी गति चौगुनी कै सौगुनी चुरैल हूँ सों
लगी अलगी सी कछु बरनी न जाति है ॥१४५॥

सवैया

किहि ठान ठनी हौ सुजान मनौ गति जानि सकै सु अजान करयो।
इहि सोच समाय उदेगन माय विछोह तरंगनि पूरि भरयो ॥
सु सुनौ मनमोहन ताकी दसा सुधि साँचनि आँचनि बीच ररयो ।
तुम तौ निहकाम सकाम हमैं घनआनँद काम सों काम परयो ॥१४६॥

कवित्त

गति सु निहारी देखि थकनि में चली जाति.
थिर चर दसा कैसी ढकी उघरति है ।
कल न परति कहूँ कल जो परति होइ
परनि परी हौ जानि परी न परति है ॥
हाय यह पीर प्यारे कौन सुनै कासों कहौं
महौं घनआनँद क्यों अंतर अरति है ।
भूलनि तिन्हारि दोऊ है न हो हमारें तातें
बिसरनि रावरी हमें लै बिसरति है ॥१४७॥

सवैया

मो अबला तकि जान तुम्हैं बिन यों बल कै बलकै जु बलाहक।
त्यों दुख देखि हँसे चपला अरु पौनहूँ दूनो बिदेह तें दाहक॥
चंदमुखी सुनि मंद महा तम राहु भयो यह आनि अनाहक।
प्रान हरौ हर है घनआनँद लेहु न तौ अब लेहिंगे गाहक॥१४८॥

कवित्त

मूरति सिंगार की उजारी छबि आछी भाँति
दीठि लालसा के लोयननि लै लै आँजिहौं।
रति रसना सवाद पाँवड़े पुनीतकारी
पाय चूमि चूमि कै कपोलनि सों माँजिहौं॥
जान प्यारे प्रान अंग अंग रुचि रंगनि मैं
बोरि सब अंगनि अनंग दुख भाजिहौं।
कब घनआनँद ढरौंहीं बानि देखै सुधा
हेत मन घट दरकनि सु बिराजिहौं॥१४९॥

सवैया

मो बिन जो तुम्हैं और रुचो तो रुचै न तुम्हैं बिन मोहि जियो जू।
आँखिन में ढरिआई रहै सु दहै दुखिया गहि आस हियो जू॥
सूल भयो गुन जो तिहि अंग की दीप सों बारि बियोग दियो जू।
हाय सुजान सनेही कहाय क्यों मोह जनाय कै द्रोह कियो जू॥१५०॥
हाय सनेही सनेह सों रूखे रुखाई सों ह्वै चिकने अति सो है।
आपुनपो अरु आपहु तें करि हाते हतौ घनआनँद को है॥

कौन घरी बिछुरे हौ सुजान जू एक घरी मन तें न बिछोहौ।
मोह की बात तिहारी असूझ पै मो हिय को तो अमो। हियौ मोहौ।।१५१।
जा हित मात को नाम जसोदा सुबंस को चंदकला कुलधारी।
सोभा समूह भई घनआनँद मूरति रंग अनंग जिवारी।।
जान महा सहजै रिझवार उदार विलास में रासबिहारी।
मेरो मनोरथ हू वहिए अरु हैं मो मनोरथ पूरनकारी।।१५२।।
अंक भरों चकि चौंकि परौं कबहूँक लरौं छिनहीं में मनाऊँ।
देखि रहौं अनदेखे दहौं सुख सोच सहौं जु लहौं सुनि पाऊँ।।
जान तिहारी सौं मेरी दसा यह को समुझै अरु काहि सुनाऊँ।
यों घनआनँद रैन दिना न वितीतत जानिए कैसे बिताऊँ।।१५३।।
गई सुधि अंग भई मति पंगु नई कछु बात जतावति हौ न।
दुराव किएँ कहा होत सखी रँग औरै भयो ढँग उत्तर कौ न।।
हिए धरकौ तन स्वेद जग्यो अरु ऐसी जँभानि की बानि हुतौ न।
बढ़ाइहै वेदनि साँच कहौ घनआनँद जान चढ़े चित जौ न।।१५४।।

कवित्त

कहाँ जो सँदेसो ताको बड़ोई अँदेसो आहि
तन मन वारे की कहैब को सुनै सुकौन।
निधरक जान अलबेले निपरक ओर
दुखिया कहैब कहा तहा की उचित हौ न।।
पर दुखदल के दलन को प्रभंजन हौ
डरकौहैं देखि कै विवस चकि परी मौन।

इत की भसम दसा लै दिखाय सकत जू
लालन सुबास सो मिलायहू सकत पौन ।।१५५।।

सवैया

मुख नेह रुखाई दिखाई मरौं इत की तो चिन्हारि रही न उतै ।
रचि कौन से घाट लियो है हियो बिन हेरें न जीव विचार गुनै ।।
घनआनँद ऐसी दसानि घिरयो दुखिया जिय सोचनि सीस धुनै ।
अब कैसी भई उन जान हई दई कूक करौं पै न कोऊ सुनै।।१५६।।

कवित्त

अंतर मैं रहति निरंतर जगी सुजान
तहाँ तुम कैसे सोइबे को घर कै रहे ।
गुपत लपट जाकी तन ही प्रगट करै
जतननि बाढ़ै गुर लोग अरि कै रहे ।।
सीरी परि जात रोम रोम घनआनँद हो
और याके कोटिक विकार भरि कै रहे ।
बारिद सहाय सों दवागिनि दवति देखो
बिरह दवागिनि तैं नैना झरि कै रहे ।।१५७।।

सवैया

जान छबीले कहो तुमहीं जो न दीसौ तो आँखिनि काहि दिखाऊँ ।
कौन सुधाई सनी बतियानि बिना इन काननि लै कहा प्याऊँ ।।
हाय मरयो मन पीर तैं प्रीतम या दुखियाहि कहाँ परचाऊँ ।
चाहत जीव धरयो घनआनँद रावरी सौं कहूँ ठौर न पाऊँ।।१५८।।

निस द्यौस उदास उसास धकौं न सकौं तजि आस बिसास जकी ।
घनआनँद मीत सुजान बिना अँखियान कों सूझत एक टकी ॥
इत की गति कौन कहै को सुनै मनहीं मन मैं यह पीर पकी ।
भरिए केहि भाँति कहा करिए अब गैल सँदेसनहू की थकी॥१५६॥

प्यारे सुजान के पानि को मंडन खंडन वैद अखंड कला को ।
ज्यों तरस्यो जवहीं दरस्यो वरस्यो घनआनँद हेत झला को ॥
सूछम सौं पै भरो अतुलै सुख रंग बिभौ जुग नैन पला को ।
प्रीतम लों हिय राखन हाथ विछोह में ज्यावत मोह छला को॥१६०॥

घूमत सीस लगै कब पायनि चायनि चित्त मैं चाह घनेरी ।
आँखिन प्रान रहे करि थान सुजान सुमूरति माँगत नेरी ॥
रोमहि रोम परी घनआनँद काम की रोर न जाति निबेरी ।
भूलनि जीतति,आपुनपौ वलि भूलै नहीं सुधि लेहु सवेरी ॥१६१॥

ललचौंहीं लगौंहीं भई तुम सोंहीं इतै अँखियाँ सुख साध भरीं ।
उत आप निकाई निधान सुजान ये बावरी ह्वै अरराय परीं ॥
घनआनँद जीवन प्रान सुनौ बिछुरैं मिलैं गाढ़ जँजीर जरीं ।
इनकी गति देखन जोग भई जु न देखन मैं तुम्हैं देखि अरीं॥१६२॥

कवित्त

सुरति करों तौ बिसरे जो होहि जान प्यारे
वे तौ चित चढ़े रंग मूरति महा रहैं ।
सुधि करैं वेई सुधिहू की ऐसी भूलि जाइ
वे सुधि किए से सुधि माँझ या प्रकार हैं ॥

गूढ़ गति धारिबे की भूलियै सुरति मोहिं
राति द्यौस छाए घनआनँद घटा रहैं।
सुधि कबहूँ न आवै भूलेऊ तनक नाहिं
सुधि तिनहीं में तेई सुधि में सदा रहैं ॥१६३॥

सवैया

जब तें तुम आवन आस दई तब तें तरफौं कब आयहौ जू।
मन आतुरता मनही मैं लखौ मनभावन जान सुभाय हौ जू॥
विधि के दिन लौं छिन बाढ़ि परे यह जानि वियोग वितायहौ जू।
सरसौ घनआनँद वा रस कों जु रसा रस सो वरसायहौ जू॥१६४॥

अभिलाखनि लाखनि भाँति भरीं वरुनीन रुमांच ह्वै काँपति हैं।
घनआनँद जान सुधाधर मूरति चाहनि अंक मैं चाँपति हैं॥
टक लाय रहीं पल पाँवड़े कै सु चकोर की चोपहि झाँपति हैं।
जब तें तुम आवन औधि बदी तब तें अँखियाँ मग माँपति हैं॥१६५॥

मग हेरत दीठि हिराय गई जब तें तुम आवन औधि बदी।
बरसौ कितहूँ घनआनँद प्यारे पै बाढ़ति है इत सोच नदी॥
हियरा अति औटि उदेग की आँचनि च्वावत आँसुन मैन मदी।
कब आयहौ औसर जान सुजान बहीर*लौं बैस तौ जाति लदी।१६६।

तुमही गति हौ तुमही मति हौ तुमही पति हौ अति दीनन की।
नित प्रीति करौ गुन-हीननि सों यह रीति सुजान प्रवीनन की॥
बरसौ घनआनँद जीवन कों सरसौ सुधि चातक छीनन की।
मृदु तौ चित के पन पै इत के निधि हौ हित के रुचि मीनन की।१६७।

---

* बहीर = फौजी असबाब।

अति दीनन की गति हीनन की प्रति लीननि की रति के मन हौ।
सबही विधि जान करौ सुख दान जिवावत प्रान कृपातन हौ ॥
घनआनँद चातक पुंजनि पोखन तोषन रंक महा धन हौ।
जन सोच बिमोचन सुंदर लोचन पूरन काम भरे पन हौ ॥१६८॥

अनंगशेखर

सदा कृपानिधान हौ कहा कहौं सुजान हौ
अमानि-दान मान हौ समान काहि दीजिए।
रसाल सिंधु प्रीति के भरे खरे प्रतीति के
निकेत नीति रीति के सुदृष्टि देखि जीजिए॥
टगी लगी तिहारियै सु आप त्यों निहारियै
समीप ह्वै बिहारियै उमंग रंग भीजिए।
पयोद मोद छाइए विनोद को बढ़ाइए
विलंब छाड़ि आइए किधौं बुलाय लीजिए ॥१६९॥

सवैया

चंटक रूप रसीले सुजान दई बहुतैं दिन नैक दिखाई।
कौंध मैं चौंध भरे चख हाय कहा कहौं हेरनि ऐसैं हिराई॥
बातैं बिलाय गई रसना पैं हियो उमगौ कहि एकौ न आई।
साँच कि संभ्रम हौ घनआनँद सोचनि ही मति जाति समाई॥१७०॥

कवित्त

जीवनि जिवाय नीकें जानत सुजान प्यारे
याही गुन नामहि जथारथ करत हौ।

चिरजीजै दीजै सुख कीजै मन भायो मेरी
मेरी अभिलाखन की निधि को धरत है ।।
चाह वेली सफल करन घनआनँद यों
रस दै दै उर आलबालहि भरत है ।
प्यारे सौंध कौहीं ढरकौंहीं मृदुबानि बस
विवस ह्वै आपही तैं मोपर ढरत है ।।१७१।।

सवैया

सुख चाहन कों चित चाहत है चख चाहनि ठौरहि पावति ना।
अभिलाखनि लाखनि भाँति भरे हियरा मधि सास सुहावति ना।।
घनआनँद जान तुम्हैं विन यों गति पंगु भई मति धावति ना ।
सुधि दैन कही सुधि लैन चही सुधि पाए विना सुधि आवति ना१७२

कवित्त

रसिक रसीले हौ लचीले गुन गरबीले
रंगनि ढरीले हौ छकीले मद मोह तें ।
जीवन वरस घनआनँद दरस आछौ
सरस परस सुख सींच्यो हँसि जोह तें ।।
अचिरज निधि हौं तिहारी सब विधि प्यारे
कृपा होति फलति ललित लता छोह तें ।
मिलन तै ज्योंही बिछुरन करि डार्‌यो वारी
त्योंही किन कीजै हा हा मिलन विछोह तें।।१७३।।

घनआनँद मीत सुजान सुनौ कहूँ ऊपिल से कहू हेत हिलौ।
हम और कछू नहिं चाहति हैं छनको किन मानसरूप मिलौ१८१॥
हिय की गति जानन जोग सुजान हौ कौन सी बात जु आहि दुरी।
पटक्योई परे हिय अंकुर आसलौ ऐसी कछू रस रीति घुरी॥
बिछुरे कित सौति मिलेंहूँ न होति छिदी छतियाँ अकुलानि छुरी।
तुमही तिहिं साधि सुनौ घनआनँद प्यार निगोड़े की पीर बुरी।१८२।
नाहिं पुकार करै सुनि आहि न को कित है कहि दोस लगैयै।
संग भए बिछुरे मरिए यहि भाँतिनि क्यों जियराहि जरैयै॥
ओटनि चोटनि चूर भयो चित सो बिन हो किन बाहिर ऐयै।
ह्वै घनआनँद मीत सुजान कहा अब हेत सुखेत सुखैयै॥१८३॥
आवतही मन जान सजीवन ऐसो गयो जु करी नहिं लोटनि।
द्यौस कछू न सुहाय सखी अरु रैन बिहाय न हाय करोटनि॥
अंग भए पियरे पट लों मुरझै बिन ढंग अनंग सरोटनि।
हौ सुचतै घनआनँद पै हमैं मारत है बिरहागिनि ओटनि॥१८४॥
कैसे करौं गुन रूप बखान सुजान छबीले भरे हिय हेत हौ।
औसर आस लगे रहैं प्रान कहा बस जो सुधि भूलि न लेत हौ॥
चेटक हौ सब भाँतिन जू घनआनँद पीवत चातक चेत हौ।
रावरी रीझि न बूझि परै तन कौ मिलि क्यों बहुतै दुख देत हौ।१८५।
जान हौ एजू जनाहुँ कहा न गए कितहूँ जू कहौं इत आयहौ।
दोसौ दुरे उर दाहत क्यों उर तें कढ़ि यों उर में कब छायहौ॥
मोसों बिछोह कै मोहि मया करि मो मधि रावरे सूधे सुभायहौ।
ऐसी बियोग दवागिनि कों घनआनँद आय सँजोग सिरायहौ॥१८६॥

आननि प्रान हौ प्यारे सुजान हौ बोलो इतेहू पर कहौ क्यों ।
चेटक चाव दुरौ उघरौ पुनि हाथ लगे रहौ न्यारे गहौ क्यों ॥
मोहन रूप सरूप पयोद सों सींचहु जो दुख दाह दहौ क्यों ।
नाव धरे जग में घनआनँद नाव सम्हारो तो नाव सहौ क्यों ॥१८७॥

कवित्त

वेई कुंज पुंज जिन तरें तन बाढ़तु हौ
तिन छाहँ आएँ अब गहन सो गहिगो ।
सरित सुजान चैन बीचिन सों सींचो जिन
वही जमुना पैं हेली वह पानी वहिगो ॥
वहे सुख श्रम स्वेद समै को सहाय पौन
नाहिं छियैं देह दैया महा दुख दहिगो ।
वेई घनआनँद जू जीवन को देते तिनही
को नाम मारिनि के मारिवे को रहिगो ॥१८८॥
इते अनदेखे देखिवेई जोग दसा भई
तेतो अनाकानी ही सों बाँध्यो डीठ तार है ।
जान घनआनँद विनाई सु बनक हेरें
धीरज हिरात सोच सूखत विचार है ॥
छीन अति दीनन कों मोहन अमोही रच्यो
महा निरदई हमैं मिल्यो करतार है ।
तेरें बहरावनि रुई है कान बीच हाय
विरही बिचारिनि की मौन मैं पुकार है ॥१८९॥

सवैया

मोहि निहोरिहै तू जु घरीक मैं मेरो निहोरिबोई किन मानति ।
जासो नहीं ठहरै ठिक मान कौ क्यों हठ कै सब रूठनो ठानति ॥
कैसी अजान भई है सुजान हे मित्र के प्रेम चरित्र न जानति ।
सो मुरली घनआनँद की नित तान भरी कित भौंहनि तानति॥१९०॥
कहैा कछु और करौ कछु और गहैा कछु और लखावत औरै ।
मिलौं सब रंगनहूँ नहिं संग तिहारी तरंग तकें मति बौरै ॥
गहौ बतियानि मढ़ौ घतियानि डढौ छतिआनि निदान की ठौरै ।
महाछल छाय खुले हौ बनाय किते घनआनँद चातक दौरै॥१९१।
ब्रजनाथ कहाय अनाथ करी कित है हित रीति में भांति नई ।
न परेखो कछू पै रह्यो न परै ठकुराइनि प्रीति अनीतिमई ॥
घनआनँद जानहि को सिखवै सुखई रस सींचि जु बेली वई ।
सुधि भूल सबै हिय सूल सलै हमसों हरि ऐसे भए ए दई ॥१९२॥

कवित्त

बासर बसंत के अनंत ह्वै कै अंत लेत
ऐसे दिन पारै जु निहारै जिय राति है ।
लतनि की फूलनि तमालनि की झूलनि कौ
हेरि हेरि नई नई भाँति पियराति है ॥
प्यारे घनआनँद सुजान सुनौ बाल दसा
चंदन पवन तें पजरि सियराति है ।
औसर मम्हारो न तौ अनआइबे के संग
दूरि देस जाइबो कों प्यारी नियराति है ॥१९३॥

दोहा

गोरी तेरे सरस दृग किधों स्याम घन आप।
दावानल सों पान ये करत बिरह संताप ॥ १८४ ॥

सवैया

घनआनँद रूप सुजान सनेही पै आपुही आपुन त्यों वरसौ।
इत मो मधि मेरिए रीति रचौ उत वाहि निवाहिनि सों सरसौ ॥
रसनायक माइक लाइक हौ कितहूँ झर लाय कहूँ तरसौ।
अब हौं जु कहौं सु तौ दूसरे का तुमही सब रंग मिलै दरसौ ॥१८५॥
इक तौ जग माँझ सनेही कहाँ पै कहूँ जो मिलाप की वास खिलै।
तिहि देखि सकै न बड़ा विधि कूर वियोग समाजहि साज पिलै ॥
घनआनँद प्यारे सुजान सुनौ न मिलौ तो कहौ मन काहि मिलै।
अमिले रहिवो लै मिले तौ कहा यह पीर मिलाप में धीर गिलै।१८६॥
मनमोहन तौ अनमोह करौ यह मोहित होत फिरै सु कहा।
अरु जौ अपटार टरै न टरै गुन त्यों तकि लागत दोष महा ॥
घनआनँद मीत सुजान सुनौ चित दै इतनी हित बात इहा।
जिय जाचक ह्वै जस देत वड़ो जिन देहु कछू किन लेहु लहा॥१८७॥
अंतर हौ किधो अंत रहौ दृग फारि फिरौं कि अभागनि भीरौं।
आगि जरौं अकि पानि परौं अब कैसी करौं हिय का विधि धीरौं॥
जो घनआनँद ऐसी रुची तौ कहा बस है अहा प्राननि पीरौं।
पाऊँ कहाँ हरि हाय तुम्हैं धरनी में धँसौं कै अकाशहिं चीरौं॥१८८॥
मनमोहन नाँव रहै सो करौ पन की पटि है वह जो चटि (?) है।
वहु औरनि लै भटकावत यों अटकावत क्यों न कहा घटि है ॥

घनआनँद मीत सुजान सुनौ अपनी अपनी दिस को हटि है।
तुमहीं तन पोरि लगाइहै जू दृग मोरि कै जो हम त्यों डटि है ॥१९९॥

हमसों पिय साँचियै बात कहौ मन ज्यों मन त्यों अरु नाहिं कहूँ।
कपटी निपटै हिय दाहत हौ निरदै जु दई डरु नाहिं कहूँ॥
सबही रँग मैं घनआनँद पै बस बात परे थरु नाहिं कहूँ।
उघरौ बरसौ सरसौ दरसौ सब ठौर बसौ घरु नाहिं कहूँ॥२००॥

कवित्त

कौन कौन अंगनि के रंगनि मैं राँचै मन
मोहन हो सोई सुख दुख पुनि ल्यावई।
भौन माहिं बात है समुझि कहि जानै जान
अमी काहू भाँति को अचंभै भरि प्यावई॥
सोवनि जगनि याकी मूरछा सचेत सदा
रीझि घनआनँद निबेरै याहि न्यावई।
कहै कोऽब मानै पहिचानै कान नैन जाके
बात की भिदनि मोहि मारि मारि ज्यावई॥२०१॥

सवैया

आंखिन मूँदिबो बात दिखावतु सोवनि जागनि बातहि पेखि लै।
बान सरूप अनूप अरूप है भूल्यो कहा तू अलेखहिं लेखि लै॥
बान की बात सुबात बिचारिबो है छमता सब ठौर बिसेपि लै।
नैननि काननि बींचि बसै घनआनँद मौन बखान सुदेखि लै।२०२।

कवित्त

सुधि करें भूल की सुरति जब आय जाय
तब सब सुधि भूलि कूकौं गहि मौन कों।
जातें सुधि भूलै सो कृपा तें पाइयत प्यारे
फूलि फूलि भूलौं या भरोसें सुधि हौन कों॥
मेरो सुधि भूलहि विचारिए सुरतिनाथ
चातक उमाहै घनआनँद अचैन कों।
ऐसी भूलहू सों सुधि रावरी न भूलै क्यों हूँ
ताहि जो बिसारौं तो सम्हारौं फिरि कौन कों॥२०३॥

सवैया

जगि सोवनि मैं जगियै रहै चाह बहै बरराय उठै रतिया।
भरि अंक निसंक ह्वै भेंटन कों अभिलाख अनेक भरी छतिया॥
मन तें मुख लों नित फेर बड़ो कित ब्योर सकौं हित की बतिया।
घनआनँद जीवन प्रान लखौं सु लिखो किहि भाँति परै पतिया॥२०४॥
प्रेम की पीर अधीर करै हिय रोवनि कों दृग आँसुनि ढारत।
चाहनि चोप उमाह उमंग पुकारहिं यों नित प्रान पुकारत॥
हौ घनआनँद छाय रहे कित यों असम्हारहि नाहिं सम्हारत।
एजू सुजान जनाऊँ कहा बिन आरति हौ अति या विधि आरत।२०५।
हम आपनो सो बहुतेरो करैं कि बचैं अवलोकनै एकौ घरी।
न रहै बसु नैसिक तान भिदै छिदै कान ह्वै प्रान सुतीखी खरी॥
घनआनँद बौरति दौरति टौरति टूठ यों पैयत लाजन री।
कित जाहिं कहा करैं कैसैं भरैं यह कान्ह की बाँसुरी बैर परी॥२०६॥

रस रंग भरी मृदु बोलनि को कब कानिनि पान करायहौ जू।
गति हंस प्रसंसित सों कबधौं सुख लै अँखियानि मैं आयहौ जू॥
अभिलाखनि पूरति ह्वै उफन्यो मन ते मनमोहन पायहौ जू।
चित चातक के घनआनँद हौ रटना पर रीझनि छायहौ जू॥२०७॥
पलकौ कलपै कलपौ पलकै सम होत सँजोग बियोग दुहूँ।
बिपरीति भरी हित रीति खरी समझी न परै समझै कछु हूँ॥
घनआनँद जानत जीवन सों कहिए तो समै लहिए न सुहूँ।
तिन हेरे अँधेरोई दीसै सबै बिन सूझ तें पून्यो अबूझ कुहूँ।२०८।
तीछन ईछन बान बखान सो पैनी दसाहि लै सान चढ़ावत।
प्रानन प्यारे भरे अति पानिप माइल घाइल चोप चटावत॥
यों घनआनँद छावत भावत जान सजीवन ओर तें आवत।
लोग हैं लागि कवित्त बनावत मोहि तो मेरे कबित्त बनावत।२०९॥
चलि आई सदा रस रीति यहै किधौं मो निरमोही को मोह नयो।
घनआनँद प्रान हरै हँसि जान न जानि परै उघरो छनयो॥
चित चाह निबाह की बात रहौ हित कै नित ही दुख दाह दयो।
उर आस बिसास न त्रास तजै बसि एक ही बास बिदेस भयो।२१०।

कवित्त

मोर चंद्रिका सी सब देखन कों धरे रहैं
सूछम अगाध रूप साध उर आनहीं।
जाहि सूझति न हू सो देख भूली ऐसी दसा
ताहि ते बिचारे जड़ कैसे पहिचानहीं॥

जान प्रानप्यारे के विलोकें अविलोकिबे कों
हरष विखाद स्वाद वाद अनुमानहीं ।
चाह मीठी पीर जिन्हें उठति अनंदघन
तेई आखैं साखैं और पाखैं कहा जानहीं ॥२११॥

भूलनि करी है सुधि जान ह्वै अजान भए
खुलि मिले कपट सों निपट रसाल हौ ।
त्यागहि आदर दीन्यो मन सनमाल कीन्यौ
अनुचित चित धारि उचित लहा लहौ ॥
जहाँ जब जैसे तहीं तैसे नीके रहौ अजू
सब विधि प्रानप्यारे हित आलवाल हौ ।
मन तुम मोह्यो ताहि नैकु राखे रहिए जू
एहौ घनआनँद जू गरें गुन माल हौ ॥२१२॥

सवैया

जो उहि ओर घटा घनघोर सों चातक मोर उछाहनि फूलते ।
त्यों घनआनँद औसर साजि सँजोगिन झुंड हिंडोरनि झूलते ॥
ग्रीषम तें हतई जु लता द्रुम अंकनि लागतीं ह्वै रस मूल ते ।
तौ सजनी जियज्यावन जान सु क्यों इतकी हित की सुधि भूलते।२१३।

कवित्त

उठे बड़े भोर चैन चोर लाह साह दोऊ
मति गति ठगे न सकत चलि गेह कों ।
छाई पियराई और बिथा हियराई जानै
जके थके बैन नैन निदरत मेह कों ॥

दुसह दसाहि देखैं समै बिसमय होत
खग मृग द्रुम बेली बिसरत देह कों।
जान घनआनँद अनोखो अनियारो नेह
दुहूँ दिसि बिषम रच्यो विरंच चेह कों ॥२१४॥

सवैया

आन लई न कछू सुधि हाय गए करि बैरी बियोगहि सौंपनि।
जाय भुलाय रहे तितहीं जित चाउ भई हैं नई नित चौंपनि॥
नाहर आइ बसंत भयो नख केसु रतौहें कियो हिय कौंपनि।
क्यों घनआनँद यों बचियै जिय जातु बिध्यो अनियारियै कौंपनि।२१५।

कवित्त

आरसी उसास ज्यों तुसार ताम रस त्योंहीं
आतप के ताप रंग ढंग नवनीत कों।
पावक तें पारो काँजी छिए हूँ विचारो छीर
तेंरुनी (?) तैं सुचि जैसे लेखौ कफ गीत कों॥
ऐसे घनआनँद विचार वारपार नाहिं
जाने एक जीव जान प्रीतम पुनीत कों।
सूछम महा है ताकी तौल को कहा है
राखि जानिवो लहा है यों दुहेलो मन मीत कों।२१६।

सवैया

वात के देस तें दूरि परे नियरे सियरे हियरे दुख दाहै।
चित्र की आँखनि लीनी विचित्र महा रस रूप सवाद सराहै॥

नेह कथै सब नीर मथै हट कै कठ प्रेम को नेम निबाहै।
क्यों घनआनँद भीजे सुजाननि यों अमिले मिलिबो फिर चाहै।२१७।
प्यारे सुजान को प्रान पियारे बस्यो जब कान सनेसौ सुहायो।
कोटि सुधाहू के सार को सोधिकैं पान किए तें महासुख पायो॥
जीव जिवावन ताप सिरावन हैं रस में घनआनद छायो।
ये गुनि क्यों न रचै सजनी उनि रंग रचे अधरानि रचायो॥२१८॥
आँखिन आनि रहे लगि आस कि बेस बिलास निहारियैं हूँगे।
कानन बीच बसैं भरि प्यास अमी निधि बैननि पारियै हूँगे॥
यों घनआनँद ठौरहीं ठौर सम्हारत हैं सु सम्हारियै हूँगे।
प्रान परे उरझैं मुरझैं कि कहूँ कबहूँ हम वारियै हूँगे॥२१९॥
रूप सुधारस प्यास भरी नितहीं अँसुवा ढरिबोई करैंगी।
पीवन साध असाध भईं इहि जीवन को मरिबोई करैंगी॥
हाय महादुख है सुख दैन विचारो हिए भरिबोई करैंगी।
क्यों घनआनँद मीत सुजान कहा अँखियाँ बरिबोई करैंगी॥२२०॥
तुम्हें प्रान लगे तुम प्रानन हूँ मनमोहन सोहन मानिएजू।
निठुराई सों कौलों निबाहिएगो कबहूँ तो दया उर आनिएजू॥
दरसे तें कहौ हो कहा घटिहै घनआनँद चातक दानियै जू।
बरसौ सरसो अरसो न दई जग-जीवन हौ जग जानियै जू।२२१॥
रस आरस भोय उठी कछु सोय लगी लसै पीक पगी पलकैं।
घनआनँद ओप बढ़ो मुखं औरै सुफैलि भईं सुथरी अलकैं॥
अँगरात जँभात लसैं सब अंग अनंगहि अंग दिपैं झलकैं।
अधरानि मैं आधिय बात धरैं लड़कानि की आनि परैं छलकैं॥२२२॥

वंक विसाल रँगीले रसाल छवीले कटाच्छ कलानि मैं पंडित ।
साँवल सेत निकाई निकेत हियै हरि लेत हैं आरस मंडित ।।
वेधि के प्रान करै फिरि दान सुजान खरे भरे नेह अखंडित ।
आनँद आसव घूमरे नैन मनोज के चोजनि चोज प्रचंडित ।।२२३।।
देखि धौं आरसी लै बलि नैकु लसी है गुराई मैं कैसी ललाई ।
मानो उदोत दिवाकर की दुति पूरन चंदहिं भेंटन आई ।।
फूलत कंज कुमोद लखैं घनआनँद रूप अनूप निकाई ।
तो मुख लाल गुलालहिं लायकै सौतिन के हिय होरी लगाई ।२२४।
रूप धरे धुनि लौं घनआनँद सूझति बूझ की डीठि सुतानौ ।
लोयन लेत लगायकै संग अनंग अचंभे की मूरति मानौ ।।
है किधौं नाहिं लगी अलगी सो लखी न परै कवि केहूँ प्रमानौ ।
तौ कटि भेदहिं किंकिनि जानति तेरी सौं एरी सुजान हौं जानौ ।२२५।
रूप के भारन होति है सौंहीं लजौहिंयै डीठि सुजान यों भूली ।
लागिए जाति न लागो कहूँ निसि पागी तहीं पलकौ गति भूली ।।
बैठियै जो हिय पैठति आजु कहा उपमा कहिए सम तूली ।
आए हौ भोर भए घनआनँद आँखिन माँझ तो साँझ सी फूली २२६

कवित्त

रति रँग राते प्रीति पागे रैन जागे नैन
आवत लगैई घूमि झूमि छवि सों छके ।
सहज विलोल परे केलि की कलोलनि मैं
कबहूँ उमगि रहे कबहूँ जके थके ।।

नीकी पलकनि पीक लीक झलकनि सोहै
रस वलकनि उनमद न कहूँ सके।
सुखद सुजान घनआनँद पोपत प्रान
अचरजि खान उघरेंहूँ लाज सों ढके ॥२२७॥

केल की कला-निधान सुन्दरि सुजान महा
आननसमान छवि छाँह पैसो छिपै सौनि(?)।
माधुरी मुदित मुख मुद्रित सुसील भाल
चंचल विसाल नैन जाल भोजियै चितौनि ॥
पिय अंग संग घनआनँद उमंग हिय
सुरति तरंग रस विवस उर मिलौनि।
झूलनि अलक आधी खुलनि पलक श्रम
स्वेदहि झलक भरि ललक सिथिल हौनि ॥२२८॥

सवैया

रति साँचे ढरी अछवाई * भरी पिंड़रीन गुराई यै पेखि पगै।
छबि घूमि घुरै न मुरै मुरवानि सों लोभो खरो रस झूमि खगै॥
घनआनँद एँडिनि आनि मिड़ै तरवानि तरें तें भरै न डगै।
मन मेरो महाउर चाइनि च्वै तुवपाइन लागि न हाथ लगै॥२२९॥

रूप चमूप सज्यो दल देखि भज्यो तजि देसहि धीर मवासी।
नैन मिलें उर के पुर पैठतै लाज लुटी न छुटी तिनका सी॥
प्रेम दुहाई फिरी घनआनँद बाधि लिए कुल नेम गुढासी।
रीझि सुजान सचीं पटरानी बची बुधि बापुरी ह्वै करि दासी।२३०।

---

* अछवाई = सुंदरता।

कवित्त

आई है दिवारी चीते काज निजि बारी प्यारो
खेलैं मिलि जूवा पैज पूरे दाव पावही ।
हारहि उतारि जीतें मीत धन पल छिन
चोप चढ़ैं बैन चैन चहल मचावहीं ॥
रंग सरसावैं बरसावैं घनआनंद
उमंग ओपे अंगनि अनंग दरसावहीं ।
हियरा जगाय जागैं पिय पाय तिय रागैं
हियरा लगाय हम जोगहि जगावहीं ॥२३१॥

वैस की निकाई सोई रितु सुखदाई तामैं
तरुनाई उलहत मदन मैमंत है ।
अंग अंग रंग भरे दल फल फूल राजैं
सौरभ सरस मधुराई को न अंत है ॥
मोहन मधुप क्यों न लट्ट ह्वै सुभाय भट्ट
प्रीति को तिलक भाल धरे भागवंत है ।
सोभित सुजान घनआनँद सुहाग सीच्यो
तेरे तन बन सदा बसत बसंत है ॥२३२॥

पल दल संपुट मैं मुँदे मन मोद मानौ
आरस विभावरी ह्वै होत भौंरहाई है ।
द्वै सरोज बीच एक बसत रसत कैसे
लसत सु ऐसे अचिरज अधिकाई है ॥

बाहिर तें रूप मकरंद पान करै पुन्य
बड़ो भूलागति हेरे मो मति हिराई है।
नयेोई रसिक घनआनँद सुजान यह
किधों प्यारी तेरे नैन सैन की निकाई है ॥२३३॥

उर गति ब्योरिवे कों सुंदर सुजान जू को
लाख लाख विधि सों मिलन अभिलाषियै।
बातैं रिस रस भीनी कसि गसि गाँस भीनी
बीनि बीनि आछी भाँति पाँति रचि राखियै ॥
भाग जागै जो कहूँ बिलोकैं घनआनँद तौ
ता छिन के छाकनि के लोचनहौं साखियै।
भूली सुधि सातौ दसा बिबस गिरत गातौ
रीझि बावरे ह्वै तब औरै कछु भाखियै ॥२३४॥

रूप गुन मद उनमद नेह तेह भरे
छल बल आतुरी चटक चातुरी पढ़े।
घूमत घुरत अरबीले न मुरत क्योंहूँ
प्रानन सों खेलैं अलबेले लाड़ के बढ़े ॥
मीन कंज खंजन कुरंग मान भंग करैं
साँचे घनआनँद खुले सकोच सों मढ़े।
पैने नैन तेरे से न हेरे मैं अनेरे कहूँ
घाती बड़े काती लिए छाती पै रहैं चढ़े ॥२३५॥

ललित उमंग बेली आलवाल अंतर तें
आनँद के घन सींची रोम रोम मैं चढ़ी।

आगम उमाह चाह छायो सु उछाह रंग
अंग अंग फूलनि दुकूलनि परै कढ़ो ॥
बोलत बधाई दौरि दौरि कै छबीले दृग
दसा सुभ सगुनौती नीके इन पै पढ़ो ।
कंचुकी तरकि मिले सरकि उरज भुज
फरकि सुजान चौंप चुहल महा बढ़ो ॥२३६॥

सवैया

तेरी निकाई निहारि छके छबिहू को अनूपम रूप ढक्यो है ।
ईठहू डीठि पै नीठि कटाछनि आय मनोज को चोज कढ़्यो है ॥
आनँद के घन राग सों पागि सुजान सुहागहि भाग बढ़्यो है ।
लाड़ ते लाड़िली होति है औरपै तातन लाड़हि लाड़ चढ़्यो है ।२३७।

कवित्त

पौढ़े घनआनँद सुजान प्यारी परजंक
धरें धन अंक तोऊ मन रंक गति है ।
भूषन उतारि अंग अंगहिं सम्हारि नाना
रुचि के बिचार सों समोय सीझी मति है ॥
ठौर ठौर लै लै राखें और और अभिलाषें
बनत न भाषें तेई जानें दसा अति है ।
मोद मद छाके घूमें रीझि भीजि रस झूमें
गहें चाहि रहें चूमें अहा कहा गति है ॥२३८॥

सवैया

अंजन त्योरहि ताक्यो करै नित पान लखै मुख त्यों रँग चाइनि ।
औरौ सिंगार सदा घनआनँद चाहैं उमाह सों आपने दाइनि ॥
तू अलवेली सरूप की रासि सुजान विराजत सादे सुभाइनि ।
ऐपर(?)नाचकै साँच छक्यो जु लटू भयो लाग्यो फिरै तुव पाइनि २३९

मिहँदी रँग पाइनि रंग लहै सुठि सोंधो सु अंगनि संग बसै ।
तरुनाई पै कोक पढ़ै सुघराई सिखावति है रसिकाई रसै ॥
घनआनँद रूप अनूप भरो हित फन्दनि मैं गुन ग्राम वसै ।
सब भाँति सुजान न आन समान कहा कहौं आप ते आप लसै ॥२४०॥

कवित्त

रूप की उझलि आछे आनन पै नई नई
तैसी तरुनई तेह ओपी अरुनई है ।
उलहि अनंग रंग की तरंग अंग अंग
भूषन वसन भरि आभा कल गई है ॥
महा रस भीर परैं लोचन अधीर तरैं
आछी वोक धरैं प्यास पीर सरसई है ।
कैसे घनआनँद सुजान प्यारी छवि कहौं
डीठि तौ चकित औ थकित मति भई है ॥२४१॥

नीकी नासा पुटही की उचनि अचंभे भरी
मुरि कै इचनि सों न क्यों हूँ मन ते मुरै ।
रूप लाड़ जोवन गरूर चोप चटक सों
अनखि अनोखी तान गावै लै मिहीं सुरै ॥

सहज हँसौहीं छवि फबति रँगीले मुख
दसननि जोति जाल मोती माल सी ररै।
सरस सुजान घनआनँद भिजावै प्रान
गरवीली ग्रीवा जब आन मान पै ढुरै ॥२४२॥

सवैया

दृग छाकत है छवि छाकतही मृगनैनी जबै मधुपान छकै।
घनआनँद भोजि हँसै सु लसै झुकि झूमति घूमति चौंकि चकै॥
पल खोलि ढकै लगि जात जकै न सम्हारि सकै बलकैऽरु बकै।
अलबेली सुजान के कौतुक पैं अति रीझि इकौसी ह्वै लाज थकै २४३
पानिप मोती मिलाय गुही गुन पाट पुही सु जुही अभिलाषी।
नीके सुभाय के रंग भरीं हित जोति खरी न परैं कछु भाषो॥
घाल है बाँधी दै प्रीति कि गाँठि सु है घनआनँद जोबन साषी।
नैननि पान बिराजति जान सुरावरे रूप अनूप की रापी॥२४४॥
सोभा सुमेर की सिंधुतटी किधों सोभित मान मवास की घाटी।
कै रसराज प्रवाह को मारग वैनी बिहार सो यों दृग दाटी॥
काम कलाधर ओप दई मनो प्रीतम प्यार पढ़ावन पाटी।
जान की पीठि लखें घनआनँद आनन आन दें होत उचाटी॥२४५॥

कवित्त

तैं मुँह लगाई तातें मोहिं मौनही की कथा
रसना के उर एक रस रही बसि है।
तेरी सौंह जान सोई जाने जिनि जोही छबि
क्योंधों इन नैननि तैं नींद गई नसि है॥

छोरि छोरि धरे जे जे भूषन विदूषन से
तहाँ तहाँ लगि लोभी मन गयो गसि है ।
आरस रसीली घनआनंद सुजान प्यारी
ढीली दसा ह्वाँ सों मेरी मति लीनी कसि है ॥२४६॥
चलदल पात की प्रभा को है निपात जातें
यातें वाय वावरो डराय काँपिवो करै ।
थोरी थिर गुन में विराजै चिर आभा ऐन
नैन हेरें हेरनि हिए में भूष लै भरै ॥
नैको सनमुख भएँ दीजै सव तन पीठ
नीठि हाथ लागै मन पायन कहूँ परै ।
ताकें तैा उदर घनआनँद सुजान प्यारी
वोछी उपमानि को गरूर ओरे लौं गरै ॥२४७॥

सवैया

साँच के सान धरे सुरवान पै छूटैं विना ही कमान सों जोटैं।
दीसैं जहाँ के तहाँ सो चलें अति घूमति है मति या चख चोटैं ॥
घाव को चाव वढ़े घनआनँद चाउनि लै उर आड़न ओटैं ।
प्रान सुजान के गान विंधे घट लोटैं परे लगि तान की चोटैं ॥२४८॥
जोवन रूप अनूप मरोर सों अंगहि अंग लसै गुन ऐंठी ।
चातुरी चोप मनोज के चोजनि घूघरि वारि पै ऊठ (?) अमैठी ॥
सूधे न चाहै कहूँ घनआनँद सोहै सुजान गुमान गरैंठी ।
पैठत प्रान परी अनपीली सुनाक चढ़ाएइ डोलत टैंठो ॥२४९॥

गोरे झवा पहुँचानि विलोकत रीझि रँग्यो लपटाय गयो है।
पन्ननि की पहुँचीन लखें इन आभा तरंगनि संग रयो है॥
नील मनीनि हिएँ लवनी रुचि रूप सनी सुघनी न छयो है।
चारु चुरीनि चितै घनआनँद चित्त सुजान के पानि भयो है।२५०।
तेरी विनाहीं वनाय की बानिक जीतै सची रति रूप भलापन।
को कवि सो छबि कों वरनै रचि राखनि अंग सिंगार कलापन॥
कान ह्वै तान को रूप दिखावति जान जबैं कछू लागो अलापन।
नाचहिं भाव को भेद वतावतु है घनआनँद भौंह चलापन।२५१।

कवित्त

रूप मतवारी घनआनँद सुजान प्यारी
घूमर कटाछि धूम करै कौन पै थिरैं।
नाच की चटक लसै अंगनि मटक रंग
लाडिली लटक संग लोइन लगे फिरैं॥
अभित निकाई निरखतहीं विकाई मति
गति भूली डोलै सुधि सौंधै न लहैं हिरैं।
राते तरवानि तरें चूरे चोप चाड़ पूरे
पाँवड़े लों प्रान रीझि कनावड़े ह्वै गिरैं॥२५२॥

सवैया

नाच लट्ट ह्वै लग्यो फिरै पाइनि चाइनि चाहि लड़ीं लियै डोलनि।
त्यों सुर साँच सवाद सनें मन भूठियै लागति वीन की बोलनि॥
नैंकु हँसें सु करोरिक चंदनि चेरो करै दुति दंत अमोलनि।
ऐसी सुजान लखें घनआनँद नैन परैं रसमैन कलोलनि॥२५३॥

मादिक रूप रसीले सुजान कों पान किए छिनकौ न छकै फी।
भूल कों सौंपि तवै जु सवै सुधि काहू की कानि कनौड़त कैफौ॥
प्रान निवारि निवारि कौ लाजहि ऐसी बनै विन काज सकै कौ।
बावरे लोगन सों घनआनँद रीझनि भीजि कै खोजि वकै कौ॥२५४॥

कवित्त

चोप चाह चाँचरि चुहल चोप चटकीली
अटक निवारैं टारैं कुलकानि कोचि कै।
घात लै अनूठी भरे वे तक चितौन मूठी
घूँघरि चिलक चौंध बीज कौंध सौं टिकै॥
भीजे घनआनँद सुजान के खिलार हग
नैसिक निहारैं जिनकी निकाई पै बिकै।
रूप अलबेली सु नवेली एरी तेरी आँखें
ताकि छाकि मारैं हरिहाइन कहूँ छिकै॥२५५॥

सवैया

कोऊ न देखै न काहू दिखावत आपनो आनन जान अमैंड़े।
वै विसभा मधि न्यारे रहैं पुनि रीझत चेटक लौं हग पैंड़े॥
कौन पत्याय कहैं घनआनँद है सब सूधे सयान सी ऐंड़े।
रूप अनूपम को पुर दूरि सु बावरे नैनन के मग बैंड़े॥२५६॥
नैन किए अति आरति ऐन सुरैनि दिना चित चोंप विसेखै।
नीके सुधानिधि रूप छक्यो रचि आगि चुगै सब त्यागि परेखै॥
जैसे सुजान लखें घनआनँद नेहो न आनि हियै अवरेखै।
ऐसे उजागर हैं जग मैं परि चन्दहि एक चकोरहि देखै॥२५७॥

कवित्त

नेही की बिलोकनि बिलोइ सार सोधि लेइ
रूप रिझवार जानि काढ़ै गुन दब के।
चाउ सिर चढ़तु बढ़तु अति लाड़िलो ह्वै
कैसे गनै बनै जेब ओटपाय* लब के॥
खेल अलबेले हियो खूँदैं घनआनँद यों
जान प्यारे मतवारे भारे सुगरब के।
कहिबे को कोऊ कित देखो न परेखो वे तो
चाँदिनी को चोर मोर पच्छ अच्छ सब के॥२५८॥

सवैया

सोए हैं अंगनि अंग समोए सुभोए अनंग के रंगनि स्यों करि।
केलिकला रस आलस आसव पान छके घनआनँद यों करि॥
प्रेमनिसा मधि रागत पागत लागत अंगनि जागत ज्यों करि।
ऐसे सुजान बिलास निधान हो सोयेँ जगे कहि स्योरियै क्यों करि॥२५९॥
चातुर ह्वै रस आतुर होहु न बात सयान की जात क्यों चूके।
ऐसियै ठाननि ठानत हो कित धीर धरौ न परौ जिन टूके॥
देखि जियौ न छियो घनआनँद कौवरे अंग सुजान वधू के।
चोली चुनावट चीन्हैं चुभैं चपि होत उजागर होत उतू के॥२६०॥
मृदु मूरति लाड दुलार भरी अँग अंग बिराजति रंग मई।
घनआनँद जोवन मातो दसा छवि ताकतहीं मति छाक दई॥

---

* ओटपाय = उतपात।

वसि प्रान सलोनी सुजान रही चित पैं हित हेरति छाप दई।
वह रूप की रासि लखी तवतें सखी आँखिन कै हट तार भई।२६१।

कवित्त

माधुरी गहर उठै लहर लुनाई जहाँ
कहाँ लों अनूप रूप पानिप बिचारियै।
आरसी जो सम दीजै बूझ कों अरूझ कीजे
आछे अंग हेरि फेरि आपो न निहारियै॥
मोहनी की खानि है सुभाइ ही हँसनि जाकी
लाड़िली लसनि ताकी प्राननि तैं प्यारियै।
रीझौ रीझि भींजै घनआनँद सुजान महा
वारियै कहा सकोच सोचनहीं हारियै॥२६२॥
सोभा बरसीलो सुभ सील सौं लसीलो
सुरसीलो सि हेरें हरें बिरह तपति है।
अतिही सुजान प्रान पुंज दान बोलनि मैं
देखी पैज पूरी प्रीति नीति कों थपति है॥
जाके गुन बँधे मन छूटै और ठौरनि तैं
सहज मिठास लीजै स्वादति सँपति है।
पानिप अपार घनआनँद उकति ओछो
जतन जुगति जौन्ह कौन पैं नपति है॥२६३॥
जान प्यारे नागर अनूप गुन आगर हौ
जगत उजागर बिलास रसमसे हौ।

नवल सनेह साने आरसनि सरसाने
　　विधिना बनाय बाने अंग अंग लसे हौ ॥
छवि निखरे ह्वै खरे नीकेई लगत मोहिं
　　आनँद के घन गूढ़ गाँसनि सों गसे हौ ।
भोर भए आए भाँति भाँति मेरे मन भाए
　　एहौ घरबसे आज कौन घर बसे हौ ॥२६४॥
रूप गुन आगरि नवेली नेह नागरि तू
　　रचना अनूपम बनाई कौन विधि है ।
चलनि चितौनि बंक भौंहनि चपल हौनि
　　बोलनि रसाल मैन मंत्रहू कों सिधि है ॥
अंग अंग केलि कला संपति विलास घन
　　आनँद उज्यारी मुख सुख रंग रिधि है ।
जब जब देखिए नई सो पुनि पेखिए यों
　　जानि परी जान प्यारी निकाई की निधि है ॥२६५॥
सहज उजारो रूप जगमगो जान प्यारो
　　रति पैं रतीक आभा है न रोम रीस की ।
चीकने चिहुर नीके आनन बिथुरि रहे
　　कहा कहौं सोभा सुभ भरे भाल सीस की ॥
बीच बीच मंजुल मरीचि रुचि फैलि फबी
　　कैलि सभै उपमा लसति बिसे बीस की ।
मानो घनआनँद सिंगार रस सों सँवारो
　　चिक में बिलोकति वहनि रजनीस की ॥२६६॥

मीत मनभावन रिझावन कौ जान प्यारी
आई घनआनँद घुमंडि आछी वनि है ।
मंजन कै, अंजन दै भूषन बसन साजि
राजि रही भृकुटी जुटौंही वंक तनि है ॥
अंग अंग नूतन निकाई उझलनि छाई
भौन भरि चली सोभा नदी लौं उफनि है।
देखनि दुलार भोई बोलनि सुधा समोई
मुख की सुवास सास निसरति सनि है ॥२६७॥

सवैया

भावते के रस रूपहिं सोधि लै नीकै भरयो उर कै कजरौटी ।
रोमहि रोम सुजान विराजत सोचि तचै मति की मति औटी ॥
प्रेमवती न करै सु कहा घनआनँद नेम गली गति लौटी ।
मीत मराल सरोवर तो मन तै पिय को हिय कीनो कसौटी २६८
आनन की सुघराई कहा कहौं जैसी विराजति है जिहि औसर।
चंद तो मंद मलीन सरोरुह एकहू रंग न दोजिए जो सर ॥
नैन अन्यारे तिरोछो चितौनि मैं हेरि गिरै रतिप्रीतम को सर ।
जान हिएँ घनआनँद सों हँसि फैलि फबै सुचँवेली की चौसर २६९
घूँघट काढ़ि जो लाज सकेलति लाजहिं लाजति है विनु काजनि ।
नैननि बैननि मैं तिहि ऐन सु होत कहा बस जे पट साजनि ॥
सील की मूरति जान रची विधि तोहिं अचंभे भरी छवि छाजनि।
देखत देखत दीस परै नहिं यों बरसै घनआनँद लाजनि ।२७०।

लाड़ लसी लहकै महकै अँग रूपलता लगि डीठ झकोरै ।
हास विलास भरे रस कन्द सु आनन त्यों चख होत चकोरै ॥
मौन भली कहि कौन सकै घनआनँद जान सु नाक सकोरै ।
रीझि विलोएई डारति है हिय मोहत टोहत प्यारी अकोरै २७१

कवित्त

रूप गुन ऐंठी सु अमैठी उर पैठी बैठी
लाडनि निरैठी मति मुरनि हरै हरी ।
जोवन गहेली अलबेली अतिही नबेली
हेली ह्वै सुरति वौरी आँचर टरै टरी ॥
परम सुजान भोरी बातनि छवाए प्रान
भावति न आन वेई हियरा अरै अरी ।
फंद सी हँसनि घनआनँद दृगनि गरें
मुख सुखकंद मंद उघरि परै परी ॥२७२॥
चारु चामीकर चंद चपला चंपक चोखी
केसरि चटक कौन लेखैं लेखियति है ।
उपमा विचारी न विचारी नहि जान प्यारी
रूप की निकाई औरै अवरेखियति है ॥
सरस सनेह सानी राजति रमानी दस(?)
तरुनाई तेज अरुनाई पेखियति है ।
मंडित अखंड घनआनँद उजास लिएँ
तेरे तन दीपति दिवारी देखियति है ॥२७३॥

सवैया

रूप खिलार दिवारी किए नित जोवन छाकि न सूझे निहारै।
नैननि सैन छलै चित सों चित चाव भरयो निज दाव विचारै॥
जीतिही को चसको घनआनँद चेटक जान सयान विसारै।
जीव विचारौ परयो अति सोचनि हारि रह्यो सु कहा फिरि हारै२७४

पानिप पूरी खरीं निखरीं रस रासि निकाई की नीवहिं रोपैं।
लाज लड़ी बड़ी सील गसीली सुभाय हँसीली चितै चित लोपैं॥
अंजन अंजित सी घनआनँद मंजु महा उपमानिहूँ लोपैं।
तेरी सों एरी सुजान ते आँखिनि देखिए आँखि न आवति मोपैं२७५

कवित्त

कंठ काँच घटी तें वचन चोखो आसव लै
अधर पियालें पूरि राखति सहेत है।
रूप मतवारो घनआनँद सुजान प्यारो
काननि ह्वै प्राननि पिवाय पीवै चेत है॥
छकेई रहत रैन द्योस प्रेम प्यास आस
कीनी नेम धरम कहानी उपनेत है।
ऐसे रस बस क्यों न सोवै और स्वाद कहौ
रोम रोम जाग्योही करतु मीनकेतु है॥२७६॥

सवैया

उर भौन में मौन को घूंघट कै दुरि बैठो विराजति बात बनी।
मृदु मंजु पदारथ भूषन सों सुलसै हुलसै रस रूप मनी॥

रसना अली कान गली मधि ह्वै पधरावति लै चित सेज ठनी ।
घनआनँद बूझनि अंक बसै बिलसै रिझवार सुजान घनी ॥२७७॥

कवित्त

याही आएँ आवन की आसा उर आय बसै
चाहै निरवाहै नित हित कुसलात कौ ।
हैरी वह वैरी घैरी उघरयो बिगोवनि पै
ओछौ जरि गयो गोवै कहा भेद बात कौ ॥
मधुर सरूप याहि देखिए अनंदघन
पोपैं जान प्यारे संग रंग मनजात कौ ।
साँझ सही साथिनि सँजोगहि सजाइ देति
लाग्यो नित गोहन ही प्रात प्रानघात कौ ॥२७८॥
मुख देखें गोहन लगेई फिरैं भौंर भौंर
छूटे बार हेरि कै पपीहा पुंज छावहीं ।
गति रीझै चाइन सों पाइनि परस काजै
रस लोभी बिवस मराल जाल धावहीं ॥
याते मन होय प्रान संपुट में गोपि राखौं
ऐसेहूँ निगोड़े नैन कैसे चैन पावहीं ।
सोचियै अनंदघन जान प्यारी जैसें जानौ
दुसह दसा की बातें बरनी न आवहीं ॥२७९॥
अंग अंग आभा संग द्रवित अचित ह्वै कै
रचि सचि लीनी सौज रंगनि वनेरे की ।

हँसनि लसनि आछी बोलनि चितौनि चाल
मूरति रसाल रोम रोम छवि हेरे की ॥
लिखि राख्यो चित्र यों प्रवाह रूपी नैननि पैं
लही न परति गति उलट अनेरे की ।
रूप को चरित्र है अनंदघन जान प्यारी
ए किधों विचित्रताइ मो चित चितेरे की ॥२८०॥

सवैया

मीत सुजान मिले को महा सुख अंगनि भोय समोय रह्यो है ।
स्वाद जगे रस रंग पगे अति जानत वेई न जात कह्यो है ॥
द्वै उर एक भए घुरिकै घनआनँद सुद्ध समीप लह्यो है ।
रूप अनूप तरंगनि चाहि तऊ चित चाह प्रवाह बह्यो है ॥२८१॥
अति रूप की रासि रसीलियै मूरति जोहौं जबै तब रीझ छकौं ।
घनआनँद जान चरित्र के रंगनि चित्र विचित्र दसा सों थकौं ॥
अनदेखें दई जु कछू गति देखियै जीवहि जानै न ब्योरि सकौं ।
यह नेह सदेह अदेह करै पचि हारि विचारि विचारि जकौं ।२८२।
स्याम घटा लपटी थिर बीज कि सोहै अमावस अंक उज्यारी ।
धूम के पुंज में ज्वाल की माल सी पै दृग-सीतलता सुखकारी ॥
कै छवि छायो सिंगार निहारि सुजान तिया तन दीपति प्यारी ।
कैसी फबी घनआनँद चोंपनि सों पहिरी चुनि साँवरी सारी॥२८३॥
कित जाउँ लै जान सजीवन प्रान कों आन के लेखें न छाहैं धिजौं ।
इहि साल दहौं नितहीं दुख ज्वाल रु सोचनि लोचन वारि भिजौं ॥

दुरि आप नएहू इकौं सें मिलौं घनआनँद यों अनखानि छिजौं।
डरडीठिकेनीठिन देखि सकौं सुअनोखियै रीझि पैं रीझि खिजौं२८४
तुम साँची कहौ हित कै चित की कित भूल भरे इत आय परे।
कि कहूँ पहली परतीति मढ़े घनआनँद छाय सुभाय ढरे॥
वलि वैठो सुजान तौ को बरजै धरि पावनि पावन नैन करे।
वकि से जकि से निरखौं परखौं सुनिहौं जिहिं रंगन रंग तरे २८५
अधरासव पान के छाक छके कर चाँपि कपोल सवाद पगे।
घनआनँद भीजि रहे रिझवार पगे सब अंग अनंग दगे॥
करि खंडन गंडन मंडन दै निरखें तें अखंडित लोभ लगे।
सुखदान सुजान समान महा सु कहा कहौं आरसी भाग जगे २८६
रिसि रूसनैं रूपियो ऊठ अनूठियै लागति जागति जोति महा।
अनवोलनि पैं वलि कीजियै बानी सुबोलनि की कहिए धौं कहा॥
ननिहारनि हेरनि हारति डीठि औ पीठि दिएँ समुहात लहा।
घनआनँद प्यारी सुजान दै कान अहा सुनिए हित बात हहा २८७

कवित्त

कौन को सुजस जोन्ह अमल अपूरव को
जग मैं उदोत देखियत दिन रैन है।
जाकी जोति जागै रस पागै हो चकोर नैन
बुध कवि मित्रन कों पोषै मन चैन है॥
नेह निधि वाल्यो घनआनँद गुननि सुनि
अचिरज है न सो निहारो कहूँ मैं न है।

विरह विडारि औ विदारि दुखतम कब
सींचौगे श्रवन कहि सुधा सने वैन है ॥२८८॥
नीके नैन ऐन पाय चैन पाय लाजहू को
सोभा के समाज हेरें हिय सियरातु है ।
एरी मेरी सहज लडौली अरवीली सुनि
तेरो अंग संग लहे लाड़ौ लड़कातु है ॥
रूप मद छाके तैं गँवेली गरवीली ग्वारि
तोहि ताकें रूपौ उमगनि उमदातु है ।
आनँद के घन सों न कीजै मान जान प्यारी
दान दीजै पिय सों न मानै योंहा जात है ॥२८९॥

सवैया

मीठे महा गरुवे गुनरासि ह्वै हू गतु क्यों करुवे गहि दोसनि ।
आपु न त्यों तकिए सकिए कहि हाय हठीले न रूसिए रोसनि ॥
तासों इती अनखानि कहा घनआनँद जो भिजई सु भरोसनि ।
वारिए कोरिक प्रान सुजान हौ ए पर यों मरिएगो मसोसनि ॥२९०॥
डर आवति है अपनै कर ह्वै बर वेनी विलास सों नीकै गसौं ।
अति दीन ह्वै नीचियै डोठि कियैं अनखौहैं सुभाव के त्रास त्रसौं ॥
घनआनँद यों बहु भांतिन हौं सुखदान सुजान समीप बसौं ।
हित वाइनि नै चित चाइनि च्वै नित पाइनि ऊपर सीस घसौं ।२९१।
जान प्रवीन के हाथ को वीन है मो चित राग भरयो नित राजै ।
सो सुर साँच कहूँ नहिं छावतु ज्योंहीं बजावै लिएँ मन बाजै ॥

भावती मीड़ मरोर दिएँ घनआनँद सौ गुने रंग सौं गाजै।
प्यार सों तार सु ऐंचि कै तोरत क्यों सुघराई पै लाजत लाजै।२९२।

कवित्त

रसहि पिवाय प्यासे प्राननि जिवाय राखैं
लाज सों लपेटी लसै उघरि हितौन की।
निपट नवेली नेह झेली लाड़ अलबेली
मोह ढरहरी भरी बिरह रितौन की॥
लोने लोने कोने छ्वै छबीली अँखियानि की
सु रंचकौ न चूकै घात औसर बितौन की।
एरी घनआनँद बरसि मेरी जान तेरी
हियो सुख सींचै गति तिरछी चितौन की॥२९३॥
तेरी अनमान नहीं मेरे मन मानि रही
लोचन निहारैं हेरि सौहैं न निहारिबौ।
कोरि कोरि आदर कौ करत निरादर है
सुधा तें मधुर महा झुकि झिझकारिबौ॥
जीवन की ज्यारी घनआनँद सुजान प्यारी
जीव जीति लाहो लहै तेरें हठि हारिबौ।
रूखी रूखी बातनि हूँ सरसै सनेह सुठि
हिए तें टरै न ए अनखि कर टारिबौ॥ २९४॥
ललित लसौहीं सुढरौहीं नैक सौहीं भएँ
त्यौंहीं रहि गहे गौहीं डोलति न डीठि है।

हठ पटरानी प्रान पैठिबे कौ फिरिबै वै
देखौ विन बोलिबे मैं रस की बसीठि है ॥
सुख सनमान देति मुरि दीनै कीनै मान
जान प्यारी विरचै हूँ राँचनि मजीठि है ।
मनु दै मनाऊँ सो न पाऊँ घनआनँद पै
मोहिं यौं विमन करै एरी तेरी पीठि है ॥२९५॥

रिस भरी भोर तोकौं देखौ सुनी प्रीति नीति
नायक रसीलौ विनै विनती महा करै।
चोप चाय दायनि सौं अमित उपायनि लौं
ज्योंही बनै त्योंहीं लगि आपति लहा करै॥
मीन जलहीन लौं अधीन ह्वै अनंदघन
जान प्यारी पाँइनि पै कब को हहा करै ।
दई नई टेक तोहिं टारें न टरति नैंकौ
हारयो सब भाँति जो विचारो सो कहा करै॥२९६॥

सीस लाय दृग छाय हियें पै बसाय राख्यौ
इते मान मन आवै प्राननि मैं लै धरौं ।
हेरि हेरि चूमि चूमि सोभा छवि घूमि घूमि
परसि कपोलनि सौं मंजन कियो करौं ॥
केलि कला कंदिर विलासनिधि मंदिर ये
इनही के बल हौं मनोज सिंधु को तरौं ।
यातें घनआनँद सुजान प्यारी रीझि भीजि
उमगि उमगि बेर बेर तेरे पा परौं ॥२९७॥

सवैया

राधे सुजान इतैं चित दै हित मैं कित कीजत मान मरोर है।
माखन तें मन कोंवरौ ह्वै यह बानि न जानति कैसें कठोर है॥
साँवरे सों मिलि सोहती जैसी कहा कहिए कहिबे कों न जोर है।
तेरो पपीहा जु है घनआनँद है ब्रज चंद पै तेरो चकोर है॥२६८॥

कवित्त

हाहा करि हारी न निहारी रूखियै महा री
मोहू सों चिन्हारी मानौ तनकौ नहीं कहूँ।
साधि कै समाधि सी अराधति है काहि दैया
अरहि पकरि अति निठुरि करै न हूँ॥
प्रान पति आरति जो जानै तो सुजान प्यारी
नावैं न धरैयै नावँ ऐसैं औ कहा कहूँ।
राकानिस आली व्याली भई घनआनँद कों
ढरि चल्यो चंदा तू न बीर ढरी नेकहूँ॥२६६॥

सवैया

अनमानिबोई मन मानि रह्यो अरु मौनहीं सों कछू बोलति है।
न निहारनि ओर निहारि रही उर गाँठि त्यों अंतर खोलति है॥
रिसि संग महा रस रंग बढ़्यो जड़ताई ये गौहन डोलति है।
घनआनँद जान पिया कें हिऐं कित कों फिरि बैठि कलोलति है॥३००
कहिए सु कहा रहिए गहि मौन अरी सजनी उन जैसी करी।
परतीति दै कीनी अनीति महा बिस दीन्यो दिखाय मिठास ढरी॥

इत काहू सों मेल रह्यो न कछू उत खेल सी ह्वै सब बात टरी ।
घनआनँद जान सयान को खानि भुराई हमारेई पैंड़े परी ॥२०१॥
अब यों उर आवति है सजनी उन सों सपनेहूँ न बोलियैरी ।
अरु जौ निलजै ह्वै मिलैं तो मिलौं मन तें गस गूँज न खोलियैरी ॥
दृग देखन की कछु सौंह नहीं इन गौहन भूलि न डोलियैरी ।
घनआनँद जान महा कपटी चित काहें परेखनि छोलियैरी ॥२०२॥
बारनि भौंर कुमार भजैं पुहुपावलि हास विकासहि पूजति ।
पाठ कियौ करै आठहू जाम सुबोलनि सीखिबें कोकिल कूजति ॥
वे घनआनँद रीझि छए तकि तौ छवि आन क्यों आँखिन छूजति ।
एरी बसंत लजावन कंत सों जान ह्वै मान मई कित हूजति॥२०३॥

कवित्त

हमैं तुम्हैं आजलों न अंतर हो प्रान प्यारे
कहाँ तें दुरयो सो बैरी आड़ें आनि है भयौ ।
जियरा बिचारो इन सोचनि समाय जाय
हियरा उदेगनि उजार सम ह्वै गयौ ॥
रावरे हू रंचक विचारि देखौ जानमनि
कौन कै सहाय आय महा दुख या दयौ ।
मारि टारि दीजै ऐसो नीच बीच भलो नाहिं
वहै रस-भीनी घनआनँद रहै छयौ ॥२०४॥
अंतर गठीले मुख ढीले ढीले बैन बोलौ
सुंदर सुजान तऊ प्राननि खरैं खगौ ।

साँच की सी मूरति ह्वै आँखिन मैं पैठो आय
महा निरमोही मोह सों मढ़े हियो ठगौ ॥
आनँद के घन उघरें पैं छल छाय लेत
कटुताई भरे रोम रोमनि अमी पगौ ।
चाह मतवारी मति भई है हमारी देखौ
कपट करेहूँ प्यारे निपट भले लगौ ॥२०५॥
विस को डवा कै उदेग को अँवा है कल-
मल को नवा (?) है अथवा है वक्र बात को।
बीजुरी को बंधु कैधौं दुख ही को सिंधु है कि
महा मोह अंध दंड अतन अलात को ॥
द्रोह को दिनेस कै उजार निज देस किधौं
आतम कलेस है कि जंत्र सुखघात को ।
वैरी मन मेरो घनआनँद सुजान प्यारे
कैसें हित सीख्यो जू तिहारे पच्छपात को ॥२०६॥

सवैया

रूप छक्यो तुम्हैं देखि सुजान थक्यो तजि लाज समाजन की दब ।
मोहि लियो हँसि हेरि छबीले कहीं अति प्यार पगी बतियाँ जब ॥
सोच विचार के साज टरे घनआनँद रीझनि भीजि रच्यो तब ।
आस भरयो गहि द्वार परयो जिय या घर आय कै जाय कहाँ अब२०७

कवित्त

चाहत हीं रीझि लालसानि भीजि सुख सीझ
अंग अंग रंग संग भाव भरि भ्वै गई ।

रैन द्यौस जागैं ऐसी लगीं जू कहूँ न लागैं
पन अनुरागैं पागैं चंचलता च्वै गईं ॥
हित की कनौड़ी लौंड़ी भईं ये अनंदघन
फिरैं क्यों पिछौड़ी नेह मग डग द्वै गईं ।
माधुरी निधान प्रान प्यारी जान प्यारी तेरी
रूप रस चाखैं आखैं मधुमाखी ह्वै गईं ॥३०८॥

आखैं रूप रस चाखैं चाहैं उर संचि राखैं
लोभ लागी लाखैं अभिलाखैं निवरैं नहीं ।
तोहि जसी भाँति लसै बरनिवौ मन बसै
बानी गुन गसै मति गति बिथकै तहीं ॥
जान प्यारी सुधि हूँ अपुनपौ विसरि जाय
माधुरी निधान तेरी नैसिक मुहाचहीं ।
क्योंकरि अनंदघन लहिए सँजोग सुख
लालसानि भीजि रीझि वातैं न परैं कहीं ॥३०९॥

जो कछू निहारैं नैन कैसें सो वखानै बैन
बिना देखी कहै तौ कहा तिन्हैं प्रतीति है ।
रूप के सवाद भीने बापुरे अबोल कीने
विधि बुधि हीने को अनैसी यह रीति है ॥
सुख-दुख साथी मिलें बिछुरें अनंदघन
जान प्रान प्यारे सों नवेली इन्हैं प्रीति है ।
औरहि न चाहैं पन पूरौ नित लै निबाहैं
हारैं हँसि आपौ जीति मानैं नेह नीति है ॥३१०॥

साखा कुल टूटै ह्वै रँगीली अभिलाषा भरी
परि ह्वै पखान बीच घसनि घनी सहै।
सोव सूखी इते मान आनि कै सलिल बूड़े
घुरि जाय चाइनिहीं हाय गति को कहै॥
तऊ दुखहाई देखौ छिदति सलाकनि सों
प्रेम की परख दैया कठिन महा अहै।
पिय मनसा लौं वारी मिहदी अनंदघन
एरी जान प्यारी नैंक पाइन लग्यो चहै॥३११॥
आरति के ऐन द्योस रैन राजैं नेही नैन
चढ़े चोप छाजैं साजैं डीठि ईठि तौ अचूक।
पूरे पन राचे छाकि पाकि चूरे सस काचे
ताचे साँच आँच के टरैं न टक तें अचूक॥
रूप उजियारे जान प्यारे हैं निहारे जिन
भीजे घनआनँद कनौड पुंज लाज ऊक।
नेमी अंध हौंस मरैं चाहैं तिन रीस करैं
ऐसे अरबरैं ज्यों चकोर होन कौं उलूक॥३१२॥
प्रेम को महोदधि अपार हेरि कै विचार
बापरो हहरि वार हीतें फिरि आयो है।
ताही एकरस ह्वै बिवस अवगाहैं दोऊ
नेही हरि राधा जिन्हैं देखे सरसायो है॥
ताकी कोऊ तरल तरंग संग छूट्यो कन
पूरि लोक लोकनि उमगि उफनायो है।

सोई घनआनँद सुजान लागि हेत होत
ऐसे मथि मन पै सरूप ठहरायो है ॥३१३॥

सवैया

लोइन लाल गुलाल भरे कि खरे अनुराग सों पागि जगाए।
कै रस चाँचरि चौचँद मैं छतिया पर छैल नषच्छत छाए॥
भीजि रहे श्रम नीर सुजान धरौ डग ढोलिए लागै सुहाए।
भोरहूँ ऐसी खिलाररनि पैं घनआनँद का छल छूटन पाए॥३१४॥
अंगनि पानिप ओप खरी निखरी नवजोवन की सुथराई।
नैननि वैारति रूप कें भौंर अचंभे भरी छतियाँ उथराई॥
जान महा गरुवे गुन में घनआनँद हेरि रह्यो थुथराई।
पैने कटाच्छिछनि ओज मनोज के वानन बीच विंधी सुथराई॥३१५॥
रस रैन जगो पिय प्रेम पगी अरसानि सों अंगनि मोरति है।
मुख ओप अनूप बिराजि रही ससि कोरिक वारने को रति है॥
अँखियानि मैं छाकनि की अरुनाई हिएँ अनुराग लै बोरति है।
घनआनँद प्यारी सुजान लखें डरि डीठि हितू तिन तोरति है॥३१६॥
सुख स्वेद कनी मुख चंद बनी बिथुरी अलकावलि भाँति भली।
मद जोबन रूप छकीं अँखियाँ अवलोकनि आरस रंग रली॥
घनआनँद ओपित ऊँचे उरोजनि चोज मनोज की ओज दली।
गतिढोली लजीली रसीली सुजान मनोरथ बेलि फली सुफली ३१७
हुलास भरी मुसक्यान लसै अधरानि तैं आनि कपोलनि जागै।
छूटीं अलकैं मृदु मंजु मिहीं श्रुति मूल छलानि अनी मुरि लागै॥

बड़ी अँखियाँनि मैं अंजन रेख लजीली चितौनि हिएँ रस पागै।
सुहाग सों ओपित भाल दिपै घनआनँद जान पिया अनुरागै। ३१८॥
राधा नवेली सहेली समाज मैं होरी को साज सजें अति सोहै।
मोहन छैल खिलार तहाँ रस प्यास भरी अँखियाँन सों जोहै॥
डीठि मिलें मुरि पीठि दई हिय हेत की बात सकै कहि को है।
सैननिहीं बरस्यो घन आनँद भीजनि पैं रँग रीझनि मोहै॥३१९॥
रस चौचँद चाँचरि फागु मचो लखि रीझि बिकानि थकी जु चकी।
समुहाय चही हरि भामिनि त्यों पिचकी भरि ताक तकी कुचकी॥
उत मूठी गुलाल उठे उकसे सु लगें पहिलें छतियाँ दुचकी।
घनआनँद घूमनि झूमि रहे गुल-चाइल लै अचकाँ उचकी॥३२०॥
वह माधुरियै सों भरी मुसक्यानि मिठास लहै क्यों बिचारो अमी।
अरु बंक बिसाल रँगीले रसाल बिलोचन मैं न कटाछ कमी॥
घनआनँद जान अनूपम रूप तें रीति नई जिय माँझ रमी।
न सुनी कबहूँ सु लखी चित बौरेई लेति लुनाइए की लछमी॥३२१॥
मंजुल बंजुल पुंज निकुंज अछेह छबीली महा रस मेह तैं।
द्योस मैं रैन सो चैन को ऐन पै जोति पग्यो जगि दंपति देह तैं॥
हास बिकास बिलास प्रकास सुजान समान अछेह के तेह तैं।
भीजि रहे घनआनँद स्वेद समीर डुलै बिजना भरि नेह तैं ३२२

कवित्त

मद उनमद स्वाद मदन के मतवारे
केलि के अवारि लौं सँवारि सुख सोए हैं।

भुजनि उसीसौ धारि अंतर निवारि अंग
अंगनि सुधारि तन मन ज्यों समोए हैं ॥
सुपने सुरति पागैं महा चोप अनुरागैं
सोएँ हूँ सुजान जागैं ऐसे भाव भोए हैं।
छूटे वार टूटे हार आनन अपार सोभा
भरे रससार घनआनँद अहो ये हैं ॥३२३॥

सवैया

खंजन ऐसे कहा मन रंजन मीननि लेखौ कहा रस ढार सौं।
कंजन लाज कौ लेस नहीं मृग रूपे सने ये सनेह के सार सौं ॥
मोतिन कें यह पानिप जोति न वानि जिवाई न जानत मार सौं।
मीत सुजान सिरावति मो दृग देखनि आनँद रंग अपार सौं३२४
पीठि दिएँ सब दीठि परे निमुहें जग 'ईठिनि कौ न सकेरै।
दौरि थक्यो जितहीं तितहीं नितहीं चित यों न कहूँ हित हेरै॥
कागर भौन लै आगर मौन दै बातवसी पै सुजानहिं टेरै।
नैननि काननि सौंहीं सदा घनआनँद औरनि सों मुख फेरै ३२५

कवित्त

नेही नैन आरत पपीहनि की चाह भरयो
पानिप अपार धरें जोबन अदेह कौ।
उझ्यो काहू भाँति धीर बौरनि अपूरब पै
इते पैं फुहीनि चैन प्रान मन देह कौ॥
दोऊ अदभुत देखौ रसिक सुजान क्यों न
लेहिं देहिं स्वाद सुख आनँद अछेह कौ।

मोहिं नीको लागतु री राधे तेरे लोने इन
अंग अंग अररानु रंग मेह नेह कौ ॥ ३२६ ॥

सवैया

बरसैं तरसैं सरसैं अरसैं न कहूँ दरसैं इहि छाक छईं।
निरखैं परखैं करखैं हरखैं उपजीं अभिलाषनि लाष जईं॥
घनआनँद ही उनए इनि मैं बहु भाँतिनि ये उन रंग रईं।
रस मूरति स्यामहिं देखतहीं सजनी अँखियाँ रस रासि भईं ३२७
आयो महा रस पुंज भरयो घनआनँद रूप सिंगार कै मोरैं।
सीचतु है हिय देस सुदेस अपूरब आँखिनि ठानत ठौरैं॥
मोहन बाँसुरिया सी बजैं मधुरें गरजैं धुनि मैं मति बौरैं।
आज की मोरन की सजनी चित दै सुनि लै कछु बोलनि औरैं ३२८

कवित्त

रति सुख स्वेद ओप्यो आनन बिलोकि प्यारौ
प्राननि सिहाय मोह मादक महा छकै।
पीत पट छोर लै लै ढोरत समीर धीर
चुंबन की चाड़नि लुभाय रहि ना सकै॥
परस सरस विधि रुचिर चिबुक त्योंहीं
कंपित करन केलि भाव दावही तकै।
लाजनि लसौहौं चितवनि चाहि जान प्यारी
मींचत अनंदघन हाँसी सों भरी न कै ॥३२९॥
पानिप अनूप रूप जल कों निहारि मन
गयो हो बिहार करिवे कों चाइ ढरिकै।

परयो जाय रंगनि की तरल तरंगनि मैं
अतिहीं अपार ताहि कैसें सकै तरिकै ॥
धीर तीर सूझत कहूँ न घनआनँद यों
बिबस बिचारौ थक्यो बीचहि हहरिकै ।
लेस न सम्हार गहि केसनि मगन भयो
बूड़िबे तें बच्यो को सिवारि कों पकरि कै ॥३३०॥

नैक उर आएँ ही बहुरि दुख दूरि जात
ताप बिन ताहि आप चंदन कृपा करै ।
लगनि दै लागनि दै पाग अनुरागनि दै
जागनि जगाइ लै कै मदन कृपा करै ॥
बानी के बिलास बरसावै घनआनँद ह्वै
मूढ़हू प्रगट गूढ़ छंदनि कृपा करै ।
आरति निकंदन मिलावै नँदनंदन-
आनँदनि मेरी मति बंदन कृपा करै ॥३३१॥

अमल अपूरब उजागर अखंड नित
जाहि चाहि चंदहिं चिताइबो कलंक है ।
तारनि प्रकासै मित्र मंडल मैं मंडन ह्वै
बन घन राजै रसनायक निसंक है ॥
आनँद अमृत कंद बंदनीय प्राननि कौ
सुखमा संपत्ति हेरें काम कौन रंक है ।
चाह ते चकोरनि कौं चोपनि सों लखि लेत
कृपा चंद्रिका मैं नंदनंदन मयंक है ॥३३२॥

सवैया

दृग दीजिए दीसि परौ जिनसों इन मोर-पखौवनि को भटकै ।
मनु दै फिरि लीजियै आपन ह्वाँ जु तहाँ अटकै न कहूँ मटकै ॥
करि वंदन दीन भनै सुनियै भ्रम फंदनि मैं कबलों लटकै ।
घनआनँद स्याम सुजान हरौ जिय चातक के हिय की खटकै ३३३

क्यों हठ कै सठ साधन सोधतु होत कहा मन यों तरसें तैं ।
हाथ चढ़ै जिहिं स्याम सुजान कहूँ तिहिं पाइन रे परसे तैं ॥
नीरस मानस ह्वै रसरासि विराजत नैसुक जा सरसे तैं ।
ऊसर हूँ सर होत लखे घनआनँद रूप कृपा बरसे तैं ॥३३४॥

साधन पुंज परे अनलेखे पै मैं अपने मन एकौ न लेख्यो ।
जे निरखे उरझे तिनमें किनहूँ बिन सोच कछू न बिसेख्यो ॥
तातें सबै तजि स्याम सुजान सों साहस औरै हिएँ अवरेख्यो ।
प्रान पपीहन को घनआनँद पोप रसीली कृपा कर देख्यो॥३३५॥

ज्यों परसै नहिं स्याम सुजान तौ धूरि समान है अंगनि धोइबो ।
त्यों मन को तिनके दरसें बिनु बाद बिचारनि बीच घँघोइबो ॥
वे घनआनँद क्यों लहियै श्रम कै भर भार अपारहि ढोइबो ।
जागत भाग कृपा रस पागत दीसत यों सहजै सुख सोइबो ॥३३६॥

आय जो वाय तौ धूरि सबै सुखजीवन मूरि सम्हारत क्यों नहीं ।
ताहि महागवि ताहि कहा गति बैठें बनैगी विचारत क्यों नहीं ॥
नैननि संग फिरै भटक्यो पल मूँदि सरूप निहारत क्यों नहीं ।
स्याम सुजान कृपा घनआनँद प्रान पपीहन पारत क्यों नहीं ३३७

वलकै झलकै मुख रंग रचै उघरै गुन गौरव सील ढकै।
मन वाढ़ चढ़ै अति ऊरध कों टक टेक सों स्याम सुजान तकै॥
जक एक न दूसरी बात कहूँ घनआनँद भीजिकै प्रेम पकै।
दृग देखि छकै उछकै कवहूँ न छवीली कृपा मधुपान छकै ॥३३८॥

कवित्त

परे रहौ करम धरम सब धरे रहौ
डरे रहौ डर कौन गनै हानि लाहे कों।
लोक परलोक जो कछू हैं तो न छूहैं हम
छीलर रुचै न छोर मधु अवगाहे कों॥
महा घनआनँद घुमंडि पाइयत जहाँ
सोच सूखा परौ करौ कर्म दुखदाहे कों।
ऐसी रस रासि लहि उलह्यौ रहत सदा
कृपा दिखवैया काहू दिस देखौ काहे कों ॥३३९॥

सवैया

हरि के हिय मैं जिय मैं सु बसै महिमा फिरि और कहा कहियै।
दरसै नित नैननि वैननि ह्वै मुसक्यानि सों रंग महा लहियै॥
घनआनँद प्रान पपीहनि कों रस प्यावनि ज्यावनि है वहियै।
करि कोऊ अनेक उपाय मरौ हमैं जीवनि एक कृपा चहियै ३४०
स्याम सुजान हिएँ वसियै रहैं नैननि त्यों लसियै भरि भाइनि।
बैननि बीच विलास करै मुसक्यान सखी सों रची चित चाइनि॥
है वस जाके सदा घनआनँद ऐसी रसाल महा सुख-दाइनि।
चेरी भई मति मेरी निहारि कैं सील सरूप कृपा ठकुराइनि॥३४१॥

चैन कृपा फिरि मौन कृपा दृग दृष्ट कृपा रुख माधि कृपाई।
ग्यान कृपा गुन गान कृपा मन ध्यान कृपा हरै आधि कृपाई॥
लोक कृपा परलोक कृपा लहिए सुख सम्पति साधि कृपाई।
यों सब ठाँ दरसै बरसै घनआनँद भीजि अराधि कृपाई॥३४२॥

कवित्त

मंजु गुंज करै राग रचे सुर भरै प्रेम
पुंज छबि धरै हरै दरप मनोज कौ।
चाव मतवारौ भाव भाँवरीन लेतु रहै
देत नैन चैन ऐन चोपनि के चोज कौ॥
और फूल भूलि रीझ भीजि घनआनँद यों
बंदी भयो एक वाही गुनगन ओज कौ।
बानी रसरानी वा मधुव्रत कौं लह्यौ जिन
कृपा मकरंद स्याम हृदय सरोज कौ॥३४३॥

सवैया

फीके सवाद परे सब ही अब ऐसो कछू रस प्रान कृपा कौ।
नीरस सानी कहै न लहै गति मोहि मिल्यो मन मान कृपा कौ॥
रीझनि लै भिजयो हियरा घनआनँद स्याम सुजान कृपा कौ।
मोल लियो बिन मोल अमोल है प्रेम पदारथ दान कृपा कौ ३४४
नेम लियौं सब बातनि तैं अब बैठी है साधि कैं ग्यान महातप।
प्रेम थप्यो घनआनँद रूप सों देखि तप्यो जग बाद के आतप॥
कैसें कहै कछु भाई सवाद मिलै बड़ी बेर सो याहि मिल्यो टप।
मोनहू जाको पुकार करै गुनमाल गहैं जपै एक कृपा जप॥३४५॥

कवित्त

चाहियै न कछू जाकी चाह तासों फल पायो
 यातें वाही बनि कैं सरूप नैन कीन्यो घरु।
जहाँ राधा कोमल वेलि कुन्त की छवनि छायो
 लसत सदाईं कूल कालिंदी सुदेस थरु ॥
महा घनआनँद फुहार सुख सार सींचे
 हित उत सवनि लगाय रंग भरयो भरु।
प्रेम रस मूल फूल मूरति बिराजै मेरे
 मन आलवाल कृष्ण कृपा कौ कलपतरु ॥३४६॥

सवैया

काहे कों सोचि मरै जियरा परी तोहिं कहा बिधि बातनि की है।
हैं घनआनँद स्याम सुजान सम्हारि तू चातिक ज्यों सुख जी है॥
ऐसे रसामृत पुंजहिं पायकै को सठ साधन छीलर छीहै।
जाकी कृपा नित छाय रही दुख तापतें वैारे बचायही ली है॥३४७॥

कवित्त

साँवरे सुजान रंग संग मति रंग भीजी
 दरस परस पैज पूरन बसीठि है।
एक गुन-हीन नहीं सूझत सरूप जाकौं
 कृपा मद अंध तिन्हैं सपने न नीठि है॥
सदा घनआनँद वरसि प्रान चातकनि
 पोषति पुकार बिन ऐसी सुद्ध ईठि है।

साधन असाधन त्यों सनमुख होत कैसें
सब दिसि पीठि कृपा मन तन डीठि है ॥३४८॥

सवैया

चातक चित्त कृपा घनआनँद चोंच की खोंच सु क्योंकरि धारौं।
त्यों रतनाकर दान समै बुधि जीरन चीर कहा लै पसारौं॥
पै गुन ताके अनेक लखौं निहचै उर आनिकै एक बिचारौं।
कूल बढ़ाय प्रवाह बढ़ै यों कृपा बल पाय कृपाहिं सहारौं॥३४९॥

कवित्त

हरिहू को जेतिक सुभाव हम हेरि लहे
दानी बड़े पै न माँगे बिन ढरै दातुरी।
दीनता न आवै तौलों बंधु करि कौन पावै
साँच सों निकट दूरि भाजैं देखि चातुरी॥
गुननि बँधे हैं निरगुन हू आनँदघन
मति बीर यहै गति चाहें धीर जातु री।
आतुर न ह्वै री अति चातुर विचार थकी
और सब ढीले कृपाही कैं एक आतुरी॥३५०॥

सवैया

हौ गुनरासि ढरौ गुनहीं गुन-हीनन तैं सब दोस प्रमानैं।
हाहा बुरौ जिन मानियैं जू बिन जाचें कहौ किन दानि बखानैं॥
लीजै बलाइ तिहारी कहा करैं हैं हमहूँ कहूँ रीझि बिकानैं।
बूझी कहैं कहा एक कृपा कर रावरे जो मन के मन मानैं॥३५१॥

कवित्त

रही ना कसरि कछू साधन के साधिबे की
श्रम तें बचाइ राखैं सुखनि सों सानि हैं।
लोक परलोक भ्रम भूलि गए सुधि आएँ
चरित अनेक एक एक रसखानि हैं॥
तापु बापुरेनि की सिरानी आय नैक ही मैं
छाए घनआनँद सुबात बस आनि हैं।
अब पहिचानि हमैं चाहियै न काहू संग
बिन पहिचानि कृपा लीन्हें पहिचानि हैं॥३५२॥

सवैया

जल मैं थल मैं भरि पूरि रही सम कै दिखरावति है बिसमैं।
सम रूप सदा गुनहीननि सों निजु तेज तें त्रासति ताप तमैं॥
घनआनँद जीवनरासि महा बरसै सरसै अरसै न गमैं।
तिन प्राननि संगम रंग अभंग कृपा दरसी सब ठौर हमैं॥३५३॥
कोऊ कृपा बल दूबरौ ह्वै करि क्यों नहिं साधन के सब साधौ।
लीन कै लोयन प्रान मनौ किन कोऊ समाधिहिं ऐंचि अराधौ॥
मेरे कृपा घनआनँद है रस भीजैं सदा जिहिं राधिका माधौ।
ता बिन ते श्रम सूल से हैं भ्रम भूल लहै सु न एक न आधौ॥३५४॥

कवित्त

साधन जितेक ते असाधन के नेग लगौ
साधन कौ महा मतसार गहि ताहि तू।

प्रेम सो रतन जातें पाइहै सहज ही में
वहै नाम रूप सु अनूप गुन चाहि तू ॥
राधिका चरन नख चंद त्यों चकोर कै सु
बाढ़तु अमंद यों तरङ्गनि उमाहि तू ।
बोहित बिसासहू चढ़ाइ लैहै सोई हाहा
कृष्ण कृपासिंधु मेरे मन अवगाहि तू ॥३५५॥

मिलन तिहारो अनमिलनि मिलावतु है
मिलें अनमिलें कछु करि न सकौं तरक ।
जियों तुमहीं तें बिन तुम्हें मरि मरि जावँ
एक गाँव वसि बैरी ऐसी राखिए मरक ॥
देखि देखि दूँढ़ौं दुख दसा देखि मिलौं हा हा
मीत औ बिसासी यहै कसकै नई करक ।
आनँद के घन हौ सुजान कान्ह खोलि कहौं
आरस जग्यो है कैसें सोई है कृपा ढरक ॥३५६॥

मन की जनाऊँ ताकें मोह नाहिं है हो कान्ह
जान राय गुनहि लगाऊँ कैसें दोष जू ।
बिना हीं कहें करौ तौ कहिबे की कहा रही
कहें क्यों न करौ दीन प्रान परितोष जू ॥
तुम्हें रिझवार जानि खीझ सों कहत प्यारे
हाहा कृपानिधि नेको मानिए न रोष जू ।
आनँद के घन भूमि भूमि कित तरसावौ
बरसि सरसि कीजै हेत लता पोष जू ॥३५७॥

सवैया

सुधि भूलि रही मिलि ज्यों जल पै अब यों मन क्योंकरि फूलिहै जू।
मिटिहै तबहीं तिहि ताप जबै सुधि आवन की सुधि भूलिहै जू॥
घनआनँद भूलनि की सुधि कौ मति बावरी ह्वै रही भूलिहै जू।
सुधि कौन करै इन बातन की कबहूँ तौ कृपा अनकूलिहै जू॥३५८॥

कवित्त

रसिक रँगीले भली भाँतिनि छबीले घन
आनँद रसीले भरे महा सुख-सार हैं।
कृपा घनधाम स्यामसुंदर सुजान मोद
सूरति सनेही बिना बूझें रिझवार हैं॥
चाह आलवाल औ अचाह के कलपतरु
कीरति मयंक प्रेम सागर अपार हैं।
नित हित संगी मनमोहन त्रिभंगी मेरे
प्राननि अधार नंदनंदन उदार हैं॥३५९॥

सवैया

हारे उपायि कहा करौं हाय भरौं किहि भाय मसोस यों मारै।
रोवनि आँसू न नैन न देखैं ऽरु मौन मैं व्याकुल प्रान पुकारै॥
ऐसी दसा जग छायो अँधेर बिना हित मूरति कौन सम्हारै।
है तिनहीं की कृपा घनआनँद हाथ गहै पिय पाइनि पारै॥३६०॥
जिहिं पाय की धूरि लौं जाय न पौन करै इहि गौन सु कौन समै।
तिहिं दूरि कितौ कहि औधि बिचारी बिचारि तू क्यों न कहूँ बिरमै॥

गति बूझि परी किन सूझत रे कहिबो न छिपै किहि घा सु गमै।
घनआनँद आहि कृपा नियरौ भजि लै रसमै तजि दै बिसमै॥३६१॥
औगुनहीं गुन मानि महा अभिमान भर्‌यो अति उत्तम नीच मैं।
नीरसता सरस्यो नित पैं अरस्यो न कहूँ सनि आरस कीच मैं॥
ऐसे अचेत जु साँच कियो भ्रम जीवन को सुख साधत मीच मैं।
ज्वाल जर्‌यो अब होत हर्‌यो हरि नेक कृपा घनआनँद सीच मैं ३६२

कवित्त

दीन्यो जग जनम जनाई जे जुगति आछी
कहा कहौं कृपा की ढरनि ढरहरे हौ।
आनँद पयोद ह्वै सरस सींचे रोम रोम
भाव निरभर लै सुभाव गहि भरे हौ॥
जीवन अधार प्यारे आँखिन मैं आइ छाइ
हाय हाय अंग अंग संग रस ररे हौ।
ऐसें क्यों सुखैए सोच तापनि हरो हे हरी
जैसें या पपीहा दीठि नीठिहू न परे हौ॥३६३॥
डगमगी डगनि धरनि छबिही के भार
ढरनि छबीले उर आछी बनमाल की।
सुंदर बदन पर कोटिन मदन वारौं
चित चुभी चितवनि लोचन बिसाल की॥
कालिह इहि गली अली निकर्‌यो अचानक ह्वै
कहा कहौं अटक भटक तिहिं काल की।

भिजई हौं रोम रोम आनँद के घन छाई
बसी मेरी आँखिन मैं आवनि गुपाल की ।।३६४।।

नंद को नवेलो अलवेलो छैल रंग भरयो
कालिह मेरे द्वार ह्वै कै गावत इतै गयौ ।
बड़े वाके नैन महा सोभा के सु ऐन आली
मृदु मुसुक्याय मुरि मो तन चितै गयौ ।।
तब तें न मेरे चित चैन कहूँ रंचकहू
धीरज न धरै सो न जानै धौं कितै गयौ ।
नैकुही मैं मेरो कछु मोपैं न रहन पायो
औचकही आइ भटू लूट सी बितै गयौ ।।३६५।।

जाके उर बसी रसमसी छवि साँवरे की
ताहि और बात नीकी कैसें करि लागिहै ।
चषनि चषक पूरि पियो जिन रूप-रस
कैसे सो गरल सनी सीखनि सों पागिहै ।।
आनँद को घन श्यामसुंदर सजल अंग
छाड़ि धूम धूँधरि सों कैसे कोऊ रागिहै ।
ये तो नैन वाही को वदन हेरें सीरे होत
और बात आली सब लागति ज्यों आगि है ।।३६६।।

हिलग अनोखी क्यों हूँ धीर न धरत मन
पीर पूरे हिय मैं धरक जागियै रहै ।
मिलें हूँ मिलें को सुख पायो न पलक एकौ
निपट विकल अकुलानि जागियै रहै ।।

मरति मरूरनि बिसूरनि उदेग बाढ़ी
चित चटपटी मति चिंता पागियै रहै।
ज्यों ज्यों बहरैए सुधि जी मैं ठहरैयै त्यों त्यों
उर अनुरागी दुख दाह दागियै रहै ॥३६७॥

सवैया

रैन दिना घुटिबो करैं प्रान झरैं अँखियाँ दुखियाँ झरना सी।
प्रीतम की सुधि अंतर मैं कसकै सखि ज्यों पँसुरीनि मैं गाँसी॥
चौचँदचार चवाइन के चहुँ ओर मचैं बिरचैं करि हाँसी।
यौं मरिए भरियै कहि क्यों सु परौ जनि कोऊ सनेह की फाँसी ३६८
अरी जो विधिना ब्रजवास न देतौ न नेह को गेह हियो करतौ।
अरु रूप ठगी अँखियाँ रचतौ नहीं रूखियै डीठि सों लै भरतौ॥
कहितौ लखि नंद कौ छैल छबीलो सु क्यों कोऊ प्रेम फँदा परतौ।
दुख कौलों सहैं घुटि कैसे रहैं भयो भाड़सो देखे बिना वरतौ ३६९
होते हरे हरे रूखे जो दूखें किते गई सो चिकनानि तिहारी।
मोह मढ़ी वतियाँ जु गढ़ी सु कढ़ी छतिया छिदि वंक विहारी॥
चूक पै मूक भएही बनै घनआनँद हूकनि होति दुखारी।
एहो कहा भयो कान्ह कठोर ह्वै एकहि वारि चिन्हारी विसारी ३७०

कवित्त

छवि सों छबीलो छैल आज भोर याही गैल
अतिही रँगीलो भाँति औचकही आइगौ।
चटक मटक भरि लटकि चलनि नीकी
मृदु मुसिक्यानि देखें मो मन विकाइगौ॥

प्रेम सों लपेटी कोऊ निपट अनूठी तान
मो तन चिताइ गाइ लोचन ढुराइगौ ।
तब ते' रही हौं घूमि झूमि जकि बावरी ह्वै
सुर की तरंगनि मैं रंग बरसाइगौ ॥३७१॥

छबि की निकाई एहो मोहन कन्हाई कछू
बरनी न जाई जो लुनाई दरसति है ।
बारिधि तरंग जैसे धुनि राग रंग जैसें
प्रति छिन अधिक उमंग सरसति है ॥
किधौं इन नैननि सराहौं प्रान प्यारे रूप
रेलहि सकेलैं तऊ दीठि तरसति है ।
ज्यों ज्यों उत आनन पैं आनँद सु ओप औरै
त्यों त्यों इत चाहनि मैं चाह बरसति है ॥३७२॥

सु'दर सरस लोनौ ललित रँगीलौ मुख
जोवन झलक क्योंहूँ कही न परति है ।
लोचन चपल चितवनि चाइ चोज भरी
भृकुटी सु ठौन भेद भाइनि ढरति है ॥
नासिका रुचिर अधरनि लाली सहजही
हँसनि दसन जोति जियरा हरति है ।
नखसिख आनँद उमंग की तरंग बढ़ी
अंग अंग आली छबि छलक्यो करति है ॥३७३॥

बैस है नबेलो अलबेलो ऊठ अंग अंग
झलकै अनंग रंग ऐंड़तु चलतु है ।

सहज छबीले दसननि मैं रची री बीरी
अधर तरंगनि सुधा से उझलतु है ॥
छके छुवे कानवारौ कोटि तीखे बान ऐसे
नैननि बिहँसि हेरि मैन निदलतु है।
कारी घुघरारी अलकनि के छलानि छैल
ताननि लुभाई फिर प्राननि छलतु है ॥३७४॥
रूप गरबीलो अरबीलो नंदलाड़िलो सु
दृग मग उतरयो परत आली उर मैं।
कानैनि ह्वै प्राननि निकासि लेत एरी बीर
ऐसी कछू गावत मधुर बंसी सुर मैं ॥
ढोरिए दरेरनि निदरि लाज देखिबे कों
पौरि पौरि याही रोरि माची ब्रज पुर मैं।
कैसे करि जीजे बसि कीजै कहा महा सोच
चारयो ओर चलत चवाव लघु गुर मैं ॥३७५॥
पीरे पीरे फूलनि की माला रचि हिए धारि
वारि वारि ताही कों सफल करैं काय कौं।
ऐसे धीर काँचे पूरे प्रेम रंग राचे बीर
पीरे फल चाखैं अभिलाषैं नीके दाय कौं ॥
डोलैं वन वन बावरे ह्वै साँवरे सुजान
धाइ धाइ भेटैं भावतो ही दिस वाय कौं।
उमगि उमगि घनआनँद मुरलिका मैं
गौरी गाइ ढौरो सौं बुलावैं गोरी गाय कौं ॥३७६॥

तेरें हित हेली अनुराग बाग वेली करि
मुरली गरज झूमि झूमि सरसतु है।
लोने अंग रंग जानि चंचला छटा सो पट
पोत कों उमगि लै लै हियें परसतु है॥
चाह के समीर की झकोरनि अधीर ह्वै ह्वै
उमड़ि घुमड़ि याही ओर दरसतु है।
लोचन सजल क्योंहूँ उघरैं न एकौ पल
ऐसें नेह नीर घनस्याम वरसतु है॥३७७॥
आई आन गावँ तैं नवेली पास पायसें सु
गुरुजन लाज के समाजनि मैं आवरी।
आनँद सरूप आली साँवरौ तक्यो तो कहूँ ।
डीठि के मिलत वढ़ि परयो चित चाव री॥
रीझि परवस पर बस न चलत कछू
ऐसे ही मैं होरी को रँगीलो वन्यो दाव री।
दिनही में तृन सम कानि के कपाट तोरि
धूँधरि अबीर की कौ मानति बिभावरी॥३७८॥
गोरी बाल थोरी वैस लाल पैं गुलाल मूठि
तानि कै चपल चली आनँद उठान सौं।
बायैं पानि घूँघट की गहनि चहनि ओट
चोटनि करति अति तीखे नैन बान सौं॥
कोटि दामिनीनि के दलनि दल मलि पाय
दाय जीति आइ झुंड मिली है सयान सौं।

मीड़िवे के लेखे कर मीड़िबोई हाथ लग्यो
सो न लगी हाथ रहे सकुचि सखान सौं ॥३७६॥

नीकी नई केसर को गारौहू गरब गारै
फीकी रारि गारि सो निहारें रूप गोरी कौ ।
चारु चुहचुही मँजी एडिनि ललाई लखें
चपरि चलतु च्वै बरन बूकी बोरी कौ ॥
हँसि वालैं कारिक कपूर सोंधे बारि ढारि
भारि भारि दीजै हो कलंक इन्हें चोरी को।
प्यारे घनआनँद के राग भाग फाग देखौ
रस भीजे अंगनि अनूठो खेल होरी कौ ॥३८०॥

सवैया

वैस नई अनुराग-मई सु भई फिरै फागुन की मतवारी ।
कौवरे हाथ रची मेंहँदी डफ नीके वजाइ हरै हियरा री ॥
साँवरे भौंर के भाय भरी घनआनँद सैनि मैं दोसति न्यारी ।
कान ह्वै पोपति प्रानप्रियैं मुख अंबुज च्वै मकरंद सी गारी॥३८१॥
पिय के अनुराग सुहाग भरी रति हेरैं न पावत रूप रफै ।
रिझवारि महा रसरासि खिलारि गवावति गारि वजाइ डफै ॥
अतिहीं सुकुवारि उरोजनि भार भरे मधुरी डग लंक लफै ।
लपटैं घनआनँद घायल ह्वै दृग पायल ह्वै गुजरी गुलफै ॥३८२॥

कवित्त

नई तरुनई भई मुख आछी अरुनई
सरद सुधाधर उदोत आभा रद की ।

अंग अति लोनी लसै ललित तिलोनी सारी
भाग भरे भाल दिपै बेंदो मृगमद की ॥
बोलै हो हो होरी घनआनँद उमंग बोरी
छैल मति छकै छबि हेरें रदछद की ।
रोरी भरि उठो गोरी भुज उठी सोहै मनौ
पराग सौं रली भली कली कोकनद की ॥३८३॥

सवैया

घूँघट ओट तकै तिरछी घनआनँद चोट सुघात बनावै ।
बाँह उसारि सुधारि बराबर बीर बराबरि ढूकति आवै ॥
कौंधि अचानक चौंध भरै चख चौक सु चौकति छाह न छ्वावै ।
बाल अनूठियै ऊढ गुलाल की मूठि मैं लालहि मूठि चलावै ॥३८४॥
दाँव तकै रस रूप छकै बिथकै गति पै अति चोपनि धावै ।
चौकि चलै ठठि छैल छलै सु छबीली छराथ लौं छाँह न छ्वावै ॥
घूँघट ओट चितै घनआनँद चोट बिना अँगुठाहिं दिखावै ।
भावती गो बस ह्वै रसिया हिय हाँसनि सौं सनि आँखि अँजावै ३८५
पिय नेह अछेह भरी दुति देह दिपै तरुनाई के तेह तुली ।
अतिही गति धीर समीर लगें मृदु हेमलता जिम जात डुली ॥
घनआनँद खेल अलेल हँसै बिलसै सु लसै लट भूमि भुली ।
सुठि सुंदर भाल पै भौंहनि बीच गुलाल की कैसी खुली टिकुली ३८६
आछी तिलौनी लसै अँगिया गसि चोवा की बेलि बिराजति लोइन ।
साँवरी पोति छरा छलकै छबि गोरी अँगेट लखें सम कोइ न ॥

एड़ो झँवैं लिनि ताकि थकै घनआनँद छैल छकै डग दोइन ।
भावती गौ पगिलावनि सों लगि डोलैं लला के लगौ हैं ई लोइन ॥३८७॥

कवित्त

चिहुटि जगाय अधराति ओट पाय आनि
जान भहराय सम्हराय मुँह चापि कैं ।
संकट सनेह को विचारें प्रान जात घुटे
वुरे नाह नाहर डरनि उठी काँपि कैं ॥
दिन होरी खेल की हराहर भरयो हो सुतो
भाग जागें सोयो निधरक नैन ढाँपि कैं ।
सुपने की संपति लों दुख दैन जान्यो घन-
आनँद कहाधों सुख पायो पंथ नापि कैं ॥३८८॥

भावती सहेट अंक भरि भेटि संक मेटि
रंक थाती छाती धरि रहे आप आप कौं ।
निपट अनूठी दसा हेरत हिरानी वीर
वानियौं सिरानी क्यौं बखानियै मिलाप कौं ॥
आगे कहा वीती भई तबही सुरति राती
जैसें सर छूटि न मिलत फिर चाप कौं ।
सोभा रस चाखैं अभिलाखैं हुती आँखैं घन-
आनँद उछरि ओछी फूली भूली जाप कौं ॥३८९॥

सवैया

प्रेम अमी मकरंद भरे वहुरंग प्रसूननि की रुचि राजी ।
देखत आज वनै वनराजहिं रूप अनूपम ओप विराजी ॥

राग रची अनुराग जची सुनि है घनआनँद बाँसुरी बाजी।
मैन महीप बसंत समीप मतौ करि कानन सैन है साजी॥३९०॥

कवित्त

एड़ी तें सिखा लौं है अनूठिए अँगेट आछी
रोम रोम नेह की निकाई मैं रही रसनि।
सहज सु छवि देखें दबि जाहिं सबै बाम
बिनही सिँगार औरै बानिक बिराजै बनि॥
गति लै चलत लखें मतिगति पंगु होति
दरसति अंग रंग माधुरी बसन छनि।
हँसनि लसनि घनआनँद जुन्हाई छाई
लागै चौंध चेटक असेट ओपी भौंहैं तनि॥३९१॥

सवैया

पातरे गात किए नवसात निकाई सों नाक चढ़ाएई बोलै।
राचे महावर पायनि त्यों तकि चायनि आइ गरुरोरेई (?) डोलै॥
स्यामहिँ चाहि चलै तिरछी मनु खेलै खिलारि न घूँघट खोलै।
आली सों आनँद बातनि लागि मचावति घातनि घामरि घोलै॥३९२॥
हरि नेह छकी तरुनाई के तेह सु गेह में लाज सों काज करै।
मिस ठानि चलै रसिया रहठानि* त्यों आनि भटू अँखियानि अरै॥
घनआनँद रूप गरूर भरी धरनी पर सूधें न पाय परै।
पिय को हिय ताहि लखें अभिलाखनि लाखनि लाखनि भाँति भरै ३९३

---

* रहठानि = रहने का स्थान।

कवित्त

रही मिलि भीति पै सभीति लोक लाज भरी
रीझी कहूँ स्यामै देखि दसा ताकी को कहै।
फंद की मृगी लौं छंद छूटिबे को नैको नाहिं
चारयो ओर कोरि कोरि भाँतिन सों रोक है॥
मोहन को बोल सुनें धुनै सीस मन ही मैं
धुनै सोच भारी गुनै गहि बूझै सो कहै।
उघरै न वास गुरुजन आसपास घन-
आनँद विनास कहा अहा नेह झोक है ॥३९४॥

तरुनाई वारुनी छकनि मतवारे भारे
झुकि धुकि धाइ रीझि उरझि गिरत हैं।
सम्हरि उठत घनआनँद मनोज ओज
निफरत बावरे न लाजनि घिरत हैं॥
सुघराई सान सों सुधारि मसि असि कसि
कर ही में लिए निस बासर फिरत हैं।
तेरे नैन सुभट चुहट चोट लागें बीर
गिरधर धीरता के किरचा करत हैं ॥३९५॥

सवैया

चाल निकाई लखें बिलखै पचि पंगु मरालनिमाल बिसूरति।
पाय परै न परै मति पाय सचो तरसै थरसै न कछू रति॥
घूँघट वीच मरीचिनि की रुचि कोटिक चंदन को मद चूरति।
लाजन सों लपटी घनआनँद साजन के हिय मैं हित पूरति॥३९६॥

कवित्त

सिसुताई निसि सियराई वाल ख्यालनि मैं,
जोवन विभाकर उदोत आभा है रली ।
गमागम वस भयो रस को सुभागमही
आगें तें अधिक अव लागन लगी भली ॥
सकुच विकच दसा देखौ मन आई मनौ
चाहत कमल होन कौन रूप की कली ।
वड़भागी रागी चलि ऐहे अलि आनँद सों
आँखिनि सिरैहै रस लैहै भावतो अली ॥३६७॥

अलप अनूप लटपटी सु लपेटी रूप
अलग लगी सी तामें केती सूध वाँक है ।
कोटिक निकाई मृदुताई को अवधि सोधौं
कैसें कै रची है जामैं विधि वुधि राँक है ॥
दीठि नीठि आवै कोऊ कहि क्यों वतावै जहाँ
वातहूँ के वोझ हिय होत नमि साँक है ।
चलि चित चोरै मुरि मनहि मरोरै सुठि
सुभग सुदेस अलवेली तेरी लाँक है ॥३६८॥

लाली अधरान की रुचिर मुसक्यान समै
सव मुख भोरही सिँदूरा की सी फैल है ।
जोवन गरूर गरुवाई सों भरे विसाल
लोचन रसाल चितवनि वंक छैल है ॥

सुंदर सलोने लोने अंगनि की दुति आगें
मन मुरझानो मंद मैन को सो मैल है।
दुहूँ हाथ अंसनि तें पीरो पट ओढ़े लखि
ठाढ़ो सिंहपौरि रौरि परि थाकी गैल है ॥३९९॥

मंजु मोर चंद्रिका सहित सीस साँवरे के
कैसी आछी फबी छबि पाग पँचरंग की।
दारिम कुसुम के बरन झीने नीमा मधि
दीपति दिपति सु ललित लोने अंग की ॥
मंजन करत तहाँ मन्न बनितान के निहारि
मोती मालहिं बिचारि धार गंग की।
आनँदघनि भरो खरो मुरली बजावै मीठी
धुनि उपजावै राग रागनी तरंग की ॥४००॥

सवैया

नैन के सैन में कोटिक मैन लजै रु भजै तजि कै सर पाँचनि।
आनँद मैं मुसक्यानि लखें पघिल्योई परै चित चाह की आँचनि॥
ता पिय के हिय कों हँसि हेरि लई जु ठई सु नई गति नाचनि।
नूपुर बीन सों लीन कै प्यारी प्रवीन अधीन किए सुर साँचनि॥४०१॥

जात नए नए नेह के भार बिंधे उर ओर घनी बरुनी के।
आनँद मैं मुसक्यान उदोत मैं होत है रोल तमोल अमी (?) के॥
भोर की आवनि प्रान अँकोर किए तितही चलि आए जहीं के।
डारियै जु तृन तोरि कै लालन औौर दिनान तें लागत नीके॥४०२॥

नैन किए तरजो* दिन रैन रती वल कंचन रूपहिं तौलैं।
वारह वानि वनी ठनी षोड़स प्यारी के प्रेम छकी नित डोलैं ॥
श्रीवनरानी के छत्र की छाँह करें सुख वारिधि माहिं कलोलैं।
चाड़ न काहू की लाड़ लड़ी हम यों री गरूर भरी नहिं वोलैं ॥४०३॥

पूरन चंद के चूरन को तटधूरि हँसै सु कपूर किती पति।
जौ मघवा मणि को सत सोधि वयें तो कहा परसै पय की मति ॥
स्याम के संग पगी सव अंग लसै रसरंग तरंगनि की गति।
आनँद मंजन आँखिन अंजन होत लखें सावता दुहिता अति ॥४०४॥

छैल नए नित रोकत गैल सु फैलत काँपैं अरैल भए हौ।
लै लकुटी हँसि नैन नचावत वैन रचावत मैन तए हौ ॥
लाज अँचै विन काज खगौ तिनहीं सों पगौ जिन रंग रए हौ।
ऐंड़ सवै निकसैगी अवै घनआनँद आनि कहा वनए हौ ॥४०५॥

हैं वनए सुनए न कछू उघटै कत ऐंड़ अमैड़ अमानी।
वैन वड़े वड़े नैननि के वल वोलति क्यों हौ इती इतरानी ॥
दान दिएँ विन जान न पाइहै आइहै जो चलि खोरि विरानी।
आगें अछूती गई सु गई घनआनँद आज भई मनमानी ॥४०६॥

जाइ करौ उहि माइ पै लाड़ वढ़ाइ वढ़ाइ किए इतने जिन।
भीत की दौरनि खोरनि है सठता हठ ओरनि सों समझैं विन ॥
दान न कान सुन्यो कवहूँ कहूँ काहे को कौन दियो सु लयो किन।
टोड़िक† हौ घनआनँद डाँटत काटत क्यों नहीं दीनता सों दिन ॥४०७॥

---

* तरजी = तराजू।

† टोड़िक = तुंदिक = भिखमंगा। भुक्खड़। पेटू।

दैहिंगी दान जु ऐहैं इतै नहीं पैहैं अबै सुकिए को सबै फल।
बाबा दुहाई सुहाई कहौ जिन जानि कैं मान छुटै न किए छल॥
एकहि बोल दै जाहु चली झगरो सगरो मिटि बात परै सल।
नाँव परयो अबला घनआनँद ऐंठनि ग्वैंठनि भौंह किते बल॥४०८॥
जीभ सँभारि न बोलत हौ मुँह चाहत क्यों अब खायो थपेरें।
ज्यों ज्यों करी कछु कानि कनौड़ त्यों मूड़ चढ़े बढ़े आवत नेरें॥
खाइ कहा फल माइ जने जिय देखौ बिचारि पिता तन नेरें।
कंज कनेरहिं फेर बड़ो घनआनँद न्यारे रहौ कहौं टेरें॥४०९॥
लेहु भया गहि सीसन तें दधि की मटुकी अब कानि करौ कित।
जैसे सों तैसे भए ही बनै घनआनँद धाइ धरौ जित की तित॥
एकहि एक बराबरि जाहु करौ अपने अपने चित को हित।
फेरिए क्यों दुहूँ हाथ सकेरिए जो बिधिना घर बैठें दयो बित॥४१०॥
गोद भरैं त्रितु धाइ कै जाइ धरौ गहि मोद सों माइ के आगै।
पेट परे को लखै फल ज्यों उपजे हौ सपूत सु भागनि जागै॥
बाटिहै बोलि बधाई कमाई की जाति में जातें महा पति पागै।
बास दिएँ को यहै फल है घनआनँद जो छिन दोस न लागै॥४११॥
नंदलला रससागर सों ललिता रिस की सलिता न बढ़ैयै।
नागरि आगरि हौ बहु भाँति तुम्हैं अब कौन सी बात पढ़ैयै॥
चोखनि तोखनि हीं उपजै घनआनँद क्यों गुन दोष कढ़ैयै।
नेकु टरैं सुधरै सब काज अकाज इतौ अपलोक चढ़ैयै॥४१२॥
सुनि रे मधुमंगल दानकथा सु जथा रुचि होत ब्रथा हठ है।
कर जोड़ि दिखाय दया मृदु ह्वै चलिए बहु भाँति बिनै करिहै॥

घनआनँद ओठ उमेठ किए कहिए कहा पै अब पैयत है।
रिझवारन पै गुन गाय रिझावहु देहि लली को निछावरि है ॥४१३॥
स्याम सुजान सबै गुनखानि बजावत बैन महा सुर साचनि।
अंग त्रिभंग अनंग भरे दृग भौंह नचाइ नचावत नाचनि॥
कीरतिदा कुल मंडन ज्यों निरखें भरि नैन बढ़ै सुखमाचनि।
दानहू दै चुकी है घनआनँद रीझ न हाँ रुकिहै हित आँचनि॥४१४॥
आवौ सखी चलि कुंज मैं वैठि लखैं घनआनँद की सुघराई।
पैठन दैहिं न एक सखै अकिले इन्हें छेकि करैं मन-भाई॥
भावती टेक रही बहु भाँति किए न बनै अति ही कठिनाई।
लेति हौं राधे बलाय कह्यौ करि आज मनौ इतनी हम पाई॥४१५॥
राजदुलार भरी इकसार सुभाय मथें मन डारति पी कौ।
कुंज चली सुखपुंज अली सँग भाल बिराजत लाज को टीकौ॥
लोचन कोरनि छोरनि छ्वै मुसक्यानि मैं ह्वै दरसै हित ही कौ।
बोलनि बापुरी डारियै वारि लखें घनआनँद रूप लली कौ॥४१६॥
रंग रह्यो सु न जात कह्यो उमह्यो सुखसागर कुंज मैं आएँ।
केलि पर्‌यो रस को झगरो अतिहीं अगरो निबरै न चुकाएँ॥
काहू सम्हारि रही न भटू तनकौ मन मैं घनआनँद छाएँ।
प्रेम पगे रिझवारन के तहाँ रीझि कै रीझहिं लेत बलाएँ॥४१७॥
आँखि हीं मेरी पै चेरी भईं लखि फेरि फिरैं न सुजान की घेरी।
रूप छकीं तितही बिथकीं अब ऐसी अनेरी पत्याति न नेरी॥
प्रान लै साथ परीं पर हाथ बिकानि की बानि पै कानि बखेरी।
पायनि पारि लई घनआनँद चाइनि बावरी प्रीति की बेरी॥४१८॥

रूपनिधान सुजान लखैं बिन आँखिन दीठि को पीठि दई है।
ऊपलि ज्यों खरकै पुतरीन मैं सूल की मूल सलाक भई है॥
ठौर कहूँ न लहै ठहरानि को मूँदे सदा अकुलानि मई है।
बूड़त ज्यों घनआनँद सोच दई बिधि व्याधि असाध नई है ॥४१९॥
रसमूरति स्याम सुजान लखे जिय जो गति होति सुकासों कहौं।
चित चुंबक लोह लों चायनि च्वै चुहँटैं उहँटैं नहिं जेतौ गहौं॥
बिन काज या लाज समाज के साजनि क्यों घनआनँद देह दहौं।
उर आवति यों छबि छाँह ज्यों हौं ब्रज छैल की गैल सदाई रहौं।४२०।
मुख हेरि न हेरत रंक मयंक सु पंकज छीवति हाथन हौं।
जिहिं बानक आयो अचानक ही घनआनँद बात सुकासों कहौं॥
अब तौ सपने निधि लों न लहौं अपने चित चेटक आँच दहौं।
उर आवत यों छवि छाँह ज्यों हौं ब्रज छैल की गैल सदाई रहौं।४२१।
रस सागर नागर स्याम लखे अभिलाषनि धार मझार बहौं।
सुन सूझत धीर को तीर कहूँ पचि हारि कै लाज सिवार गहौं॥
घनआनँद एक अचंभो बड़ो गुन हाथहूँ बूड़त कासों कहौं।
उर आवत यों छबि छाँह ज्यों हौं ब्रज छैल की गैल सदाई गहौं।४२२।
सजनी रजनी दिन देखे बिना दुख पागि उदेग की आगि दहौं।
अँसुवा हिय पै पिय धार परै उठि स्वास भरै सुठि आस गहौं॥
घनआनँद नीर समीर बिना बुझिबे को न और उपाय लहौं।
उर आवत यों छवि छाँह ज्यों हौं ब्रज छैल की गैल सदाई रहौं।४२३।
मन पारद कूप लौं रूप चहैं उमहै सु रहै नहिं जेतो गहौं।
गुन गाड़नि जाइ परैं अकुलाइ मनोज के ओजनि सूल सहौं॥

घनआनँद चेटक धूप में प्रान घुटैं न छुटैं गति कासों कहौं।
उर आवत यों छबि छाँह ज्यों हौं ब्रज छैल की गैल सदाई गहौं।४२४।

कवित्त

तरसि तरसि प्रान जान मन दरस कों
उमहि उमहि आनि आँखिनि बसत हैं।
विषम विरह कें बिसिपि हिएँ घायल ह्वै
गह्वर घूमि घूमि सोंचनि सहत हैं॥
सुमिरि सुमिरि घनआनँद मिलन सुख
करन सों आसापट कर लै कसत हैं।
निसि दिन लालसा लपेटें ही रहत लोभी
मुरझि अनोखी उरझनि में गसत हैं॥४२५॥

मेरी मत बावरी ह्वै जाइ जान राय प्यारे
रावरे सुभाय के रसीले गुन गाय गाय।
देखन के चाय प्रान आँखन में झाँकैं आय
राखों परचाय पै निगोड़े चलैं धाय धाय॥
बिरह विषाद छाय आँसुन की झरी लाय
मारैं मुरझाय मैन द्यौस रैन ताय ताय।
ऐसे घनआनँद विहाय न बसाय हाय
धीरज बिलाय बिललाय कहौं हाय हाय॥४२६॥

ललित तमालनि सों बलित नवेली वेलि
केलिरस झेलि हँसि लह्यो सुखसार है।

मधुर विनोद श्रम जलकन मकर
मलय समीर सोई मोदनु दुगार है ॥
वन की बनक देखि कठिन बनी है आनि
वनमाली दूर आली सुने को पुकार है ।
विन घनआनँद सुजान अँग पीरे परि
फूलत वसंत हमैं होत पतझार है ॥४२७॥

सवैया

रूपनिधान सुजान सखी जब तें इन नैननि नीके निहारे ।
डीठि थकी अनुराग छकी मति लाज के साज समाज बिसारे ॥
एक अचंभो भयो घनआनँद हैं नितही पल पाट उघारे ।
टारें टरैं नहीं तारे कहूँ सुलगे मनमोहन मोह के तारे ॥४२८॥
मेरोई जीव जो मारत मोहिं तो प्यारे कहा तुमसों कहनो है ।
आँखिनहूँ पहिचान तजी कछु ऐसोही भागनि को लहनो है ॥
आस तिहारियै हौं घनआनँद कैसें उदास भएँ रहनो है ।
जान ह्वै होत इतै पै अजान जौ तौ विन पावकहीं दहनो है ॥४२९॥
आस लगाय उदास भए सु करी जग मैं उपहास कहानी ।
एक विसास की टेक गहाय कहा वस जो उर और ही ठानी ॥
ए हो सुजान सनेही कहाय दई कित बोरत हौ विन पानी ।
यों नघरे घनआनँद छाय सुहाय परी पहिचानि पुरानी ॥४३०॥
अँगुरीन लौं जाइ लुभाइ तहीं फिरि आय लुभाइ रहै तरवा ।
चपि चायनि चूर ह्वै पैंड़नि ह्वै धपि धाइ छकै छवि छाइ छवा ॥

घनआनँद यों रस रीझनि भीजि कहूँ बिसराम बिलोक्यो न वा।
अलबेली सुजान के पायन पानि परयो न टरयो मन मेरो भवा ॥४३१॥
गुन बाँधि लियो हिय हेरतहीं फिर खेल कियो अतिहीं उरझै।
गसिगो कसि प्रीति के फंदनि मैं घनआनँद फंदनि क्यों सुरझै॥
सुधि लेत न भूलिहूँ ताको सुजान सुजानि सकौं न दुरी गुरझै॥
अब याहीं परेपें उदेग भरयो दुख ज्वाल जरयो जुरझै मुरझै॥४३२॥

कवित्त

निरखि सुजान प्यारे रावरो रुचिर रूप
बावरो भयो है मन मेरो न सिखैं सुनै।
मति अति छाकी गति थाकी रतिरस भीजि
रीझ की उझलि घनआनँद रह्यौ उनै॥
नैन बैन चित चैन है न मेरे बस मेरी
दसा अचिरज देखौ बूड़ति गहे गुनै।
नेह लाइ कैसे अब रूखे हूजियतु हाय
चंदही के चाय ह्वै चकोर चिनगी चुनै॥४३३॥
काहू कंजमुखी के मधुप ह्वै लुभाने जानैं
फूले रस भूले घनआनँद अनतहीं।
कैसें सुधि आवै बिसरें हूँ हो हमारी उन्हैं
नए नेह पागे अनुराग्यो है मन तहीं॥
कहा करैं जी तैं निकसति न निगोड़ी आस
कोनै समुझी ही ऐसी बनिहै बनतहीं।

सुंदर सुजान बिन दिन हीन तम सम
वीतै तमी तारनि कतारनि गनतहों ॥ ४३४ ॥

सवैया

जा मुख हांसी लसी घनआनँद कैसें सुहाति बसी तहाँ नासी ।
जौ हिय तें हतियै न हितू हँसि बोलन की कत कीजत हाँसी ।
पोपि रसै जिय सोखत क्यों गुन बाँधिहूँ डारत दोस की फाँसी ।
हाहा सुजान अचंभो भयान ज्यों भेद कै गाँस हि बेधत गाँसी ॥४३५॥
आड़ न मानति चाड़ भरी उघरीही रहै अति लाग लपेटी ।
ढीठि भई मिलि ईठ सुजान न दैहि क्यों पीठ जु डीठि सहेटी ॥
मेरी है मोहि कुचैन करै घनआनँद रोगिनि लौं रहै लेटी ।
ओछी बड़ी इतराति लगी मुँह नेकौ अघाति न आँखि निपेटी ॥४३६॥
चाह बढ़्यो चितचारू चढ़्यो सो फिरै तितही इत नेकु न धीजै ।
नैन थकै छवि पान छकै घनआनँद लाज त्यों रीझनि भीजै ॥
मोह मैं आवरी है बुधि बावरी सीख सुनै न दसा दुख छीजै ।
देह दहै न रहै सुधि गेह की भूलिहू नेह को नाँव न लीजै ॥४३७॥
रूप लुभाइ लगी तब तौ अब लागति नाहिं सुभाइ निमेखौ ।
जो रसरंग अभंग लह्यो सुरह्यो नहीं पेखियै लाखनि लेखौ ॥
हौं घनआनँद एहो सुजान तऊ ये दहै दुखदाई परेखौ ।
आँखिनि आपनी आंखिनि देख्यो कियो अपनो सपनेऊ न देखौ ४३८
फैलि रही धर अंबर पूरि मरीचिनि वीचिनि संग हिलोरति ।
भौंर भरी उफनात खरी सु उपाव की नाव तरेरनि तोरति ॥

क्यों बचियै भजिहूँ घनआनँद बैठि रहें घर पैठि ढढोरति ।
जोन्ह प्रलै के पयोनिधि लौं बढ़ि बैरनि आज वियोगिनि बोरति।४३६।

प्रान पखेरू परे तरफैं लखि रूप चुगो जु फँदे गुन गाथन ।
क्यों हतिए हित पालि सुजान दया बिन व्याध बियोग के हाथन ।।
सालत बान समान हियैं सुलहे घनआनँद जे सुख साथन ।
देहु दिखाइ दई मुखचंद लग्यो अब औधि दिवाकर आथन* ।४४०।

कवित्त

जल बूड़ि जरै डीठि पाइहूँ न सूझि परै
अमी पिएँ मरैं मोहिं अचिरज अति है ।
चीर सों न ढकैं बानी बिन बिथा बकैं
दौरि परैं न निगोड़ी थकैं बड़ी भूतागति है ।।
लगें तारे खुलैं आँखैं प्यारी त्यों न पगै पिय
नींद भरी जगैं इन्हैं अनोखियै रति है ।
गुन बँधैं कुल छूटै आपौ दै उदेग लूटैं
उत जुरें इत टूटैं आनँद बिपति है ।।४४१।।

अंजन गंजत डीठि मंजन मलीन करै
रंजन समाज साज सजै उर पीर को ।
भूषन दगत गुन दूषन लगत गात
पूषन† मुकुर अंग सोखै संग पीर को ।।
जीवौ विषज्वाल जीतै बीतै घनआनँद यौं
बन भौन कौन है धरैया अब धीर को ।

---

* आथन = अथवना, अस्त होना । † पूषन = सूर्य ।

रंग रस बरस सुजान के दरस बिन
तीर तें सरस बहै परस समीर को ॥४४२॥
बहुत दिनानि की अवधि आस पास परे
खरे अरबरनि भरे हैं उड़ि जान कौं।
कहि कहि आवन सँदेसौ मनभावन कौ
गहि गहि राखत हैं दै दै सनमान कौं॥
झूठी बतियान के पत्यान तें उदास ह्वै कै
अब न घिरत घनआनँद निदान कौं।
अधर लगे हैं आनि करिके पयान प्रान
चाहत चलन ये सँदेसौ लै सुजान कौं ॥४४३॥

सवैया

जोरि कै कोरिक प्राननि भावते संग लिए अँखियान मैं आवत।
भीजे कटाच्छनि सों घनआनँद छाइ महारस को बरसावत॥
ओट भएँ फिर या जिय की गति जानत जीवनै ह्वै जु जनावत।
मीत सुजान अनूठियै रीति जिवाइ कै मारत मारि जिवावत।४४४।
लाखनि भाँति भरे अभिलाखनि कै पल पाँवड़े पंथ निहारैं।
लाड़िली आवनि लालसा लागि न लागत हैं मन मैं पन धारैं॥
यों रस भीजे रहैं घनआनद रीझै सुजान सुरूप तिहारैं।
चायनि बावरे-नैन कबै अँसुवानि सों रावरे पाय पखारैं ॥४४५॥
सोवत भाग जगे सजनी दिन कोटिक या रजनी पर वारे।
नेह निधान सुजान सजीवन औचकही उर बीच पधारे॥

सौतिन तैं पिय पाइ इकौसैं भरे भुज सोच सकोच निवारे ।
वैरिनि डीठि जरौ घनआनँद यों जिय लै पल पाट उघारे ॥४४६॥
ह्वै निसवाद लजात रसौ मनु तेरें सुभाव मिठासहि पागैं ।
आन न जान कहौं तुव आनन लागि न आन सों लोयन लागैं ॥
चैन मैं सैन करे सब ओर तें भावते भाग जौ तो मिलि जागैं ।
रंग रचै सुठि संग सचै घनआनँद अंगनि क्योंकरि त्यागैं ॥४४७॥

कवित्त

दरसन लालसा ललक छलकनि पूरि
पलक न लागै लगि आवनि अरबरीं ।
सुंदर सुजान मुखचंद को उदै विलोकें
लोचन चकोर सेवैं आनँद परब री ॥
अंग अंग अंतर उमंग रंग भरि भारी
बाढ़ी चोप चुहल की हिय मैं हरबरी ।
बूड़ि बूड़ि तरें औधि थाह घनआनँद यों
जीव सूक्यो जाइ ज्यों ज्यों भीजत सरबरी ॥४४८॥
देखें अनदेखनि प्रतीति पेखियति प्यारे
नीठि न परत जानि डीठि किधों छल है ।
दीपति समीप की विछोह माहिं पोहियति
आरसि दरस लों परस ध्यान जल है ॥
निपट अटपटी दसा सों चटपटी बीच
बूड़त विचारौ जीव थाह क्योंहूँ न लहै ।

कहा कहौं आनँद के घन जान राय हौ जू
मिलेहूँ तिहारे अनमिले की कुशल है ।।४४६।।
तूही गति मेरें मति नौछावरि करौ तेरें
रूप हेरें चोप कूप गिरो लेजु लाज की ।
सुनिहौ सुजान आन तेरीयै पखेरू प्रान
परे प्रीति पास आस तोहित जिहाज(?) की ।।
कीजै मन भाई इती कही मैं जताई तेरे
हाथही बड़ाई घनआनँद सुकाज की ।
हा हा दीन जानि याकी वीनती ये लीजै मानि
दीजै आनि औषधि बियोग रोगराज की ।।४५०।।
सबसों चिन्हारिहिं बिसारि पल टारे नाहिं
एक टक जोहिबे की जक जागियै रहै ।
देखि देखि सुख भोइ हँसि परै रोइ रोइ
चौंकै चकि चाहनि मैं चिंता पागियै रहै ।।
तोरि लाज साँकरैं विरैहै सोभा साँकरैं
सु क्योंहूँ न निकाल आसपास खागियै रहै ।
ऐसो कछू वानि चाह वावरे हगनि आली
दरस मुकुंद लालसाई लागियै रहै ।।४५१।।
हित कै हँकारौ तौ हुलासनि सहनि धावै
अनपि विडारौ तो विचारौ न कछू कहै ।
पाल्यो प्यार को तिहारो नीकैं तुमही विचारो
हाहा जनि टारौ याहि द्वारौ दूसरौ न है ।।

आनँद के घन हौ सुजान आन दियैं कहौं
मान दै न कीजै मान दान दीजियै यहै ।
देखें रूप रावरो भयो है जीव बावरौ
उमंगनि उतावरौ ह्वै अंगनि स्यों दहै ॥४५२॥

सवैया

पीर की भीर अधीर भईं अँखिया दुखिया उमगीं झरना लौं ।
रोकि रही उर मैं उवही इन टेक यही जु गही सु दही हौं ॥
भीजि वरै घिय धार परैं हिय आँसुनि यों पजरै बिरहा दौं ।
आनँद के घन मीत सुजान ह्वै प्रीति मैं कीनी अनीति कहा गौं ।४५३।

कवित्त

बिरह दवागिनि उठी है तन वन बीच
जतन सलिल कै सु कैसें नीचियै परै ।
अन्तर पुढ़ाई कटै चटकत साँस बाँस
आस लाँवी लताहू उदेग झर सों झरै ॥
दुख धूम धूँधरि मैं घिरे घुटैं प्रान खग
अब लों बचे हैं जो सुजान तन कौ ढरै ।
बरसि दरस घनआनँद अरस छाड़ि
सरस परस दै दहनि सबही दरै ॥४५४॥
रावरे गुननि बाँधि लियो हियो जान प्यारे
इते पै अचंभो छोरि दीनी जु सुरति है ।
उघरि नचाइ आपु चाय मैं रचाइ हाय
क्यों करि बचाइ डीठि यों करि दुरति है ॥

तुमहूँ तें न्यारी है तिहारी प्रीति रीति जानी
ढीलेहूँ परें पै हिएँ गाँठि सी घुरति है ।
कैसें घनआनँद अदेसनि लगैयै खोरि
लेखनि लिखार की परेखनि मुरति है ॥४५५॥

सवैया

आपुन अंगनिअंग को रंग भरयो रिस आनि कैं अंग पजारतु ।
रावरे चैन को ऐन हियो है सु रैन दिना यह मैन उजारतु ॥
और अनीत कहाँ लौं कहौं घनआनँद जो कछू आपदा पारतु ।
कैसे सुहाति सुजान तुम्हैं हितु मानि दई कोऊ ऐसें बिसारतु ।४५६।
हित भूलि न आवत है सुधि क्योंहूँ सु योंहूँ हमैं सुधि कीजतु है ।
चित भूलतौ भूलत नाहिं सुजान ज्यों चंचल ज़्योंकछु धीजतु है ॥
दृढ़ आस की पासनि कंठ तैं फेरि कै घेरि उसासनि लीजतु है ।
अब देखियै कौलौं घिरै घनआनँद आव कों दाव सो दीजतु है॥४५७॥
सुख चाहनि चाह उमाहन की घनआनँद लागी रहैई झरै ।
मनभावन मीत सुजान सँजोग बने बिन कैसें बियोग टरै ॥
कबहूँ जो दईगति सों सपनौ सो लखौं तो मनोरथ भोज भरै ।
मिलिहूँ न मिलाप मिलै तन कौ उर की गति क्यों करि न्योरि परै।४५८
दुख धूम की धूधरि मैं घनआनँद जौ यह जीव घिरयो घुटिहै ।
मनभावन मीत सुजान सों नातौ लग्यो तनको न तऊ टुटिहै ॥
मन जीवनप्रान को ध्यान रहै इक सोच बच्यो न सोऊ लुटिहै ।
बुरि आस की पास उसास गरें जु परी सु मरेंहूँ कहा छुटिहै ॥४५९॥

ए मन मेरे कहा करी तैं तजि दीन चल्यो जु प्रवीन है तो सौ ।
ल्यायो न काहू वै आँखि तरैं हौं कहूँ कबहूँ करि तेरौ भरोसौ ॥
मीत सुजान मिल्यो सु भली अब बावरे मोसो भर्यो कित रोसौ ।
सोचत हौ अपने जिय मैं सपने न लहौ घनआनँद दोसौ॥४६०॥
रीझि बिकाइ निकाइ पै रीझि थकी गति हेरत हेरन की गति ।
जोवन घूमरे नैन लखें मतवारी भई मति वारि कै मौ मति ॥
बानी बिलानी सुबोलनि मैं अनचाहनी चाह जिवावति है हति ।
जान के जीवन जानि परै घनआनँद याहू तै होति कहा अति॥४६१॥

कवित्त

कोऊ मुख मोरौ जोरौ कोरिक चबाव क्यों न
तोरौ सब कोऊ करि सोरो मेरें को सुनै ।
नेहरस हीन दीन अंतर मलीन लीन
दोसही मैं रहैं गहैं कौन भाँति वे गुनै ॥
रूप उजियारे जान प्यारे पर प्रान वारे
आँखिन के तारे न्यारे कैसे धौं करौं उनै ।
टरै नहीं टेक एक यही घनआनँद जौ
निंदक अनेक सीस खीसनि परे धुनै ॥४६२॥

सवैया

रावरे रूप की रीति नई यह जोहन राखतु लै गहि गोहन ।
जान न देत कहूँ कबहूँ तिन लेत है हौ करि ठोवी को दोहन?॥
सूझ सबै जु टरै घनआनँद बूझि परै न महा मति मोहन ।
देखै कहा जो न दोसौ इते पर हाहा सुजान तिहारियै सौंहन ॥४६३।

तुमहूँ तें न्यारी है तिहारी प्रीति रीति जानी
ढोलेहूँ परें पै हिएँ गाँठि सी घुरति है।
कैसें घनआनँद अदोसनि लगैयै खोरि
लेखनि लिखार की परेखनि मुरति है ॥४५५॥

सवैया

आपुन अंगनिअंग को रंग भरयो रिस आनि कैं अंग पजारतु।
रावरे चैन को ऐन हियो है सु रैन दिना यह मैन उजारतु॥
और अनीत कहाँ लौं कहौं घनआनँद जो कछू आपदा पारतु।
कैसे सुहाति सुजान तुम्हैं हितु मानि दई कोऊ ऐसें बिसारतु।४५६।
हित भूलि न आवत है सुधि क्योंहूँ सु योंहूँ हमैं सुधि कीजतु है।
चित भूलतौ भूलत नाहिं सुजान ज्यों चंचल ज्योंकछु धीजतु है॥
दृढ़ आस की पासनि कंठ तैं फेरि कै घेरि उसासनि लीजतु है।
अब देखियै कौलौं घिरै घनआनँद आव को दाव सो दीजतु है॥४५७॥
मुख चाहनि चाह उमाहन की घनआनँद लागी रहैई भरै।
मनभावन मीत सुजान सँजोग बने बिन कैसें बियोग टरै॥
कबहूँ जो दईगति सों सपनौ सो लखौं तो मनोरथ भोज भरै।
मिलिहूँ न मिलाप मिलै तन कौ उर की गति क्यों करि न्योरि परै।४५८
दुख धूम की धूधरि मैं घनआनँद जौ यह जीव घिरयो घुटिहै।
मनभावन मीत सुजान सों नातौ लग्यो तनको न तऊ टुटिहै॥
मन जीवनप्रान को ध्यान रहौ इक सोच बच्यो न सोऊ लुटिहै।
घुरि आस की पास उसास गरें जु परी सु मरेंहूँ कहा छुटिहै॥४५९॥

मो दृग तारनि जो पैं तिहारौ निहारिबोई है महासुख लाहौ।
तो पैं कहा हो हठीले सुजान ये चाहैं परे तुम नेकौ न चाहौ॥
रावरी बानि अनोखियै जानि कैं प्रान रचे तेहि रंग सराहौ।
कै विपरीत मिलौ घनआनँद या बिधि आपनी रीति निबाहौ॥४६८॥

कवित्त

ऊतर सँदेसौ मिलै मेल मानि लीजतु है
ताहूको अँदेसौ अब रह्यो उर पूरि कै।
उठी है उदेग आगि जीजै कौन आस लागि
रोम रोम पोर पागि डारी चिंता चूरि कै॥
निपट कठोर कियो हियो मोह मेटि दियो
जान प्यारे नेरे जाइ मारौ कित दूरि कै।
तरफौं बिसूरि कै बिथान टरैं मूरिकै
उड़ायहौ सरीरै घनआनँद यों धूरि कै॥४६९॥

मोहिं डीठि कारन हौ दुख तम टारन हौ
प्रीति पन पारन हौ कहाँ लों कहौं जसैं।
लोचननि तारे अचरज भारे जान प्यारे
तुमही तें पियत तिहारे रूप के रसैं॥
बात अटपटी बढ़ी चाह चटपटी रहै
भटभटी* लागै जोपैं बीच बरुनी बसैं।
लैलै प्रान वारौं इकटक धरौं यो विचारौं
हा हा घनआनँद निहारौ दीन को दसैं॥४७०॥

---

* भटभटी लगना = दिखलाई न पड़ना।

रीझि तिहारी न बूझि परै अहो बूझति हैं कहो रीझत काहें।
बूझि कै रीझत हौ जु सुजान किधौं बिन बूझि की रीझ सराहै॥
रीझन बूझौ तऊ मन रीझत बूझि न रीझै हू और निबाहै।
सोचनि जूझत मूझतु ज्यो घनआनँद रीझ औ बूझहिं चाहै।४६४।

कवित्त

लहकि लहकि आवै ज्यों ज्यों पुरुवाई पौन
दहकि दहकि त्यों त्यों तन ताँवरे तचै।
बहकि बहकि जात बदरा बिलोकें हियो
गहकि गहकि गहवरनि हिएँ मचै॥
चहकि चहकि डारै चपला चखनि चाहैं
कैसे घनआनँद सुजान बिन ज्यो बचै।
महकि महकि मारै पावस प्रसूनवास
त्रासनि उसास दैया कौ लौं रहियै अँचै॥४६५॥

सवैया

लहौं जान पिया लखि लाखन प्रान पै वारिबे की अभिलाष मरौं।
सु कहौं केहि भाति अनोखियै पीर अधीर ह्वै नैननि नीर भरौं॥
घनआनँद कीजै विचार कहा महा रंक लौं सोच सकोच ररौं।
चित चाँपन चाह के चोचँद मैं हहराइ हिराइ कै हारि परौं॥४६६।
घूँटैं घटा चहुँघा विरिकै गहि काढ़े करेजो कलापिनि कूकैं।
सीरा समीर सरीर दहै चमकै चपला चख लै फरि ऊकैं॥
एहो सुजान तुम्हैं लगे प्रान सुपावस यों तजि प्यावस सूकैं।
ह्वै घनआनँद जीवनमूल धरौ चित मैं कित चातिक चूकैं।४६७।

डीठि आगे डोलौ जो न बोलौ कहा बसु लागै
मोहि तो वियोग हू मैं दीसत समीप हौ ।।४७३।।

सवैया

हित भूलनि पै कित भूलि रहे अहो भूलहू नीके न जानत हौ ।
उहि भूलनि संग लगी सुधि है जु सुजान सदा उर आनत हौ ।।
घनआनँद सोऊ न भूलत क्यों जो पै भूलि ही कों ठिक ठानत हौ ।
तब भूलि कै लैहौ कछू सुधि तौ चित दै इतनी कि न मानत हौ ।४७४।

कवित्त

अलग भयो है लगि तुम्हें और ठौरनि तें
सुलग्यो करतु ऐसी गति लागी मो हिए ।
क्यों हूँ न परत गह्यो रह्यो गहि एक टेक
आनँद के घन आप अधिक अमोहिए ।।
खरक दुहेली हो असूझ रूप रावरे की
डीठि पाइ काँटो कहौ कौन विध टोहिए ।
जब तें सुजान प्रान प्यारे पुतरीनि तारे
आँखिन बसे हौ सब सूनो जग जोहिए ।।४७५।।
जब ते निहारे इन आँखिन सुजान प्यारे
तबते गही है उर आन देखिबे की आन ।
रस भीजे बैननि लुभाइ कै रचे हैं तहाँ
मधु मकरंद सुधा नावो न सुनत कान ।।
प्रान प्यारी ज्यारी घनआनँद गुननि कथा
रसना रसीली निसिबासर करत गान ।

अवधि सिराएँ ताप ताते ह्वै कलमलाय
आपु चाय बावरे उमहि उफनात हैं।
दरस दुखारे चैन बंचित बिचारे हारे
आँखिन के मारे आइ तहाँ मड़रात हैं॥
इते पै अमोही घनआनँद रुखाई डर
सोचनि समाइ कै थहरि ठहरात हैं।
जानि अनखौहीं बानि लाड़िले सुजान की
सुकरिहू पयान प्रान फेरि फिरि जातु हैं ॥४७१॥

साहस सयान ज्ञान ताकत तुम्हैं सुजान
तबही सबनि तज्यो अब हौ कहा तजौं।
रावरेई राखे प्रान रहे पै दहे निदान
योंही इन काज लाज बिन हौं खरो लजौं॥
ऐसी कै बिसारी गौं तिहारी न बिचारी परै
आनँद के घन हौ अमोही जो ढरौ अजौं।
कौन विध कीजै कैसे जीजै सो बताइ दीजै
हा हा हो बिसासी दूरि भाजत तऊ भजौं ॥४७२॥

घेरयो घट आय अंतराय पट निपट पै
तामधि उजारे प्यारे फानुस के दीप हौ।
लोचन पतंग संग तजै न तऊ सुजान
प्रान हंस राखिबे कों धरे ध्यान सीप हौ॥
ऐसें कहाँ कैसें घनआनँद बताऊँ दूरि
मन सिंहासन बैठे सुरत महीप हौ।

हैरी घनआनँद सुजान वैरी पैंड़े परयो
दैरी अब ऊतर यों धीरहू चल्यो धिराय॥४७६॥

सवैया

जिनही बरुनीन सों वेध्यो हियो तिनही दृग हाथ सिवावत हैा।
बिषबोए कटाछन ही हँसि दै जु सुजान सुधाही पिवावत हैा॥
अनबोले रहो जू अनोखे अजौं रस मैं अब रोस दिवावत हैा।
घनआनँद चूकौ न दाव कहूँ फिरि मारन चाव जिवावत हैा॥४८०॥

कवित्त

मोहि दुख दोप सोपै पोपै सुख तोहिं मोहिं
चिंता चित्त चूरि तोहि राखैं निधरक है।
रोय कै जगावे मोहि त्रिहँसावै स्वावे तोहिं
तेरैं भूल भरै मोहि सालै ज्यों करक है॥
तोहिं चैत चाँदनी मैं सरसै हरष सुधा
मोहिं जारै मारै है बिषाद को अरक है।
कहूँ घनआनँद घुमंड उघरत कहूँ
नेह की बिषमता सुजान अतरक है॥ ४८१॥

लालसा ललित मुख सुखमा निहारिबे की
बरनी परै न ज्यों भरी है नैन छाय कै।
ठौर के सँकोच डाठिहूँ कों अति सोच बाढ़यो,
बिना तुम्हैं कहौ और कहाँ रहैं जाय कै॥
बानिक निकाई नीके हेरिए सुजान हौजू
कीजिए कहाधों सोऽब दीजिए बताय कै।

अंग अंग मेरे उनही के संग रंग रँगे
मन सिंघासन पै बिराजै तिनही कौ ध्यान॥४७६॥

सवैया

ढिग बैठे हू पैठि रहे उर मैं घर के दुख दोहन दोहतु है।
द्दग आगे तें बैरी टरै न कहूँ जगि जोहन अंतर जोहतु है॥
घनआनँद मीत सुजान मिले बसि बीच तऊ मन मोहतु है।
यह कैसीसजोगनबूझिपरैजुबियोगन क्योंहूबिछोहतु है॥४७७॥

कवित्त

गहै एक टेक टारि दीने हैं बिवेक सब
कौन प्यार पीर पूरे नीरहि रितौत हैं।
कैसें कही जाय हेली इनकी दुहेली दसा
जैसे ये बियोग निसि बासर बितौत हैं॥
कहिबे को मेरे पै अनेरे येरे जाहिं नाहिं
अतिही अमोही मोहि नैकौ न हितौत हैं।
जबतें निहारे घनआनँद सुजान प्यारे
तबतें अनोखे द्दग कहिं न चितौत हैं॥ ४७८॥

बेध्यो लै बिसासी मोह गाँसी नेकु हाँसी ही मैं
घूमि घूमि मेरो घनौ मरम महा पिराय।
होत न लखाय क्योंहूँ हायं हाय कहा करौं
जरौं बिपज्वाल पै न काल कैसेंहूँ निराय॥
जीवन की मूरि जाहि मान्यो तिन चूरि करी
खरी बिपरीति दई हेरि हियरो हिराय।

हैरी घनआनँद सुजान वैरी पैंड़े परयो
दैरी अब ऊतर यों धोरहू चल्यो धिराय॥४७६॥

सवैया

जिनही बरुनीन सों वेध्यो हियो तिनही दृग हाथ सिवावत हैा ।
विषबोए कटाछन ही हँसि दै जु सुजान सुधाही पिवावत हैा ॥
अनबोले रहो जू अनोखे अजों रस मैं अब रोस दिवावत हैा ।
घनआनँद चूकौ न दाव कहूँ फिरि मारन चाव जिवावत हैा ॥४८०॥

कवित्त

मोहि दुख दोप सोपै पोपै सुख तोहि मोहिं
चिंता चित्त चूरि तोहि राखैं निधरक है ।
रोय कै जगावे मोहि बिहँसावै स्वावे तोहिं
तेरें भूल भरै मोहि सालै ज्यों करक है ॥
तोहिं चैत चाँदनी मैं सरसै हरष सुधा
मोहिं जारै मारै है बिषाद को अरक है ।
कहूँ घनआनँद घुमंड उघरत कहूँ
नेह की बिषमता सुजान अतरक है ॥ ४८१ ॥

लालसा ललित मुख सुखमा निहारिबे की
बरनी परै न ज्यों भरी है नैन छाय कै ।
ठौर के सँकोच डीठिहूँ को अति सोच बाढ़्यो,
बिना तुम्हैं कहौ और कहाँ रहैं जाय कै ॥
बानिक निकाई नीके हेरिए सुजान हौजू
कीजिए कहाधों सोऽब दीजिए बताय कै ।

एक ठाँव दुहुनि बसैए सुख दुख कैसें
हाहा घनआनँद सुरस बरसाय कै ॥४८२॥
सोभा लोभ लागि अंग रंग संग प्रीति पागि
जागि जागि नेकौ न निमेख टेक सों टरी।
बोलनि चितौनि चारु डोलनि कलोलनि सों
चाहि चाहि रंक लों सु संपति हिए धरी ॥
ऐसे ही में असह बिरह कितहूँ तें आय
बावरे सुभाय बस कुटिलाई है करी।
अब घनआनँद सुजान प्रान दान भेटौं
विधि बुधि आगर पैं जाँचत वहै घरी ॥४८३॥

* इति *

घनानंद जी की यथालब्ध पद-रचना

शृंगार वर्णन चौताला.

मंजन करि कंचन चौकी पर बैठीं बाँधत केसन जूरो।
रुचिर* भुजनि की उचनि अनूपम ललित करनि बिच झलकत चूरो॥
लाल जटित लस† भाल सु बैंदी अरु सोहै‡ शुचि माँग सिंदूरो।
आनँदघन प्यारी मुख ऊपर वारों कोटि शरद शशि पूरो॥१॥

खंडिता

लाल तुम कहाँ तें आए जगे।
अंजन अधरन भाल महाउर चरन धरत डगमगे॥
अलसी अँखियाँ नैन घुमावत बोलत बोल न लगे।
आनँदघन पिय उहईं जाउ तुम जहाँ तुम्हारे सगे॥ २॥

लगन

स्याम सुजान के बिन देखें अटपटाय कहुँ ना लागै मन।
नैकहुँ कै न्यारे भएँ नीर भरि आवैं मेरे नैननि लीने हैं री पन॥
कहा करौं मन परबस परि गयो इनहिन दुख छिन छिन छीजत तन।
आनँदघन पिय सों कहा कहिए उनकी हाँसी और को मरन॥ ३॥

राग मालकोश

लहकन लागे री बसंत बहार मानो बनबारी लग्यो बहकन।
ना जानौं अब कहा करेंगे लागे हैं पलास द्रुम दहकन॥

पाठांतर—* नैसियै। † रुचि। ‡ कछुक रह्यो फबि।

मदन भरत केकी हूक काढ़त बरन बरन द्रुम पुष्प लागे महकन।
आनँदघन तुम कित हो विरम रहे इत कोकिला लागे कुहकन ॥४॥

धमार। राग कान्हरो

मो सों होरी खेलन आयो।
लटपटी पाग अटपटे पेचन नैनन बीच सुहायो॥
डगर डगर में बगर बगर में सबहिन के मन भायो।
आनँदघन प्रभु कर दृग मीड़त हँसि हँसि कंठ लगायो॥ ५ ॥

राग रामकली

होरी के मद माते आए लागे हो मोहन मोहि सुहाए।
चतुर खेलारिन बस करि पाए खेलि खेलि सब रैनि जगाए॥
दृग अनुराग गुलाल भराए अंग अंग बहुरंग रचाए।
अबिर कुंकुमा केसरि लैकैं चोवा की बहु कीच मचाए॥
जिहिं जाने तिहिं पकरि नचाए सर्वस फगुवा दे मुकराए।
आनँदघन रस बरसि सिराए भली करी हमही पैं छाए॥६॥

राग सारंग

सो बाँके डफ बाजे हैं री, नंदनँदन रसिया के।
अबकी होरी धूम मचैगी गलिन गलिन अरु नाके नाके॥
कोउ काहू की कानि न मानत ग्वाल फिरैं मद छाके छाके।
आनँदघन सों उघरि मिलौंगी अब न बनै मुँह ढाँके ढाँके॥७॥

राग काफी

प्यारे जिन मेरी बहियाँ गहौ।
मारग मैं सब लोग लखत हैं दूरहि क्यों न रहौ॥

मन मैं तुम्हरे कौन बात है सोई क्यों न कहौ।
कहिहौं जाइ आज जसुमति सों नाहक मग न गहौ ॥
आनँदघन तापैं नहिं मानत लरिका ह्वै निवहौ ॥ ८ ॥

भाजि न जाइ आज यह मोहन सब मिलि घेरो री।
अंजन आँजि माँड़ि मुख मरवट फिर मुख हेरो री ॥
गारी गाय गवाइ लाल कूँ करि लो चेरो री।
आनँदघन बदलो जिन चूकौ भँडुवा टेरो री ॥ ९ ॥

मदन भरत केकी हूक काढ़त बरन बरन द्रुम पुष्प लागे महकन।
आनँदघन तुम कित हो विरम रहे इत कोकिला लागे कुहकन ॥४॥

धमार। राग कान्हरो

मो सों होरी खेलन आयो।
लटपटी पाग अटपटे पेचन नैनन बीच सुहायो॥
डगर डगर में बगर बगर में सबहिन के मन भायो।
आनँदघन प्रभु कर दृग मीड़त हँसि हँसि कंठ लगायो॥ ५ ॥

राग रामकली

होरी के मद माते आए लागे हो मोहन मोहि सुहाए।
चतुर खेलारिन बस करि पाए खेलि खेलि सब रैनि जगाए॥
दृग अनुराग गुलाल भराए अंग अंग बहुरंग रचाए।
अबिर कुंकुमा केसरि लैकैं चोवा की बहु कीच मचाए॥
जिहिं जाने तिहिं पकरि नचाए सर्वस फगुवा दे मुकराए।
आनँदघन रस बरसि सिराए भली करी हमही पैं छाए॥६॥

राग सारंग

सो बाँके डफ बाजे हैं री, नंदनँदन रसिया के।
अबकी होरी धूम मचैगी गलिन गलिन अरु नाके नाके॥
कोउ काहू की कानि न मानत ग्वाल फिरैं मद छाके छाके।
आनँदघन सों उघरि मिलौंगी अब न बनै मुँह ढाँके ढाँके॥७॥

राग काफी

प्यारे जिन मेरी बहियाँ गहौ।
मारग मैं सब लोग लखत हैं दूरहि क्यों न रहौ॥

मन मैं तुम्हरे कौन बात है सोई क्यों न कहौ।
कहिहौं जाइ आज जसुमति सों नाहक मग न गहौ॥
आनँदघन तापैं नहिं मानत लरिका ह्वै निबहौ॥ ८॥

भाजि न जाइ आज यह मोहन सब मिलि घेरो री।
अंजन आँजि माँड़ि मुख मरवट फिर मुख हेरो री॥
गारी गाय गवाइ लाल कूँ करि लो चेरो री।
आनँदघन बदलो जिन चूकौ भँडुवा टेरो री॥ ९॥

मदन भरत केकी हूक काढ़त घरन बरन द्रुम पुष्प लागे महकन।
आनँदघन तुम कित हो विरम रहे इत कोकिला लागे कुहकन ॥४॥

धमार। राग कान्हरो

मो सोँ होरी खेलन आयो।
लटपटी पाग अटपटे पेचन नैनन बीच सुहायो॥
डगर डगर में बगर बगर में सबहिन के मन भायो।
आनँदघन प्रभु कर दृग मीड़त हँसि हँसि कंठ लगायो॥ ५ ॥

राग रामकली

होरी के मद माते आए लागे हो मोहन मोहि सुहाए।
चतुर खेलारिन बस करि पाए खेलि खेलि सब रैनि जगाए॥
दृग अनुराग गुलाल भराए अंग अंग बहुरंग रचाए।
अबिर कुंकुमा केसरि लैकैं चोवा की बहु कीच मचाए॥
जिहिं जाने तिहिं पकरि नचाए सर्वस फगुवा दे मुकराए।
आनँदघन रस बरसि सिराए भली करी हमही पैं छाए ॥६॥

राग सारंग

सो बाँके डफ बाजे हैं री, नंदनँदन रसिया के।
अबकी होरी धूम मचैगी गलिन गलिन अरु नाके नाके॥
कोउ काहू की कानि न मानत ग्वाल फिरैं मद छाके छाके।
आनँदघन सों उघरि मिलौंगी अब न बनै मुँह ढाँके ढाँके ॥७॥

राग काफी

प्यारे जिन मेरी बहियाँ गहौ।
मारग मैं सब लोग लखत हैं दूरहि क्यों न रहौ॥

मन मैं तुम्हरे कौन बात है सोई क्यों न कहौ।
कहिहौं जाइ आज जसुमति सों नाहक मग न गहौ॥
आनँदघन तापैं नहिं मानत लरिका ह्वै निवहौ॥ ८॥

भाजि न जाइ आज यह मोहन सब मिलि घेरो री।
अंजन आँजि माँड़ि मुख मरवट फिर मुख हेरो री॥
गारी गाय गवाइ लाल कूँ करि लो चेरो री।
आनँदघन बदलो जिन चूकौ भँडुवा टेरो री॥ ९॥
